आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 मई, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 05 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 मई, 2013 ★ वैशाख, 2070

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

गुरुद्वय हीराचन्द्र-मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा

जय गुरु मान

नीति और ईमानदारी से प्राप्त धन समाज में प्रतिष्ठा दिलाता है।

- आचार्य श्री हीरा

U TURN

अहिंसा तीर्थ अभियान

मानवीय आहार शाकाहार

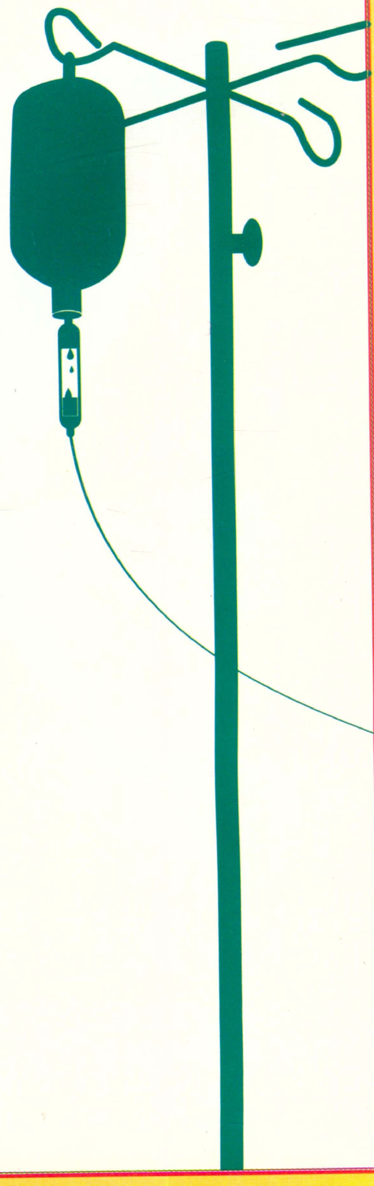

बीमारियों को निमंत्रण मांसाहार से

हृदय रोग, किडनी, माइग्रेन तथा अनेकों दोष मानसिक बीमारियों के मुख्य कारणों में से एक है मनुष्य का मांसाहारी होना

शाकाहार अपनाओ,
संसार में सुख-शांति बरसाओ

रतनलाल सी. बाफना
शाकाहार प्रचारक

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

जलगाव • औरंगाबाद • नासिक

जनहितार्थ प्रकाशित

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera

Jai Guru Maan

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है ।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

।। महावीराया नमः ।।

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा   जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS &
SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

202, Ratna Deep, Behind Panchratna, 78- J.S.S. Road, Mumbai- 400 004
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera   Jai Guru Maan

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी *हिन्दी-मासिक*

卐 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**

विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय
भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

आयण्णा दीहमद्धाणं,
संसारम्मि अणंतए।
तम्हा सव्वदिसं पस्सं,
अप्पमत्तो परिव्वए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.13

अनन्त संसार में दीर्घपथ पा,
सोच-समझ कर चरण धरे।
अतः देखकर सभी दिशा को,
अप्रमत्त हो मुनि विचरे।।

मई, 2013
वीर निर्वाण संवत्, 2539
वैशाख, 2070

वर्ष 71 अंक 5

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	साधु ऐसा चाहिए	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	वाग्वैभव(15)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	12
प्रवचन-	आर्त्तध्यान के लक्षण एवं चिन्ता का परिहार	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	13
	विनय से जीतें अहंकार को (2)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	22
	दोष हटें, तो दुःख मिटे	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.	28
शोधालेख-	जैन वाङ्मय में आकाश द्रव्य	-श्री मनोज कुमार भौंसले	32
दीक्षा अर्द्धशती -	आदर्श संयमी जीवन के धनी उपाध्यायप्रवर	-श्री पारसमल चण्डालिया	37
	साधनाशील योगी उपाध्यायप्रवर	-श्रीमती प्रेमलता सिंघवी	45
चिन्तन-	ज्ञान के साथ हो आचरण	-आचार्य श्री विजयरत्नसुंदरसूरिजी	47
तत्त्व-ज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (80)	-श्री धर्मचन्द जैन	49
युवा-स्तम्भ-	अपने मित्र बनो	-श्री रणजीत सिंह कूमट	53
समाज-चिन्तन-	विवाह-समारोह सादगीपूर्ण एवं आदर्श बनें	-श्री हस्तीमल झेलावत	59
	जैन मन्दिरों को शिक्षा का केन्द्र बनाइए	-डॉ. वीरसागर जैन	66
नारी-स्तम्भ-	सुख, शान्ति एवं उन्नति के आधार	-श्री जशकरण डागा	62
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Biodiversity Conservation and Animal Rights and Philosophical Perspectives	-Sh. Atul K. Shah	68
स्वास्थ्य-स्तम्भ -	स्वर का हमारे जीवन पर प्रभाव (2)	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	73
बाल-स्तम्भ -	श्रमण महावीर की समता	-श्री शंकरलाल चण्डालिया	83
कविता/गीत-	जब पल निश्चित हैं जीवन के	-श्री निर्मल जामड़	21
	मान गुरु की जय-जयकार	-श्री परासमल अशोकुमार गोगड़	52
	अच्छे काम का सम्मान	-श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया	61
	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा	78
	मान गुरु महान्	-श्री जवाहरलाल कर्णावट	82
	अमनस्क गुरु	-श्री सोहनलाल सिसोदिया	117
विचार-	चिन्तन-कण	-श्री पीरचन्द चोरडिया	27
	सामायिक	-श्रीमती प्रीति बाफना	117
परिचर्चा-स्तम्भ-	संवाद	-संकलित	79
युवक-परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (32)	-श्री नमन मेहता	86
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (37)	-संकलित	89
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	92
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	94
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	120

सम्पादकीय

साधु ऐसा चाहिए

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

आज व्यक्ति बाह्य संसाधनों और सुविधाओं के प्रति आकर्षित है और उनसे प्रभावित है। ऐसा व्यक्ति विरला ही होगा जो इनके प्रति आकर्षित और प्रभावित न हो। रत्नसंघ के उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी महाराज एक ऐसे संत हैं जो इस श्रेणी में आते हैं। उनके मन में कोई भौतिक उपलब्धि की चाह नहीं है। न यह चाह है कि सभा में भीड़ जुटे और न यह चाह है कि प्रवचन सभा रिक्त रहे। वैसे समस्त साधना का पर्यवसान अचाह पद में है। आप अचाह पद की ओर अग्रसर हैं।

आज से पचास वर्ष पूर्व पूज्य आचार्य श्री हस्ती के मुखारविन्द से आपने प्रव्रज्या अंगीकार की और उसकी साधना को जीवन का सहज अभिन्न अंग बना लिया। श्रमणदीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् साधु अपना समय स्वाध्याय, ध्यान के साथ पंच महाव्रतों के पालन और पांच समितियों एवं तीन गुप्तियों के आराधन में व्यतीत करता है। मुनि मानचन्द्र जी ने सहज साधना के साथ श्रमणचर्या का पालन किया और "समणोऽहं" (में श्रमण हूँ) के प्रति सदैव सजग रहे। आप में कभी कुछ करने का भाव (कर्तृत्व भाव) नहीं आता। सदैव सहज, सजग प्रवृत्ति चलती रहती है। जहाँ कर्तृत्व का भाव होता है वहाँ अभिमान होता है, बंधन होता है। आप उस बंधन में उलझना नहीं चाहते। जो हो रहा है, उसमें किस बात का अहंकार। उपाध्याय मानचन्द्र जी दूसरों को मान देते हैं, स्वयं मान नहीं करते तथा दूसरों की सही बात मान जाते हैं। संक्षेप में कहें तो-

मान का अपमान कर सम्मान पाते हो सदा।
तुम मान जाते, मान देते, मान रखते सर्वदा।।

जीवन का प्रत्येक व्यवहार साधना का अंग होता है। ऐसा नहीं है कि साधना मात्र घड़ी दो घड़ी की होती है और कुछ कार्यों में होती है। वह तो हरपल, हरक्षण सजगतापूर्वक सम्पन्न होती रहती है। साधक के जीवन में सम्मान के अनेक प्रसंग आते हैं, लोकैषणा को बढ़ाने वाले प्रसंग भी आते हैं, तिरस्कार और अपमान के क्षण भी आते हैं। किन्तु इन सभी परिस्थितियों में जो अपनी धीरता के कारण विचलित नहीं होता है एवं प्रज्ञा को जागृत रखता है वह सच्चा साधक है। उपाध्यायप्रवर के जीवन में यह सूत्र साक्षात् परिलक्षित होता है। जीवन में प्रिय-अप्रिय प्रसंग आते रहते हैं। किन्तु उनमें बिना किसी उद्वेग के सही निर्णय कर साधना को सुरक्षित रखना उपाध्यायप्रवर के जीवन का मंत्र है। आगम की वाणी को आप कंठ से जितना स्मरण रखते हैं, उतना ही आचरण में लाने के प्रति भी तत्पर रहते हैं।

दीक्षा के पश्चात् यद्यपि आपको पण्डित लक्ष्मीचन्द जी म.सा. का शिष्य घोषित किया गया था, किन्तु इससे पूज्य गुरुदेव आचार्य हस्ती के प्रति आपका समर्पण अधिक ही बढ़ा। आप आचार्य हस्ती को अपना आदर्श मानते हैं। उनके द्वारा दिये गये संकेत आपके जीवन के सूत्र हैं। यही नहीं आचार्य हस्ती का सम्पूर्ण जीवन उपाध्यायप्रवर के लिए आगमवत् कार्य करता है। वे कई समाधान आचार्य हस्ती के जीवन से निष्पादित कर लेते हैं। आपका मानना है कि "मुझे जीवन में जो कुछ मिला है उन्हीं से मिला है। उनके जीवन को देखकर आनन्द का अनुभव होता था। कितनी ही विपत्तियाँ आने पर भी गुरुदेव का धैर्य देखा। इसलिए उनका जीवन ही आदर्श है एवं उनके जीवन से ही सदैव प्रेरणा मिलती रहती है। अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में भी गुरुदेव सहज रहते थे। कभी किसी को नहीं कहते थे। मर्यादा में पक्के रहे एवं किसी के सामने झुके नहीं।" इस प्रकार अपने गुरु के जीवन को आदर्श मानने वाले उपाध्यायप्रवर का जीवन भी आगन्तुकों को बलात् आकर्षित कर लेता है। वे किसी से ज्यादा नहीं बोलते, "आनन्द है", "दया पालो" वचनों के साथ अभयता का हाथ ऊपर कर देते हैं। आगन्तुक उसे आशीर्वाद समझता है तथा चेहरे की मुस्कान पढ़कर अपना मन हर्षित कर लेता है।

आप मालाजप के पश्चात् दिन में मांगलिक सुनाते हैं, तब आपकी मांगलिक सुनने के लिए भक्तजन दोपहर में डेढ़ बजे अपने घरों, व्यवसाय स्थलों से दौड़े चले आते हैं। मांगलिक में क्या है, यह ज्ञात नहीं, किन्तु आस्था अपार है। आपसे हुई वार्ता में आपने फरमाया कि स्थानकवासी परम्परा में मांगलिक का विशेष आकर्षण है। दूसरी परम्पराओं में पूजा-पाठ, वाद्य-यंत्रों के साथ भक्ति का माहौल भी होता है, किन्तु स्थानकवासी परम्परा में संतों के सान्निध्य में जो श्रावक-श्राविका आते हैं, तो यहाँ न कोई वासक्षेप होता है और न कोई भक्ति संध्या का रूप, यहाँ तो सामायिक-स्वाध्याय की साधना होती है और भक्त श्रावक मांगलिक सुन कर अपने आगमन को सार्थक समझता है।

आपके सान्निध्य में रहने वाले संत आपकी सहज साधना के कायल हैं। आप किसी को टोकते नहीं हैं, अपनी साक्षी से ही सीख दे देते हैं। संकेत की भाषा में ही समझा देते हैं। उनका सान्निध्य ही सत्य की निधि है, उनका दृष्टिपात ही शक्ति प्रदान करता है। सहज रूप से आपमें शान्ति टपकती है। कभी आप किसी को बलात् नियम नहीं कराते हैं। भावना एवं शक्ति देखकर ही नियम कराते हैं।

श्रद्धा के कारण सफलता प्राप्त होने के पश्चात् यदि कोई उपाध्यायप्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है तो उनके मुख से यही निकलता है-गुरुदेव की कृपा है। आपको दिए हुए श्रेय से आप अभिमान नहीं करते। आप कभी किसी को कटु वचन नहीं कहते हैं। पूज्य गुरुदेव हस्ती भी आपसे कहते थे-"आप किनेई कड़वो कैवो कौनी" अर्थात् आप किसी को कड़वा वचन नहीं कहते हैं। उपाध्यायप्रवर का यह वैशिष्ट्य आज भी बरकरार है। आप मितभाषी हैं। भक्त-

श्रावकों का आवागमन बना रहता है, किन्तु आप कभी किसी से अधिक बात नहीं करते हैं। प्रवचन भी सधी हुई भाषा में फरमाते हैं, जो सारगर्भित होता है। आपका अनुभव और चिन्तन आगम वाणी के साथ जुड़कर प्रवचन के रूप में अभिव्यक्त होता है, जिसे सुनकर श्रोता को दिशा प्राप्त होती है तथा वह अपने जीवन को सार्थक बना सकता है।

धर्म के साथ आध्यात्मिकता का अनिवार्य सम्बन्ध है। यदि धर्म का बाह्य रूप हो एवं आत्मिक शुद्धि की ओर कोई प्रगति न हो, तो ऐसा धर्म अधिक सार्थक नहीं होता। उपाध्यायप्रवर का चिन्तन है कि किसी सम्प्रदाय की भी ख्याति आध्यात्मिकता से ही होती है। जब हम बाह्य प्रलोभनों एवं आकर्षणों से प्रभावित नहीं होते हैं तो जीवन में आध्यात्मिकता का प्रवेश सुगमता से हो जाता है। धर्म की क्रियाएँ भी संवर एवं निर्जरा में सहायक होनी चाहिए। आज कल दयाव्रत की साधना अधिक संख्या में होती है, किन्तु प्रवचन श्रवण एवं भोजन करके ही दयाव्रत की इतिश्री कर लेना उचित नहीं। यह 8 प्रहर की हो तो अच्छा, कम से कम 7 प्रहर की तो होनी चाहिए। दयाव्रत में जहाँ तक सम्भव हो एक समय ही भोजन ग्रहण किया जाए तथा सम्पूर्ण साधना निरवद्य व्यवस्था के साथ हो। दिल्ली में चातुर्मास था तब दिल्ली के लोग दयाव्रत के बारे में नहीं जानते थे। उपाध्यायप्रवर ने उन्हें दयाव्रत की साधना के सम्बन्ध में समझाया कि यह साधुचर्या का संक्षिप्त रूप है। इसमें सचित्त द्रव्यों के स्पर्श का तो त्याग होता ही है, पुरुष एवं स्त्री भी परस्पर एक-दूसरे को नहीं छूते हैं। एक स्थान पर रहकर साधना की जाती है। खुले मुख नहीं बोलते, कच्चा पानी नहीं पीते, जूते चप्पल नहीं पहनते, मोबाइल आदि साथ नहीं रखते। शौचादि भी खुले स्थान में किया जाता है। सर्वत्र निरवद्यता का ध्यान रखा जाता है। सामायिक में रहकर स्वाध्याय, ध्यान, प्रतिक्रमण आदि कार्य किया जाता है। यह आस्रव त्याग की साधना है। कर्मों के बन्धन को शिथिल करने की साधना है। दिल्ली वासियों ने उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास में प्रथम बार उस रीति से दयाव्रत की आराधना का आस्वादन किया।

साधकों को विहार-चर्या में ऐसे ग्राम-नगरों से गुजरना होता है, जहाँ कहीं आहार मिलता है तो पानी नहीं और कहीं पानी मिलता है तो आहार नहीं। चातुर्मास में कभी वर्षा की बौछार या बूंदों के कारण भी साधु-साध्वी आहार-पानी नहीं ला पाते। ऐसी स्थिति में साधक को समझना चाहिए कि आहार, पानी आदि मिल जाए तो संयम की वृद्धि में सहायक होते हैं, और न मिले तो तपस्या का अवसर जानना चाहिए।

उपाध्यायप्रवर का जीवन खुली किताब की भाँति है। वे छल-कपट एवं लाग-लपेट से दूर रहने वाले संत हैं। उपाध्यायप्रवर अपने जीवन को सद्भिक्षु की भाँति जीने में विश्वास रखते हैं। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है-

नो सक्कियमिच्छइ न पूयं, नो वि य वंदणगं कुओ पसंसं।
से संजए सुव्वए तवस्सी, सहिए आयगवेसए स भिक्खू।।

अर्थात् जो सद्भिक्षु होता है वह न सत्कार की इच्छा रखता है, न पूजा की। न वंदना की चाह रखता है और न प्रशंसा की। वह संयत, सुव्रती, तपस्वी, आत्मगवेषक बनकर अपना हित साधता है। साधना का यह रूप मान रहित, ज्ञान (मान) सम्पन्न, चारित्र सम्पन्न उपाध्यायप्रवर में परिलक्षित होता है। 78 वर्ष की आयु में भी पूर्ण सजगता है तथा सामर्थ्य रहते विहार हेतु तत्पर रहते हैं।

उपाध्यायप्रवर के जीवन से अनेकविध शिक्षाएँ ग्रहण की जा सकती हैं। पहली तो यह कि उनके जीवन में सरलता है। सरल व्यक्ति के जीवन में ही सद्गुणों का द्वार खुलता है। दशविध धर्मों में आर्जव या सरलता को माया, कषाय पर विजय प्राप्त करने हेतु आवश्यक माना गया है। सरल व्यक्ति के जीवन में कथनी और करनी में एकरूपता पाई जाती है। सरलता का मतलब बुद्धिहीनता नहीं है, प्रज्ञापूर्वक सबकुछ जानते हुए भी सरल होना महत्त्व रखता है। इससे द्वेष एवं दुर्भावना के तत्त्व स्वतः निरस्त हो जाते हैं। दूसरी बात यह है कि उपाध्यायप्रवर में सहजता है, बनावटीपन नहीं है, उनमें जैसा भीतर है वैसा बाहर है। सहज व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थिति में भी धैर्य नहीं खोता एवं अनुकूल परिस्थिति में आसक्त नहीं होता। साधना का यह पक्ष उपाध्यायप्रवर के जीवन से ग्रहण करने योग्य है। अपने गुरुदेव के प्रति उपाध्यायप्रवर का पूर्ण समर्पण है। गुरुदेव का नाम जिह्वा पर आते ही पुलकित हो जाते हैं, रोम-रोम खिल जाता है। उनके द्वारा कही हुई बातें आज भी दीप की भाँति आलोकित करती हैं। समस्याओं के समाधान आगे से आगे प्राप्त होते रहते हैं। गुरु के प्रति हमारा सच्चा समर्पण हो तथा उनके कहे हुए वाक्यों पर भरोसा हो और उन्हें जीवन दर्शक सूत्रों के रूप में काम में लिया जाए तो जीवन-मार्ग सुकर हो सकता है। आपश्री परनिन्दा से परहेज रखते हैं। दूसरों की निन्दा कभी अपना उद्धार नहीं कर सकती। परनिन्दा से श्रोता को एवं निन्दाकर्ता को झूठा अभिमान होता है। वाणी पर संयम भी उपाध्यायप्रवर की विशेषता है। आज लोग अनर्गल बोलते रहते हैं। ज्यादा बोलने वाला फंसता है, इसलिए नपातुला बोलने में ही सार है। अभिव्यक्ति की कुशलता के लिए बोलना भी आवश्यक है किन्तु अनावश्यक बोलने का परिहार उसमें भी किया जाना चाहिए। आपमें आत्मीयता का भाव भी अनुभूत होता है। आगन्तुकों के प्रति आप अल्प शब्दों में ही सहज अभिव्यक्ति कर देते हैं। इससे आने वाले को प्रसन्नता का अनुभव होता है तथा श्रद्धा की पुष्टि होती है। हम आत्मीय भाव को अपनाकर दूसरों से स्नेह एवं आदर प्राप्त कर सकते हैं। आपकी एक विशेषता है- संयम के प्रति जागरूकता। आप इस बात को कभी नहीं भूलते कि वे एक श्रमण हैं। नवदीक्षित संत को आप बड़ी दीक्षा के पश्चात् यही सूत्र देते हैं कि 'समणोऽहं' (मैं श्रमण हूँ) वाक्य को कभी नहीं भूलना। इस सूत्र से श्रमणाचार में दोष आने की गुंजाइश कम हो जाती है। इसी प्रकार हम 'सावगोऽहं' (मैं श्रावक हूँ) सूत्र याद रखेंगे तो जीवन में दुराचार से बच सकेंगे एवं सच्चे श्रावक के रूप में जीवन को आनन्द से सराबोर कर सकेंगे। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

- **अत्तकडे दुक्खे नो परकडे।** (भगवती-सूत्र, 17.5)
  दुःख आत्मा का स्वयं किया हुआ है, दूसरे के द्वारा नहीं।
- **सुहपरिणामो पुण्णं असुहो पाव त्ति हवदि जीवस्स।** (पञ्चास्तिकाय, 132)
  जीव के शुभ कर्मों का परिणाम पुण्य और अशुभ कर्मों का फल पाप है।
- **अप्पा मित्तममित्तं च दुप्पट्ठिय सुप्पट्ठिओ।** (उत्तराध्ययन सूत्र, 20.37)
  सत्प्रवृत्तिशील आत्मा ही अपनी मित्र है, दुष्प्रवृत्ति में लगी आत्मा ही अपनी शत्रु है।
- **नत्थि जीवस्स नासु त्ति।** (उत्तराध्ययन सूत्र 2.27)
  जीव अविनाशी है।
- **अणेगचित्ते खलु पुरिसे** (आचारांग सूत्र)
  पुरुष (जीव) अनेक चित्त वाला है, अर्थात् उसका चित्त चंचलता के कारण अनेक रूप धारण करता रहता है।
- **वयं अच्चेति जोव्वणं च** (आचारांग सूत्र)
  वय भी बीत रही है तथा यौवन भी बीता जा रहा है।
- **वरं अरण्णवासो अ मा कुमित्ताण संगओ** (सम्बोध सत्तरी, 59)
  जंगल में रहना अच्छा है, कुमित्र के साथ नहीं।
- **कोहो पीइं पणासेइ** (दशवैकालिक, 8.38)
  क्रोध प्रीति को विनष्ट कर देता है।
- **धम्मसमो नत्थि निही।** (वज्जालग्गं, 39.90-1)
  धर्म के समान निधि नहीं है।
- **वेया अहीया न भवन्ति ताणं।** (उत्तराध्ययन सूत्र, 14.12)
  सिर्फ पढ़ लेने से वेद भी त्राण नहीं कर सकते।
- **विवेगो मोक्खो** (आचारांग चूर्णि, 1.7.1)
  विवेक ही मुक्ति है।

-प्रेषक: प्रो. बी. एस. भारद्वाज, 'चित्रकूट'-43, सिन्धुनगर, बरेली-243005 (उत्तरप्रदेश)

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (15)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

- संघ के कार्यकर्ता और अधिकारी जिस दिन से कर्तव्य के प्रति समर्पित हो जाएँगे, उस दिन से संघ व्यवस्थित रूप से संचालित हो जाएगा।
- संघ को स्वस्थ, स्वचालित करने के लिए व्यक्ति-व्यक्ति को घड़ी के पुर्जे की तरह सक्रिय रहना होगा।
- शरीर का एक-एक अंग अपना कार्य करता है, उसी प्रकार संघ का एक-एक सदस्य अपना-अपना कार्य करे।
- अपनत्व की भावना से सबको जोड़कर चला जा सकता है।
- यदि काम करते-करते अहंकार आ गया तो अपने लोग भी दूर भाग जाएँगे।
- जहाँ अनैतिक पूंजी और धन बढ़ता है, वहाँ दुर्व्यसन भी बढ़ते हैं।
- विश्व में केवल जैन समाज ही ऐसा है जो जीव-हिंसा न करने, मांस-भक्षण न करने, मद्यपान न करने आदि के लिए सम्मान पाता रहा है।
- जो रात्रि में नहीं खाते हैं, उनके जीवन का आधा भाग एक प्रकार से तप में गुजरता है। ऐसे लोग वर्ष में छह मास तपस्या करते हैं।
- पुरुषार्थ को प्रधान मानने वालों को देवी-देवताओं के समक्ष हाथ फैलाना शोभा नहीं देता।
- जो अब्रह्म-सेवन का जितना त्याग करेगा, वह अपनी आत्मशक्ति का उतना संवर्धन करने के साथ मन व इन्द्रियों की शक्ति का सही उपयोग कर सकेगा।
- नीतिपूर्वक कमाया हुआ धन प्रतिष्ठा दिलाता है और अशान्ति का कारण नहीं बनता है।
- व्यक्ति को नीति एवं ईमानदारी से धनोपार्जन करना चाहिये।
- तनाव में भी आप घण्टा भर सामायिक करके देखिये। सामायिक से आपका तनाव कम होगा।
- स्मरण, प्रार्थना, स्वाध्याय और समभाव की साधना में वह ताकत है जो आपका तनाव दूर कर दे।
- ज्ञान की साधना के लिए स्वाध्याय और समता की साधना के लिए सामायिक है।

-हीरा प्रवचन-पीयूष भाग-2 से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

आर्त्तध्यान के लक्षण एवं चिन्ता का परिहार

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

आर्त्तध्यान के लक्षण

जिस प्रकार पानी का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर जाता है, वैसे ही मनुष्य की वृत्तियों का प्रवाह प्रायः शुभ से अशुभ की ओर बहता है। पानी नीचे की ओर, ढाल की ओर अपने आप चला जाता है। घर में, मकान में थोड़ी सी ढाल रख दी तो बस, पानी अपने आप नीचे की ओर चला आता है, उसमें कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता। किन्तु यदि पानी के प्रवाह को ऊपर ले जाना हो तो? अपने आप नहीं जायेगा। उसमें प्रयत्न एवं पुरुषार्थ करना होगा। मन की भी यही गति है, अशुभ की ओर स्वतः उसकी गति हो जाती है, किन्तु शुभ की ओर गति करने में बड़ा प्रयत्न, पुरुषार्थ, अभ्यास एवं प्रयास करना पड़ता है।

आत्मा अनादिकाल से बिना चाहे, बिना प्रयत्न एवं अभ्यास के ही आर्त्तध्यान में लीन हो रहा है। आर्त्तध्यान के लिए क्या कोई अभ्यास करने की जरूरत है? नहीं! यह तो अनादिकाल का परिचित मार्ग है। मोह के उदय से अपने आप आत्मा इसमें प्रवृत्त होता रहता है, किन्तु धर्मध्यान के लिए प्रयत्न, अभ्यास आदि की आवश्यकता होती है। वह मार्ग तो बहुत ही सुन्दर व शांतिदायक है, किन्तु आत्मा का उससे परिचय कम है, चूंकि धर्मध्यान के प्रसंग बहुत कम आते हैं और फिर मोह कर्म का क्षयोपशम होता है, तभी धर्मध्यान की वृत्ति जगती है। क्षयोपशम के लिए प्रयत्न करना पड़ता है, इसलिए वह मार्ग कठिन है। ऊपर से गिरना आसान होता है, किन्तु चढ़ना बहुत मुश्किल है। वस्त्र को मैला करना सरल है, किन्तु साफ करना कठिन है। मेला करने में कोई देरी नहीं लगती, मिट्टी में डाल दिया, गंदगी में डाल दिया तो झट से मैला हो गया, किन्तु स्वच्छ निर्मल करने के लिए वस्त्र को धोना पड़ता है, साबुन लगाना पड़ता है, नील व टीनापोल देना पड़ता है, फिर सुखाना पड़ता है- इस तरह वस्त्र को स्वच्छ बनाने के लिए कितना कष्ट उठाना पड़ता है।

आत्मारूपी वस्त्र को भी मलिन करना बहुत सरल है। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि के द्वारा कर्मों की मिट्टी कब लग जाती है, पता ही नहीं चलता, किन्तु जब उसे स्वच्छ व पवित्र बनाने का प्रसंग आता है तो, तपस्या करनी होती है, धर्म-ध्यान करना होता है, मन का निग्रह करना पड़ता है, इन्द्रियों पर संयम रखना पड़ता है। इस प्रकार आत्मा को पवित्र करने के लिए बड़े प्रयत्न करने होते हैं।

आर्त्तध्यान का मार्ग वह ढालू मार्ग है, जिस पर एक बार मन लुढ़क गया तो अपने आप लुढ़कता चला जाता है और कहीं गड्ढे में जा गिरता है। पानी का प्रवाह शुरु हो गया तो बस अपने आप नीचे-से-नीचे गिरता चला जाता है। इसलिए शास्त्रों में कहा है- आर्त्तध्यान का स्वरूप समझकर उससे मुक्त होने का प्रयत्न करो। आर्त्तध्यान तो बिना समझे भी आ जाता है, किन्तु समझने का अर्थ है, 'ज्ञ परिज्ञा' से जानकर 'प्रत्याख्यान परिज्ञा' से उसका निवारण करना, उससे दूर हटना। कोरा 'ज्ञान' तो दिमाग का भार होता है। ज्ञान वही सार्थक है जो क्रिया से युक्त हो। आचार्यों ने कहा है- 'नाणं संजयसारं' ज्ञान का सार है-संयम। यदि संयम नहीं है तो कोरा ज्ञान कुछ नहीं कर सकता। अग्नि की ज्वाला अपनी ओर आते हुई देखकर क्या पंगु (पांगला) उससे बच सकता है? नहीं! वह आग को देखकर भी उससे बच नहीं पाता, क्योंकि चल नहीं सकता। उसके पाँवों में शक्ति नहीं है। "**पासंतो पंगुलो दड्ढो**"- पंगु आग को लगी देखकर भी उससे दग्ध हो जाता है, यही हाल क्रियाहीन ज्ञानी का होता है।

चार लक्षण

भगवान ने अशुभ ध्यान को भी विस्तारपूर्वक समझाया है। उसका सार यही है कि उनको समझकर उनसे दूर हटें। आर्त्तध्यान के चार भेद जिन्हें कारण या चरण भी कहते हैं, उनका वर्णन आपके समक्ष किया गया है, अब उसके चार लक्षणों के बारे में विचार करते हैं-**अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पन्नत्ता, तंजहा-कंदणया, सोयणया तिप्पणया, परिदेवणया।।**- स्थानांग 4

आर्त्तध्यान के चार लक्षण बताये गये हैं- रोना, शोक करना, आँसू बहाना (सिसकियां भरना) और विलाप करना (झूरना)।

इन लक्षणों में क्रमशः आर्त्तध्यान की वृद्धि दिखाई गई है। रोना, क्रन्दन करना आर्त्तध्यान का पहला लक्षण है। यह बहुत साधारण है। सामान्य सा कष्ट आने पर चिन्ता बढ़ती है, चिंता बढ़ने पर आदमी रोने लग जाता है, मुख की आकृति बिगड़ जाती है, आँखों में मलिनता छा जाती है, चेहरा उदास हो जाता है, फिर शोक करने लगता है। शोक का वेग बढ़ता है तो भीतर का दुःख आँखों के रास्ते आँसू बनकर बहने लग जाता है। वेग में जब और आकुलता आती है तो फिर हाय-त्राय करके विलाप करने लग जाता है- इन चिह्नों से यह पहचाना जा सकता है कि अमुक प्राणी आर्त्तध्यान कर रहा है।

इन लक्षणों में से पहले तीन लक्षण तो पशु-पक्षियों में भी पाये जाते हैं, किन्तु उनकी वाणी में स्पष्टता न होने से चौथा 'विलाप' का लक्षण उनमें स्पष्ट प्रतीत नहीं होता। फिर भी कई बार देखा जाता है कि जब पशु-पक्षियों पर आपत्ति आती है, उन पर हमला होता है, या

कोई टोली का पक्षी मर जाता है तो वे बड़ी जोर से चांय-चांय शब्द करने लगते हैं। कौओं को तो अक्सर देखा जाता है, कोई कौआ मर जाता है तो सब इकट्ठे हो जाते हैं, और जोर-जोर से 'कांव-कांव' करते हैं। इस प्रकार के शब्द प्रायः विलाप की श्रेणी में ही आते हैं। भयत्रस्त पशुओं का रंभाना, चिंघाड़ना, भगदड़ मचाना, इधर-उधर मंडराना, यह सब प्रकट करता है कि मनुष्य की तरह उनमें भी आर्त्तध्यान का वेग कम-अधिक होता रहता है।

कुछ लोगों में शोक के अन्य लक्षण भी दिखाई देते हैं, जैसे जमीन कुरेदना, अंक सिकोड़कर बैठना, बैठे-बैठे आँखें बंद कर लेना, सिर पर हाथ रखना आदि। ये लक्षण आर्त्तध्यान के सूचक हैं। सामान्य रूप में गृहस्थ को ऐसे बैठना अशुभ माना जाता है। कुछ लोगों की आदत होती है, सिर पर हाथ रखे ऐसी मुद्रा बनाकर बैठते हैं कि देखने वाले को लगता है कि कोई बहुत शोक में डूबा बैठा है। कई तो सामायिक-स्वाध्याय करते समय भी शोकाकुल मुद्रा में बैठते हैं, अंग सिकोड़कर सिर पर हाथ रखकर ऐसे बैठते हैं कि यह पता ही नहीं चलता कि सामायिक कर रहे हैं या शोक कर रहे हैं। इस प्रकार की बैठक सामायिक का दोष है। सामायिक के बत्तीस दोषों में आर्त्तमुद्रा से बैठना, चिंताग्रस्त आसन लगाना निषिद्ध है। क्योंकि आसन से भी मनोभावों पर असर पड़ता है। सिद्धासन या पद्मासन लगाने से स्वभावतः ही ध्यान व साधना की लहर उठती है। वैसे ही शोक के आसन से बैठने पर सामायिक में भी आर्त्तध्यान की तरंगें उठने लगती हैं। आर्त्तध्यान आने पर सामायिक शुद्ध कैसे हो सकेगी? धर्मध्यान की जागृति कैसे होगी? आर्त्तध्यान में तो गृहस्थ जीवन के काम-काज भी ठीक से नहीं हो पाते। हिसाब-किताब करते समय यदि मन में चिंता व शोक रहता है तो चित्त बराबर नहीं हो सकता, विद्यार्थी अपनी पढ़ाई भी ठीक से नहीं कर सकता। समझ लीजिए आपके समक्ष कोई जवाहरात का माल आया है, आप बड़ी बारीकी से उसकी परीक्षा कर रहे हैं। उस समय मन व मस्तिष्क कैसा रहना चाहिए? बिल्कुल शांत! यदि उथल-पुथल मची हुई है, अशांति छाई हुई है तो परीक्षा ठीक से नहीं कर पायेंगे। बस नज़र चूकी, कि चूकी। एक नज़र में ही लाखों का नुकसान हो सकता है।

इस प्रकार मानसिक अशांति से, आर्त्तध्यान से, धर्म-साधना तो नहीं हो सकती, किन्तु गृहस्थ जीवन की गाड़ी भी ठीक से नहीं चल सकती। रास्ते चल रहे हैं, मन में चिंता है, किसी विचार में डूबे हुए हैं और सामने कोई गाड़ी आ गई, गाय-भैंस आ गई या कोई खड्डा आ गया तो- बस चोट खा जायेंगे। कहीं गिर पड़ेंगे, लग जायेगी और फिर कितनी तकलीफ उठानी पड़ेगी। तो आर्त्तध्यान से धर्म और कार्य दोनों ही बिगड़ जाते हैं, दोनों का नाश होता है।

चिंता से कैसे बचें?

आर्त्तध्यान के जो चार लक्षण बताए हैं वे चारों ही प्रायः शोक मूलक हैं। आर्त्तध्यान में पीड़ा की प्रधानता होती है, चिंता और घबराहट, मानसिक-असंतुलन, अशांति आदि दोष अधिक होते हैं। आर्त्तध्यान के परिणामों में एक प्रकार की नाजुकता-कोमलता होती है, जबकि रौद्रध्यान में क्रूरता का आधिक्य होता है। अपने दुःख से पीड़ित होकर रोना आर्त्तध्यान के लक्षण में आया है, किन्तु दूसरे को रुलाना रौद्रध्यान का लक्षण बताया गया है, जिसकी चर्चा आपके समक्ष की जायेगी। परिणामों की मंदता और कोमलता के कारण आर्त्तध्यान की परिणति प्रथम गुणस्थान से पाँचवें गुणस्थान तक पायी जाती है। पंचम गुणस्थान व्रती श्रावक भी कभी-कभी आर्त्तध्यान के वश होकर भोगाभिलाषा और रोग-चिंता करने लगता है, किन्तु उसके अन्तर में ज्ञान होने के कारण वह शीघ्र ही संभल जाता है और आर्त्तध्यान से दूर होकर पुनः धर्मध्यान की ओर आ जाता है। वैसे कभी-कभी संयत साधु भी विषयाभिलाषी बनकर निदान (नियाणा) कर बैठता है। नियाणा करने का अर्थ है अपनी तपस्या को, जिसका कि उत्कृष्ट फल मोक्ष भी हो सकता है, सिर्फ भौतिक सुखों के लिए बेच डालना। नियाणा में भोगाभिकांक्षा की प्रबलता रहती है, इस कारण इसे भी आर्त्तध्यान माना है। दशाश्रुतास्कंध में वर्णन आता है, श्रेणिक राजा और चेलणा रानी के भौतिक रूप-सौन्दर्य एवं सुख को देखकर भगवान के अनेक साधु-साध्वियों ने नियाणा किया- **जइ इमस्स सुचरियस्स नव नियम-संजय-बंचभेर-वासस्स कल्लाणे फल विति विसेसे अत्थि, वयमपि आगमिस्साणं इमाइं एयारूवाइं उरालाइं जाव..... (दशाश्रुतस्कन्ध, 10)**

यदि हमारे तपनियम, संयम, ब्रह्मचर्य आदि का कोई शुभफल हो तो हम भी श्रेणिक राजा और चेलणा रानी की भांति आगामी जन्म में विपुलकाय भोग प्राप्त करें।

भगवान ने साधु-साध्वियों की यह मनोदशा देख कर उन्हें बुलाया और निदान के दुष्परिणाम बताये कि नियाणा करने से आत्मा अपनी शुभकरणी को खोकर किस प्रकार दुर्गति में जाता है और वहाँ धर्म का सुनना भी दुर्लभ हो जाता है। इसलिए इन दैविक एवं मानुषिक कामभोगों से विरक्त बनो- "**दिव्वमाणुस्सएहिं कामभोगेहिं निव्वेयं गच्छेज्जा**" क्योंकि ये कामभोग अध्रुव हैं, अशाश्वत हैं, और इनका परिणाम बड़ा ही कटुक फल देने वाला है। तब साधु-साध्वियों ने भगवान से अपने निदान का प्रायश्चित्त किया और शुद्ध हुए।

इस प्रकार यह आर्त्तध्यान बड़ा ही भयानक है और छठे गुणस्थानवर्ती मुनिजनों को भी अपने चंगुल में फंसा लेता है। भगवान के सामने बैठे उनकी बाड़ी को लूट लेता है यह।

आर्त्तध्यान के लक्षणों पर विचार कर रहे हैं कि चिंता, शोक, क्रन्दन, अश्रुपात, विलाप ये सब आर्त्तध्यान हैं। इनके चार कारण भी हैं, जो पहले बताये जा चुके हैं- 1. अप्रिय वस्तु का संयोग, 2. प्रिय वस्तु का वियोग, 3. रोग का आतंक, 4. कामभोग-प्रतिसेवना।

इन कारणों से हमारे मन में आर्त्तध्यान की उत्पत्ति होती है और हम चिंताग्रस्त होकर रोने लगते हैं, शोक करने लगते हैं, आँसू बहाने लगते हैं और विलाप करने लगते हैं। इस प्रकार अपनी साधना एवं धार्मिक क्रियाओं की हानि होती है और गृहस्थ जीवन में कर्तव्यों की भी। इस दुविधा में धर्म एवं कार्य दोनों की ही हानि होती है और यह कहावत चरितार्थ हो जाती है-

दुविधा में दोनूं गये माया मिली न राम।

वास्तव में चिंताग्रस्त मनुष्य न संसार का सुख भोग सकता है और न आध्यात्मिक सुख, चिंतातुराणां न सुखं न कामः चिंतातुर को न सुख है, न काम है और न आराम है। अर्थात् शोक की स्थिति में राम भी नहीं मिल पाता और आराम भी नहीं मिल पाता, काया और माया दोनों छीजने लग जाती है। चिंतातुर न योग की साधना कर सकता है और न ही भोग की साधना। उसका अन्तर मन तो बस पीड़ा, अरति और शोक का पुलिन्दा बना रहता है, रात-दिन उसी आर्त्तध्यान में लीन हुआ परिताप भोगता रहता है।

प्रश्न होता है- जीवन की यह विषम घड़ी तो हर एक मनुष्य के जीवन में आती है। शोक का प्रसंग किसके नहीं आता? किसको प्रिय का वियोग नहीं होता? किसको रोग से आक्रांत नहीं होना पड़ता? सोचना यह है कि उसकी चिंता रूप आर्त्तध्यान से कैसे बचें?

शास्त्र में जहाँ आर्तध्यान के कारण व लक्षण बताये हैं वहाँ उससे मुक्त होने के उपाय भी बताये हैं। जो आगे धर्म ध्यान में कहे जायेंगे। यहाँ पर सिर्फ प्रासंगिक बात ही करनी है। जब मनुष्य को दुःख आता है तो उसके सामने दीन नहीं बनना चाहिए। दीन बनने से दुःख सौ गुणा हो जाता है, और वीर के सामने मण भर दुःख कण भर रह जाता है। भगवान ने कहा है-

दुक्खमत्ताए पुट्ठो नो झंझाए। -आचारांग, 1.3.3

दुःख आने पर विचलित नहीं होना चाहिए। बहुत से मनुष्य स्वभावतः दीन होते हैं, थोड़ा-सा संकट आ गया तो ऐसे घबरा जाते हैं जैसे कोई पहाड़ टूट पड़ा। वे दुःख को सहने में लाख के गोले के समान होते हैं। स्थानांग सूत्र में बताया है कि चार प्रकार के गोले होते हैं-

मधुसित्थ गोले, जउगोले, दारुगोले, मट्टिया गोले -स्थानांग 4.4

एक लोहे का गोला, दूसरा लाख का गोला, तीसरा लकड़ी का गोला और चौथा मिट्टी का गोला। लोहे का गोला अग्नि में डाला जाये तो भस्म नहीं होगा, किन्तु गर्म हो जायेगा, वैसे ही कुछ आदमी कष्ट आने पर समाप्त तो नहीं होते, किन्तु संतप्त हो उठते हैं। लाख का गोला बस आंच लगते ही पिघल जाता है, लकड़ी का गोला अग्नि का स्पर्श होने पर खाक हो जाता है, किन्तु मिट्टी का गोला जैसे-जैसे अग्नि का स्पर्श करेगा वैसे-वैसे पकता जायेगा। तो अधीर व्यक्ति जो लाख के गोले के समान होते हैं, कष्टों की आँच लगते ही बस धैर्य खो बैठते हैं, रोने चीखने लग जाते हैं। वे कभी भी दुःख को सहन नहीं कर पाते। तो दुःख सागर को पार करने का पहला तरीका है-धैर्य रखें। संकटों में विचलित न हों।

दूसरा तरीका है- दुःख का चिंतन न करें। दुःख आता है, चला जाता है। सुख भी आता है और चला जाता है, किन्तु जो दुःख आकर चले जाने पर भी उसको मन में बसा लेता है, दुःख की स्मृतियों को ढोता रहता है वह व्यक्ति दुःख की चिंता करके भी दुःखी होता रहता है। महाभारत में बताया है-

शारीरं मानसं दुःखं योऽतीतमनुशोचति
दुःखेन लभते दुःखं द्वावनर्थौ च विन्दति।।

-महाभारत, शांतिपर्व, 17.10

जो मनुष्य अतीत के बीते हुए दुःखों का चिंतन करके शोक करता रहता है, वह एक दुःख से दूसरे दुःख को प्राप्त होता है। इस प्रकार उसी दुःख से दुःख रूप दो-दो अनर्थ भोगने पड़ते हैं। एक तो जो दुःख आया, वह भोगना ही पड़ा, अब उसकी चिंता से उत्पन्न शोक का दुःख और भोगना पड़ता है।

बीते हुए दुःख का सोच नहीं करना चाहिए। दुःख की क्या औषधि है? यह पूछे जाने पर महाभारत में बताया है- **"एकमेव हि भैषज्यं यदेतद् नानुचिन्तयेत्"** दुःख की एक ही औषधि है कि दुःख का दुःख रूप में चिन्तन नहीं करना। **"बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेह"** जो बीत गया उसे भुला दें, उसकी स्मृति, चिंता और सोच से मन को दुःखी नहीं करें। दुःख की पीड़ा से मुक्त होने का यह दूसरा तरीका है।

तीसरा तरीका है- कष्ट आने पर मन को धर्म की ओर लगाएँ। प्रभु-भक्ति, धर्म-ध्यान, दान-तप आदि के द्वारा दुःख के समय को बिताते जायें। क्योंकि मन जब खाली रहता है, निकम्मा रहता है तो छोटा सा दुःख भी मोटा पहाड़ सा लगता है। आपको अनुभव होगा कि अधिकतर लोगों की वेदना रात के समय में अधिक होती है। शरीर में कष्ट है, किन्तु दिन में इतना अनुभव नहीं होता, रात को ज्यादा अनुभूत होता है। इसका क्या कारण

है? यही कि दिन में मन इधर-उधर लगा रहता है, तब दुःख की अनुभूति क्षीण रहती है, रात को मन खाली होने से बस दुःख ही दुःख नज़र आता है, थोड़ा सा दर्द भी ज्यादा लगने लगता है। तो कभी भी मन को खाली नहीं रखना चाहिए, जिसमें दुःख के समय तो बिल्कुल नहीं। प्रभु भजन में, स्वाध्याय में, तत्त्व चर्चा में मन लगा रहे तो दुःख की अनुभूति, वेदना की कसक बहुत कम अनुभव होगी और मन दुःख में भी प्रसन्न व हलका रह सकेगा। इन्हीं तीन बातों को एक राजस्थानी कवि ने दोहे में बताया है-

दुःख की औषध तीन है-बीत्यो चिंते नांय।
मन में धीरज धार के, साहिब सुमरत जाय।।

इस प्रकार आर्त्तध्यान की चिंता को कम करने के तीन मार्ग आपके सामने बताये हैं। दुःख की ये औषधियाँ है। इनके सेवन से आपका दुःख, शोक अवश्य ही कम हो सकता है।

भावी की व्यर्थ चिंता

बहुत से मनुष्य जिनको वर्तमान में सुख प्राप्त है, साधन-सामग्री से संपन्न हैं, अतीत भी जिनका सुखमय रहा है, वे भी भविष्य की चिंता में पड़कर अपने जीवन को कष्टमय बना लेते हैं। कुछ लोगों का स्वभाव ही होता है वे भविष्य की चिंता में दुबले होते रहते हैं। वे सोचते हैं आज तो सब कुछ है, पर कल क्या होगा? कल कैसी हवा चलेगी, कैसा वातावरण रहेगा और कैसी सरकार आएगी। अपनी संतान का क्या हाल होगा? बस इन्हीं विचारों से वे चिंतित रहते हैं।

कुछ लोग भविष्य की कल्पनाओं में खोये रहते हैं, बैठे-बैठे मनसूबे बांधते रहते हैं, ऐसा करना है, वैसा करना है। इतना रुपया उधर से लाकर इधर लगाना है, अमुक जमीन खरीदनी है, अमुक माल खरीदकर रखना है। फिर भावों में तेजी आयेगी, दुगुना मुनाफा लेकर बेचूँगा। इस प्रकार भविष्य के दुःसंकल्पों में ही तल्लीन हुए रहते हैं। आप जानते हैं, ये व्यर्थ के संकल्प ही आर्त्तध्यान हैं। जो वस्तु आज प्राप्त नहीं है उसके लिए संकल्प और चिन्तन करके स्वप्नलोक में विचरण करते रहने से लाभ क्या है? कभी-कभी ये संकल्प अधूरे ही रह जाते हैं। जब ये सपने टूट जाते हैं तो मनुष्य अत्यधिक चिंताकुल हो जाता है। जैसे किसी ने उसकी संपत्ति ही छीन ली हो। एक फकीर की कहानी प्रसिद्ध है-

एक फकीर गांव में भिक्षा मांग कर अपना गुजारा चलाता था। भिक्षा में जो आटा मिलता, उसमें से थोडा-सा बचाकर रखता जाता। थोड़ा-थोड़ा बचाते-बचाते उसके पास एक हंडिया भर आटा जमा हो गया। वह सोचने लगा- अनाज महंगा है, अतः मैं इस आटे को बेचकर रुपये इकट्ठे कर लूँगा। जब कुछ रुपये पास में हो जायेंगे तो उससे एक बकरी

खरीद लूँगा। बकरी बहुत से बच्चे देगी, दूध भी देगी। उनको बेचकर फिर एक गाय खरीद लाऊँगा। गाय के लिए चारा-पानी अपने हाथ से ही करूँगा, वह दूध देगी, दूध को जमाकर घी निकालूँगा। घी बाजार में बहुत मंहगा मिल रहा है। उसके अच्छे पैसे मिलने लगेंगे। गायों के बछड़े भी बड़े हो जायेंगे, बैल बन जायेंगे, फिर एक खेत लूँगा। बैलों से खेती करूँगा। खेत में बहुत-सा अनाज होगा। अनाज को कुछ दिन एकत्रित कर रखूँगा। फिर जब अच्छा भाव आयेगा तब उसे बेचूँगा तो बहुत रुपये मिलेंगे। रुपये हो जायेंगे तो मैं पैसे वाला बन जाऊँगा, पैसे वाले को कोई भी अपनी लड़की दे देगा। मेरी शादी हो जायेगी, बाल-बच्चे हो जायेंगे। बच्चों को अपने हुक्म में चलाऊँगा। बीवी को भी अपने इशारों पर नचाऊँगा। यदि वे मेरी बात नहीं मानेंगे तो यों लात मार कर उनकी पिटाई कर दूँगा। विचार करते-करते सचमुच ही उसने पाँव ऊँचा किया और बड़ी जोर से लात मारी। बगल में खूँटी पर आटे की हंडिया टंगी थी। जैसे ही पाँव की लगी, हंडिया धड़ाम से नीचे उसी के ऊपर आ गिरी। सब आटा बिखर गया और कपड़े व शरीर आटे में लथपथ हो गये। फकीर हड़बड़ा कर उठा, अरे! यह क्या, हंडिया फूट गई सब आटा बिखर गया, मेरा घर-बना सब बिखर गया? कहाँ बकरी, कहाँ गाय, कहाँ बीवी और कहाँ बच्चे? सब संकल्प बिखर गये, बिचारे के सपने टूट गये, और अब रोने-धोने लगा।

फकीर की मूर्खता पर शायद आपको हंसी आयेगी, किन्तु मनुष्य का मन प्रायः इसी तरह मनसूबों की दुनियाँ रचता रहता है। लोग अपनी कल्पना में नित नई सृष्टियाँ खड़ी करते रहते हैं। आशा और तृष्णा की नदी जो बड़ी तेज धार में बह रही है, उसमें डुबकियाँ लगाते रहते हैं, जीवन पर्यन्त उन्हें किनारा नहीं मिलता। बस आशा, आशा में निराशा, तृष्णा, तृष्णा में व्याकुलता। इसी तरह आर्त्तध्यान के चक्कर में लोग गोते खाते रहते हैं।

आर्त्तध्यान को कम करने के लिए यह जरूरी है कि भविष्य की दुश्चिंताओं से बचा जाय, अतीत के भोगे हुए सुख-दुःख की स्मृतियाँ मन से निकाल दी जायें। क्योंकि जब तक अतीत के दुःख की स्मृति आपके मन में रहेगी उसकी चिंता मन को भारी करती रहेगी और हृदय में शोक का अम्बार लगाए रखेगी। कभी-कभी देखते हैं, बहुत से मनुष्य देखने में स्वस्थ व सुखी प्रतीत होते हैं, किन्तु जब बातचीत चलती है, और वे अपने अतीत को याद करने लगते हैं, बीते हुए जीवन की सुख-दुःख की कहानी सुनाने लगते हैं तो रो पड़ते है, सोया हुआ दुःख जाग उठता है, जैसे दुःख का फोड़ा भरा हुआ था, उस पर किसी ने थोड़ा सा नश्तर लगा दिया तो बस फूट पड़ा। जो मनुष्य अतीत की चिंता, वर्तमान की चिंता और भविष्य की चिंता इन तीनों से बचकर दुःख और संकट में धैर्य रखता है, और कष्ट के काल में धर्म का सहारा लेता है, अनाथी मुनि की तरह आर्त्तध्यान के प्रसंग पर भी धर्मध्यान

की ओर उन्मुख हो जाता है, वह संसार के दुःख में भी सुख प्राप्त कर सकता है। आर्त्तध्यान की पीड़ाओं से बच सकता है।

आर्त्तध्यान के चार कारण और उनके चार लक्षण– इन आठ विषयों पर हमने विचार किया है। अब आगे जरा इस पर भी विचार करना है कि आर्त्तध्यान की परिणति को कैसे रोका जाय, और कैसे धर्मध्यान की वृद्धि की जाये। ■

जब पल निश्चित हैं जीवन के

श्री निर्मल जामड़

जब पल निश्चित हैं जीवन के,
फिर अनिश्चय सा जीवन क्यों?
उद्देश्य हमें जब लक्षित है,
कदमों की गति में अन्तर क्यों?।।1।।
जो अच्छा है, वह लगता नहीं,
जो लगता है, वह अच्छा नहीं,
आकर्षण और विकर्षण से,
परिवेश हुआ है, व्याकुल क्यों?।।2।।
उन्माद के क्षण भी, हमको कभी,
दे जाते हैं, एक छोटा सा सबक,
आवेगों के अन्तर-तल में,
आशाओं का सम्मोहन क्यों?।।3।।
पीले-पीले से चेहरों पर,
फीकी-फीकी सी मुस्कानें,
सन्देह में हम सब जीते हैं,
फिर रिश्तों से घबराहट क्यों?।।4।।
श्रद्धा, विश्वास, सरलता से,
आनन्द के झरने बहते हैं,
प्रगतिवादी युग के बन्धु,
नैतिक मूल्यों से पलायन क्यों।।5।।
जब पल निश्चित हैं जीवन के........।।

-2/175, जवाहरनगर, जयपुर-302004 (राज.)

प्रवचन

विनय से जीतें अहंकार को (2)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा 30 अगस्त 1996 को महावीर भवन, लाखन कोटड़ी, अजमेर में दिये गये प्रवचन का आशुलेखन श्री धर्मपाल मेहता, अजमेर तथा संपादन श्री पुखराज मोहनोत, जोधपुर द्वारा किया गया है।**-सम्पादक**

(गतांक से आगे.......)

मान सांसारिक संबंधों और भौतिकता का नाश कैसे करता है, इसका एक ज्वलंत दृष्टांत 'टूटे हुए पापड़ परोसने' का है। किसी शहर में एक सेठ ने अपनी जाति-बिरादरी वालों के लिए प्रीति-भोज का आयोजन किया। न्यौता पाकर उसकी जाति-बिरादरी के सभी पारिवारिक-जन भोज में गए। भोजन में सभी को मिठाइयाँ, सब्जी, पूरी, नमकीन आदि परोसे गए। अंत में पापड़ परोसा गया। परम्परा थी कि पापड़ स्वयं घर-मालिक ही परोसे। सेठ सभी को पापड़ परोसने लगा। सभी की थाली में वह पूरा पापड़ देते हुए पंक्तिवार बढ़ता गया। एक व्यक्ति को असावधानीवश जरा-सा खंडित, एक ओर से थोड़ा टूटा हुआ पापड़ सेठ ने परोस दिया। सेठ के मन में कोई दुर्भावना नहीं थी, पर जिसकी थाली में वह खंडित पापड़ परोसा गया, उसे यह बहुत बुरा लगा। उसके मन में यह बात घर कर गई कि सेठ ने जानबूझ कर ऐसा किया है और पूरी जाति-बिरादरी के बीच मेरा अपमान करने की भावना से किया है।

अपमान ने मान को जगा दिया। सेठ ने शरारत की है। इसका बदला लेना ही है- इस भावना ने उसे झकझोर दिया। कैसे ले बदला ? क्या करे कि सेठ इसी तरह पूरी बिरादरी के बीच अपमानित हो। अपने घर पहुँचने के बाद मन योजनाओं के भँवरजाल में उलझता रहा। सेठ ने जैसा व्यवहार किया, वैसा ही व्यवहार करके दिखाना था। अभिमानी था वह । अतः अन्तर में सेठ से बदले की भावना सुलगती रही। दिन-पर-दिन व्यतीत होते रहे। आखिर में निर्णय लिया कि बिरादरी को मैं भी सामूहिक भोज दूँगा और सेठ को पंगत में अपने हाथ से खंडित (कोना टूटा हुआ) पापड़ परोसूंगा।

ऊँची ब्याज दर पर ऋण लिया। अहं के लिए लाखों का कर्ज लेकर खर्चा करने को तैयार हुआ। सामूहिक-भोज की तैयारियाँ कीं। आयोजन का दिन निश्चित कर पूरी जात-बिरादरी को न्यौता फिरवाया। भोज हुआ। सभी पंगत में बैठे। नानाविध मिष्ठान्न व पकवान

परोसे गए। भोज के अंत में पापड़ की पुरसगारी होनी थी। पापड़ परोसने के लिए अभिमानी स्वयं आया। पापड़ परोसते हुए उस सेठ के पास पहुँचा, जिसके लिए कर्जा लेकर भोज दिया गया था। पापड़ को जान-बूझकर तोड़ा और खंड़ित पापड़ सेठ की थाली में परोस दिया। सेठ पापड़ खाने लगा। उसने टूटे पापड़ पर कोई ध्यान नहीं दिया।

सेठ को शांत भाव से, बिना शिकन या टेंशन के पापड़ खाते देख भोज के आयोजन करने वाले से रहा नहीं गया। उसने सेठ से कहा- "अरे सेठ! कैसा लग रहा है, टूटा पापड़ अपनी थाली में देखकर? याद है न तुम्हें! पिछली बार तुमने सामूहिक भोज दिया था तो तुमने मुझे ऐसा ही टूटा हुआ पापड़ परोसकर मेरा पूरी बिरादरी में अपमान किया था। आज मैंने भी तुम्हें खंडित पापड़ परोसकर हिसाब-किताब बराबर कर अपमान का बदला चुका लिया है। लाखों का कर्ज हो गया, लाखों खर्च हो गए, पर तुम्हें भी बिरादरी में नीचा तो दिखा ही दिया।"

सेठ ने यह सुना तो चकित रह गए। उनकी स्मृति में तो कुछ था ही नहीं। स्मृति पर जोर दिया, बात समझ में आई तो मुस्करा दिए। बोले-"भाई! ऐसा कुछ हुआ, मुझे तो यह भी याद नहीं है। तुमने इतना कष्ट क्यों किया? यह भारी कर्जा लेकर इस भोज में सारा धन क्यों फूंका? अब क्या होगा तुम्हारा? अरे बंधु! मुझे तभी बुरा-भला कह देते। नहीं कहा तो अकेले में बुलाकर जली-कटी सुना देते। अकेले मुझे खाने पर बुलाकर टूटा पापड़ परोस देते। यह सब ताम-झाम करके अपनी बरबादी क्यों की? मुझे कहते तो मैं वहीं तुमसे माफी मांग लेता। एक और पूरा का पूरा पापड़ लाकर बड़े प्यार से तुम्हें परोस देता। तुमने यह अच्छा नहीं किया। मेरा तो कुछ भी नहीं बिगड़ा, पर तुमने अपने जीवन को कर्ज में डुबो दिया।"

आज के युग में सम्पूर्ण विश्व में जो वर्ग-वैषम्य है, वर्ण-वैषम्य है, जातिगत ईर्ष्या-द्वेष-भाव है, उन सभी में कहीं न कहीं यही अहंकार कार्य कर रहा है। आतंकवाद, अनैतिकता, आपराधिक कांड, हत्याएँ, दंगे-फसाद आदि सबके पीछे यही मान, अभिमान, दर्प छुपा हुआ है। प्रत्येक विषमता, हर एक दुर्घटना में किसी न किसी राजनेता, सत्ताधीश, धनवान आदि का जाति मद, लाभमद, कुलमद, ऐश्वर्य (धन) मद, बल (सत्ता, शक्ति) मद, रूपमद, तप (साधना) मद या ज्ञानमद काम कर रहे हैं। न्यायालयों में नब्बे प्रतिशत मुकदमों के पीछे अहं भाव का हाथ है। पिता-पुत्र , भाई-भाई, भाई-बहन, पति-पत्नी आदि कितने ही रिश्ते ऐसे हैं जिनमें अहंभाव के कारण अनबन होती है, कलह छिड़ता है, मार-पीट होती है और कई बार छोटे से अहं की तुष्टि में उत्पन्न शत्रुता भाव आजीवन बना रह जाता है। अनेक घरों की, कुल व खानदानों की प्रतिष्ठा इन मान-अभिमान ने धूल में मिलाई है। बंगले, दुकानें, कारखाने तक नीलाम हुए हैं अहंभाव के कारण। घमण्डी

व्यक्ति अन्यान्य को तो पीड़ा, कष्ट हानि पहुँचाते ही हैं, वे स्वयं भी पीड़ित बन असहनीय कष्ट भोगते हैं और तीव्र मद के कारण नरक गति का बंध भी कर लेते हैं।

आगम कथाओं में दीवान नमुचि का वृत्तान्त आता है। दीवान नमुचि अत्यधिक अहंकारी था। वह एड़ी से चोटी तक अभिमान के सागर में डूबा रहता था। पल-प्रतिपल मान के शिखर पर चढ़ा रहता था। युवावस्था में वह उज्जयिनी के श्रीवर्मा का प्रधान अमात्य बन गया। अब तो अभिमान और बढ़ गया। अहंकार उसके सिर पर चढ़कर नाचने लगा।

एक दिन कालानुक्रम से विहार करते हुए बीसवें तीर्थंकर मुनि सुव्रत स्वामी के शिष्य सुव्रताचार्य का अपने शिष्यों के साथ उज्जयिनी में पदार्पण हुआ। वे उज्जयिनी के बाहर एक उद्यान में विराजमान हुए। आचार्य सुव्रत व उनके शिष्य-संतों के आगमन का सन्देश सुन राजा श्रीवर्मा प्रमुदित हुआ। उसने मुनि दर्शन-वंदन व उपदेश श्रवण का मानस बनाया और तैयारियों के लिए अपने मंत्री नमुचि को बुलावा भेजा। नमुचि के आने पर राजा ने संतों के नगरस्थित उद्यान में विराजने की बात कहकर दर्शनार्थ जाने के लिए तैयारियाँ करने को कहा।

दीवान कट्टर वैष्णव था और फिर अहंकारी। राजा का इस तरह संत-दर्शन करने जाना उसके मन को नहीं भाया। उसने अपने राजा से कहा- "महाराज! ये मोडे, संत, फकीर आदि सभी अपनी-अपनी दुकानें चलाते हैं और लोगों को आकर्षित कर अपना सिक्का जमाते हैं, अपने उपदेश बेचते हैं, नियमादि दिलाते हैं। धर्म, दर्शन और विचारों की बिक्री करते हैं ये। आप जहाँ जा रहे हैं, वे क्या करेंगे? उपदेश देंगे, कोई नियम लेने की बात कहेंगे और जहाँ कहीं मौका मिलेगा एकाध चेला मूँड लेंगे। आपको उपदेश ही सुनना हो तो मैं आपको वही उपदेश यहीं सुना देता हूँ। वे अपने-अपने पंथों के पोथों का, शास्त्रों का आधार लेकर अपनी बात कहेंगे। मेरे पास सभी शास्त्र, पोथे आदि हैं। मैंने उन्हें पढ़ा भी है। मैं उन सभी का सार आपको यहीं सुना दूँगा। फिर वहाँ जाने की क्या जरूरत है?"

राजा को दीवान की कही बातें अच्छी नहीं लगी। उसने कहा- "दीवान जी! आप सुना तो देंगे, पर सुनाने- सुनाने में भी अंतर होता है। शास्त्र बांचना और फिर उसका खुलासा करना सभी का एक समान नहीं होता। कोई साधक यदि उपदेश दे तो उसका प्रभाव अधिक पड़ता है। एक तो वे त्यागी, तपस्वी और संयमी होते हैं, फिर उनकी वाणी अमृत-तुल्य, मनभावन और आकर्षक होने से वह अन्तर्मन का स्पर्श कर लेती है। कथनी-कथनी में अन्तर होता है और करनी-करनी में अन्तर होता है। किसी-किसी साधक की करनी ऐसी होती है कि उसे देख व सुनकर मन स्वतः बुराई त्यागने को तत्पर बन जाता है, तब अच्छाइयाँ भीतर में प्रवेश कर श्रोता को प्राणिमात्र का भला चाहने वाला बना

देती है। मैं इन संतों के दर्शनकर, वाणी श्रवण कर यही सब अनुभव करना चाहता हूँ। आप साथ चलें और आप भी देखें कि संत-दर्शन व उपदेश श्रवण का कैसा असर पड़ता है? आप भी फिर कभी उपदेश सुना देना। आज तो मैंने जैसा कहा, आप तैयारियाँ करें।

विवश नमुचि राज्योचित तैयारियाँ करवाता है। राजा श्रीवर्मा अपने मंत्रीमंडल, परिजन-पौरजन व अनेकानेक सामन्तों के साथ पूरे राजसी ठाट-बाट से आचार्य सुव्रत के दर्शनार्थ जाता है। दीवान नमुचि को भी विवश होकर ही सही, पर साथ जाना पड़ रहा है। उद्यान में पहुँच सभी आचार्य एवं उनके शिष्यों को वन्दन-नमन कर धर्मोपदेश श्रवण करने की अभिलाषा से बैठ जाते हैं। आचार्य सुव्रत आत्म-रमण करने वाले उच्च कोटि के साधक थे। यह देखा जाता है कि कुछ साधक लब्धि-सम्पन्न कम होते हैं, पर दिखावा ज्यादा करते हैं, जबकि अन्य कुछ साधक दिखावा बिल्कुल नहीं करते, पर वे अनेकानेक सद्गुणों से सम्पन्न और अनेक उत्तम लब्धियों के धारक होते हैं। आचार्य सुव्रत व उनके शिष्य आडम्बर से कोसों दूर थे। स्वयं आचार्य अनेक लब्धियों के धारक थे और साधना-योग्य सर्वगुण सम्पन्न थे।

अभिमानी दीवान यद्यपि वहाँ शांत बैठा था, पर अन्तर में उसके हलचल मची हुई थी। वह अपने पाण्डित्य को दिखाने के लिए बेचैन हुआ जा रहा था। उज्जयिनी का राजा और उसका स्वामी वहीं था, पर उसने शालीनता का त्याग करते हुए आचार्य को नीचा दिखाने के उद्देश्य से अटपटा-सा प्रश्न कर डाला। जिस व्यक्ति के भीतर निर्मलता नहीं होती, मन जिसका मलिन होता है, वह किसी न किसी रूप में बाहर प्रकट हो ही जाता है। प्रश्न सुना सुव्रताचार्य ने, पर उनमें बड़प्पन था। वे नमुचि की मनःस्थिति को जान गए थे। उन्होंने अपनी गौरव-गरिमा को सुरक्षित रखते हुए मौन धारण कर लिया। आचार्य को मौन देख बड़े अक्खड़पन से नमुचि ने दुबारा प्रश्न किया। आचार्य फिर भी मौन ही रहे। नमुचि ने कुछ आवेश के साथ तीसरी बार अपना प्रश्न दुहराया। सुव्रताचार्य ने सुना, पर बोले कुछ नहीं।

आचार्यश्री के शिष्य यह सब देख-सुन रहे थे। एक शिष्य से चुप नहीं बैठा गया। वह खड़ा हुआ और आचार्यश्री के चरणों में वन्दन कर कहा- 'गुरुदेव! मैं इनके प्रश्न का समाधान दिए देता हूँ।'' इतना कहकर शिष्य ने दीवान की तरफ मुँह किया और उसके प्रश्न का सटीक, सुविस्तृत समाधान कर दिया। सुनकर नमुचि अवाक् रह गया। शिष्य जिसका इतना विद्वान, उसका गुरु कितना विद्वान होगा? फिर भी उस पाखण्डी ने वहाँ वितण्डावाद मचाते हुए कहा-''आप कैसे संत है? कभी स्नान नहीं करते आप लोग। हम नित्य स्नान करते हैं। आप अपने कपड़ों को धोते नहीं, गंदे-मैले कुचेले रहते हैं, जबकि हम अपने वस्त्रों को साफ-सुथरा रखते हैं, स्वच्छ रहते हैं। हम पवित्र हैं, पर आप अपवित्र हैं। इतना

होने पर भी आप लोग संत होने का ढोंग करते हैं। समाज से मांग कर खाते हैं अतः सामाजिक-मर्यादाओं का निर्वाह नहीं करते। आप बाहर से ऐसे गंदे हैं तो भीतर से उज्ज्वल कैसे होंगे?''

शिष्य ने कहा- ''गंदा और अपवित्र वह होता है जो नित्य पाप-कार्यों में लिप्त रहता हो, जो हिंसक और मांस-मदिरा का लोलुप हो, जो स्वाद का और अन्य इन्द्रिय-विषयों का दास हो, जो परिग्रह के घेरों से घिरा और बंधा हुआ हो, जो क्रोधादि कषायों से कलुषित हो। हमारे साथ ऐसा कुछ भी नहीं है। आप लोगों को बाहरी स्वच्छता की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि आप भीतर में स्वच्छ नहीं हैं। स्नानादि करके तन को स्वच्छ रखना व स्वच्छ वस्त्र धारण करने का दिखावा इसलिए तो है कि अन्दर मैल भरा है। भोगी और योगी में यही अन्तर है। भोगी को बाह्य शौचादि स्वच्छता की आवश्यकता होती ही है। हम तो योगी हैं, संत हैं, संयमी हैं अतः हमें इस बाह्य शौच-धर्म, स्वच्छता आदि के आडम्बर की जरूरत ही कहाँ है?''

सुव्रताचार्य के शिष्य ने दीवान से कहा- ''लोग गाय और भैंस, इन दोनों में से गाय को पवित्र मानते हैं और उसकी पूजा करते हैं। भैंस की कोई पूजा नहीं करता। अब सोचो, नहाती कौन है? भैंस नहाती है। वह कितने ही समय तक पानी में ही रह जाती है, पर उसे कोई पवित्र नहीं मानता। गाय नहीं नहाती, पर माता कहलाती है, पवित्र मानी जाती है। हम स्नान नहीं करते, अरमणीय एवं मैले वस्त्र धारण करते हैं, किन्तु भीतर से पवित्र हैं। आप लोग तो पवित्रता का दिखावा करने वाले हो।''

जल-भुन गया नमुचि इन बातों को सुनकर। अपने भवन के कक्ष में पहुँचने के पश्चात् भी वह अशांत, व्यथित, बेचैन ही बना रहा। अपने-आपको बड़ा अपमानित महसूस कर रहा था वह। दिन व्यतीत हुआ, संध्या आई। रात छाने लगी, गहराने लगी। नमुचि को नींद कहाँ? आँखों से जैसे नींद उड़ ही गई। मन में उसके प्रतिशोध की ज्वालाएँ सुलग रही थीं। रह-रह कर उसके समक्ष लघुवय मुनि का शांत-सौम्य चेहरा घूम रहा था। घने अंधकार की उस अर्द्धरात्रि में उसने अपनी नंगी तलवार उठाई और भवन से बाहर आकर उज्जयिनी की सड़कों को नापता हुआ उसी उद्यान के बाहर पहुँच गया, जहाँ आचार्य सुव्रत विराजमान थे। उसने मन में निश्चित कर लिया कि आज मेरी नंगी तलवार उस मुनि का लहू पीकर ही शांत होगी। वह उद्यान में प्रविष्ट हुआ तथा जहाँ आचार्य व मुनिजन सोये थे, वहाँ पहुँचा। उस मुनि को तलवार उठाकर मारना चाहा, पर अदृष्ट दैवीय शक्ति अथवा आचार्य व मुनि के तपोबल के प्रभाव से वह वहीं स्तंभित हो गया, मूर्तिवत् स्थिर बन गया। स्तम्भन का प्रभाव समाप्त होने पर मूर्तिवत् बने नमुचि की देह में जीवन का

पुनः संचार हुआ। एक बार पुनः अपने आपको घोर अपमानित मानकर नमुचि छुपते-छुपते अपने भवन पहुँचा। उसने चुपचाप उज्जयिनी से प्रस्थान किया। उज्जयिनी छोड़कर अनेक ग्राम-नगरों में घूमता हुआ वह हस्तिनापुर पहुँच गया।

हस्तिनापुर में उन दिनों पद्मोत्तर नाम का यशस्वी राजा राज्य करता था। उसका युवा-पुत्र राज्य के युवराज पद पर प्रतिष्ठित था। नमुचि युवराज महापद्म के साथ रहने लगा। युवराज को भी नमुचि की बुद्धिमत्ता, कार्यशैली तथा सैन्य कौशल देखकर प्रसन्नता थी। कालान्तर में जब महापद्म चक्रवर्ती बना तब उसने नमुचि को अपना प्रधान अमात्य नियुक्त कर दिया। किसी समय महाराज महापद्म ने उसके युद्ध कौशल और दुर्दान्त राजा सिंहबल पर उसकी विजय से प्रसन्न होकर इच्छित वर मांगने को कहा-

नमुचि अहंकारी तो था ही और अहंकारी व्यक्ति मन ही मन अपने चारों तरफ हर समय खतरा महसूस करता है। नमुचि ने भावी समय में किसी आने वाले खतरे से सुरक्षित बनने के विचार से कहा-"महाराज! आप प्रसन्न हैं तो अपने इस वचन को मेरी धरोहर के रूप में अपने पास रखिए। अभी तो मुझे किसी प्रकार की कोई आवश्यकता नहीं है, पर जरूरत पड़ने पर मैं इसे आपसे माँग लूँगा।"

दीवान नमुचि को उज्जयिनी में खतरा महसूस हुआ तब उसे वहाँ से भागना पड़ा था। जहाँ अभिमान, क्रोध, झूठ-कपट, लोभ आदि कषाएँ होती हैं, वहाँ दूसरों को कष्ट और स्वयं कषायी को खतरा होता है। अहं के लिए तो स्पष्ट उल्लेख आता है कि जहाँ 'अहं' है वहाँ 'अर्हं' नहीं हो सकता। कषाय चतुष्क कर्मबन्धन और संसार-वृद्धि के हेतुक हैं। इन कषायों में अहंकार अत्यंत भयंकर एवं आत्म-घाती है। अहंकार छोड़ने पर ही विनय का जीवन में प्रवेश संभव है। मुक्तिपथ पर बढ़ने का प्रथम चरण 'विनय' है। चारों कषायों का शमन, उपशमन करने के लिए सभी प्रयत्नशील बनें। कषायों से पूर्ण मुक्ति ही वास्तविक मुक्ति है। तीर्थंकर भगवंतों का यही उद्घोष है-"**कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव।**"

चिन्तन-कण

श्री पीरचन्द चोरडिया

* प्रश्न पूछने वाला पांच मिनिट के लिए मूर्ख रहता है, लेकिन प्रश्न नहीं पूछने वाला जीवन भर मूर्ख बना रहता है।
* रणनीति परिणामों पर विचार करने के पश्चात् बनानी चाहिए।
* प्रसन्नता के प्रत्येक पल का आनन्द लीजिए, वृद्धावस्था के लिए अच्छा सहारा सिद्ध होगा।
* कुछ लोग सफलता के सपने देखते हैं, जबकि अन्य इन्हें सच करने के लिए परिश्रम करते हैं।

-माणक चौक, जोधपुर (राज.)

प्रवचन

दोष हटें, तो दुःख मिटे

श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा 08 जुलाई, 2012 को श्रीमती राजकुंवर केवलमल लोढ़ा सामायिक स्वाध्याय भवन, गजेन्द्र पथ, महावीर नगर, जयपुर में दिये गये प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोक कुमार जी जैन, वरिष्ठ निजी सहायक, वन-विभाग ने किया है।**-सम्पादक**

मेरा प्रणाम लेना, अर्हन् कहाने वाले।
चारित्र लक्ष्मी देना, मुक्ति में जाने वाले।।
मेरा प्रणाम लेना, अर्हन् कहाने वाले।
संसार के प्रकाशक, भव दुःख के विनाशक।
अपनी शरण में लेना, भय को भगाने वाले।।
मेरा प्रणाम लेना, अर्हन् कहाने वाले।
हो धर्म के प्रदाता, शिव मार्ग के विधाता।
तुम बिन विजय मिले ना, रथ को चलाने वाले
मेरा प्रणाम लेना, अर्हन् कहाने वाले।।

श्रद्धालु बन्धुओं,

जीव अनादि काल से इस संसार की धाराओं में निरन्तर बह रहा है। इस संसार की धाराओं में दो धाराएँ मुख्य रूप से प्रचलित हैंः- 1. लोक-धारा, 2. धर्म-धारा। साधना दोनों धाराओं में अनिवार्य है। धर्म के लिये साधना करनी पड़ती है, तो लोक के लिए भी साधना करनी पड़ती है। दोनों की धाराओं में अन्तर रहा हुआ है। कितना अन्तर रहा हुआ है? (सभा में आवाज आयी, ज़मीन आसमान जितना अन्तर।) व्यक्ति लोक की साधना करता है, लोक में कामना, वासना की मुख्यता होती है। जो धर्म की साधना नहीं करता है वह लोक-धारा में बहता है। ज्यादातर लोग आज लोकधारा में जीते हैं। अनादि काल से हमारी आत्मा भ्रमण कर रही है। आप भी देखते हैं जिस रास्ते पर पांव पड़े हुए होते हैं, उसी रास्ते पर जाया जाता है, जाना सरल होता है। नये रास्ते पर नहीं जाते, क्योंकि नये रास्ता का अनुभव नहीं होता है। उसी स्थानक में जाना सरल लगता है, जहाँ रोज जाते हैं। कभी

नये स्थानक में भी जाना हो तो अटपटा लगता है। भगवान का मार्ग सत्य है। उस मार्ग पर चल दिये तो मुक्ति प्राप्त हो जायेगी। हमारे मन में निर्ग्रंथ धर्म पर श्रद्धा होनी चाहिये। निर्ग्रंथ प्रवचन सत्य है, तथ्य है। "**निग्गंथं पावयणं सच्चं**" संसार का मार्ग अनुभूत है अनादिकाल से उस पर चल रहे हैं, जबकि भगवान का मार्ग अननुभूत मार्ग है। आत्मा नज़र नहीं आती है। इसलिये आध्यात्मिक मार्ग पर पूर्ण विश्वास के साथ चलना पड़ता है। धर्म और विज्ञान में क्या अन्तर है? विज्ञान चल करके सत्य को मानता है, धर्म सत्य को मानकर चलता है। विज्ञान में जितनी खोज की जाएगी, प्रयोग किया जाएगा उसके पश्चात् ही उसको माना जाएगा। जगदीशचन्द्र वसु द्वारा किये आविष्कार के पहले वनस्पति में जीव नहीं मानते थे। परन्तु धर्म ने तो कितने ही वर्ष पहले बता दिया था कि वनस्पति में जीव होता है। धर्म का मार्ग सत्य है। इस मार्ग पर चल पड़ो तो, मुक्ति प्राप्त हो जाएगी। आज का युवावर्ग कहता है महाराज साहब! यह तो अन्धी चाल है। भगवान की चाल अंधी नहीं होती है, पूर्ण प्रकाशी होती है। भगवान को संबोधन लगता है अनन्तचक्खु। भगवान के पास एक समय में सभी इन्द्रियों के विषयों को जानने की क्षमता रही हुई है। उनके ज्ञान को अनन्त चक्षु कहा, जिसे केवल ज्ञान भी कह सकते हैं। हमें पदार्थ को देखने के लिये दो आँखें चाहिये। आँखों की रोशनी मंद हो जाए, क्षीण हो जाए तो पदार्थ नज़र नहीं आता। भगवान के भीतर ज्ञान चक्षु की अनन्तता है। धर्म-धारा के द्वारा अपने जीवन में अमूल्य को प्राप्त किया जा सकता है। प्रभु ने फरमाया- संसार में दो मार्ग हैं। दुःख मुक्ति के दो उपाय हैं- 1. आगार धर्म, 2. अणगार धर्म। जो साधक अणगार धर्म को अंगीकार कर लेता है, वह दुःख मुक्ति के मार्ग में आगे बढ़ जाता है। दुःखों से मुक्त होना चाहते हो, सर्वांश में दुःखों को समाप्त करना चाहते हो तो धर्म को अपने जीवन में अंगीकार कर लो। दुःख का जन्म क्यों? भगवान ने कहा- दोष के कारण। प्रभु कह रहे हैं, दुःख को मिटाने के बजाय दोष को मिटाओ। हमारी हालत यह है कि हम दुःख को तो मिटाना चाहते हैं, परन्तु दोष को नहीं। कांच में चेहरा देखा कि बाल बिखरे हुए हैं, पहले बाल को सुधारेंगे या कांच को। जब तक मूल नहीं सुधरेगा तब तक दुःख दूर नहीं होगा। दोष मूल है। दोष मिट जाएगा तो दुःख अपने आप मिट जाएगा। भगवान से प्रार्थना करते हैं- "भगवन्! मेरा दुःख मिटा दे।" अरे! दुःख का मूल कारण कर्म-दोष बताया है। एक छोटा सा कथानक याद आता है-

एक बार राष्ट्रपति महोदय दौरे पर निकले। जेल में पहुँच गये। कैदियों से पूछते हैं, आपको यहाँ किसी बात का कोई दुःख दर्द तो नहीं है? जेल में स्थित कैदियों में से एक कैदी ने कहा- "यहाँ खाने की रोटियों में कंकर आते हैं।" दूसरे कैदी ने कहा- "यहाँ

मच्छर बहुत खाते हैं।'' तीसरे कैदी ने कहा- ''यहाँ जो कोठरी है वह अंधेरी है, गंदी है।'' राष्ट्रपति जी ने जेलर को निर्देशित किया- तीनों व्यवस्थाओं में सुधार कर देना। चौथे के पास जब राष्ट्रपति महोदय पहुँचते हैं और उससे पूछते हैं, कि तुम्हें क्या असुविधा है जेल में? चौथा कैदी कहता है- ''मुझे जेल से छुटकारा दिला दीजिए। जेल में रहना ही अच्छा नहीं लगता है और राष्ट्रपति जी ने उसे उसी समय मुक्त करवा दिया। आप बताइये ज्यादा बुद्धिमान कौन सा कैदी है? (सभा में से उत्तर आया- चौथा कैदी।) क्योंकि उसने दुःख के मूल कारण को समाप्त कर दिया। भगवान के पास पहुँच कर भगवान से क्या मांगते हैं आप? सभा में से आवाज़ आई- समृद्धि। दो चीज़ हैं- 1. समृद्धि, 2. सद्बुद्धि। सद्बुद्धि मिल जाती है तो समृद्धि अपने आप आ जायेगी। रत्नत्रय का साधक जो होता है वह अपने आप समृद्ध हो जाता है। भगवान के पास पहुँचकर व्यक्ति अनेक कामनाएँ करता है, मुझे अमुक चीज़ दे दो, मुझे अमुक चीज़ दे दो। हमारी भगवान से कामना रही हुई है। भगवान से वह मांग रहे हैं जो भगवान ने छोड़ दिया है। जो भगवान के पास है ही नहीं, तो देगा कहाँ से? आपके पास जो चीज़ नहीं है उसे आप कहाँ से देंगे? भगवान के पास पत्नी नहीं है, पैसा नहीं, पद नहीं है और वह आप मांगते हैं। भगवान से आप मांगते हैं पत्नी ऐसी हो जो विश्व सुन्दरी हो भले ही खुद कुरूप हो। पैसा मांगते हैं रियां के मुणोत सेठ जितना। दान भले एक पैसे का नहीं करते हैं। थोड़ा आगे बढ़ कर कह दूँ तो पुण्य भी मांग लेते हो। परमात्मा से क्या मांगना है? परमात्मा से मांगना है तो माँगो- ''आप मेरे भीतर ज्ञान जगाओ, मेरे भीतर सद्गुण का प्रकाश करो तो सारे दोष हमेशा के लिए मिट जायेंगे।'' दुःख को समाप्त करने के लिए अणगार धर्म है। थोड़ा समाप्त करना आगार धर्म है। श्रमण+उपासक=श्रमणोपासक। आगार धर्म का वर्णन करने वाला उपासकों के जीवन दर्शन का आगम है- उपासकदशांग। उपासकदशांग को 7 वें अंगशास्त्र में रखा गया है। अंग तो 12 हैं, भले ही वर्तमान में 11 अंग हैं। शरीर के भी 11 अंग बताये गये हैं- 2 पैर, 2 जांघे, 2 पिंडलिया, 2 पसवाड़े, 2 भुजाएँ 1 सिर। उपासकदशांग दाहिने पसवाड़े के समान है। जिसके माध्यम से जीवन में आगे बढ़ सकते हैं। इसको मजबूत रखना होगा। चंपा नगरी में वाणिज्य ग्राम में आनन्द नाम का गाथापति रहता था। गाथापति से आशय है- घर का मुखिया, गाँव का मुखिया। चर्चा चल रही थी गुणों की प्राप्ति के लिये तीन बाते हैं, जो अवगुणों को हटा देती हैं- 1. व्यक्ति के प्रति पूर्वाग्रह, 2. वस्तु के प्रति आग्रह एवं 3. विचारों में हठाग्रह। ये हमारे वात्सल्य, वैराग्य, विवेक को नष्ट करते हैं। आनन्द गाथापति प्रभु के समक्ष पंच अभिगम के पालन के साथ पहुँचता है और अपने जीवन में इन गुणों को अधिक पुष्ट करने हेतु प्रभु की देशना श्रवण

करता है। लगता है भगवान के समीप आने से पूर्व आनन्द इन गुणों से विभूषित था। **तभी** वह समाज का, घर का, राजा का स्नेही था उसे उनका मान मिला हुआ था। हमारे जीवन में भी धर्म झलकना चाहिये। धर्मी के लिये, श्रावक के लिए कहा कि "उसके आचार में विवेक, विचार में संवेग" होना चाहिये। संवेग में मुक्ति की कामना निरन्तर बनी रहती है, तो संवेग को बढ़ाने के लिये वात्सल्य गुण को बढ़ाना होगा। वात्सल्य बढ़ता है तो सभी प्राणियों में अपनापन नज़र आता है, फिर वैर विरोध नहीं होता। एक विचार है- "**दीवार में दरार पड़ती है तो दीवार टूट जाती है, दिल में दरार पड़ती है तो दीवार खड़ी हो जाती है**" वात्सल्य को सभी प्राणियों के प्रति बढ़ाएँ तो वह भगवत्ता को प्राप्त हो जाएगा। और जिसका प्रभु से प्रेम, प्रीति, वात्सल्य हो गया वह पाप से, दोष से दूर हो जाएगा और वही सच्चा उपासक हो सकता है। एक भजन है-

अपना जीवन अपने हाथो यूं ही खो दिया।
जो मिला था, मुश्किलों से, मुफ्त खो दिया।
अज्ञता में चउ गति में, पाये दुःख अनन्त।
मोह माया में उलझ कर खोये नर भव अनन्त।
पुण्य का संचय किया तब, पाया फिर यह तन।
धर्म का नहीं मर्म जाना, यही दुःख का मूल।
देव दुर्लभ भव को पाकर, नहीं है करनी भूल।
योग का उपयोग करना, मिले हैं आप्त वचन।

अभी तक अपना जीवन स्वयं ने अपने हाथों से खो दिया है। यह नहीं कह रहा हूँ हमेशा के लिये खो दिया। अभी भी संभल जायें तो हमारे हाथों में डोर है। हाथ में डोर को पकड़े हुए हो तो भव को सुधार लेंगे। धर्म की धारा में रहकर सोचें किसी भी प्राणी को मन से पीड़ा नहीं पहुँचाऊँगा। मन से ऐसा भाव उत्पन्न होगा तो जीवन सार्थक बन जाएगा। चित्त में दरार बनने पर प्लास्टर कर लेना। समृद्धि नहीं सद्बुद्धि की चाहना करोगे तो हमारा मांगना सार्थक हो जाएगा। लक्ष्मी के तीन बड़े दुर्गुण हैं- 1. अहंकार, 2. अपव्यय एवं 3. दुर्व्यसन। इन तीनों के कारण भौतिक लक्ष्मी का नाश होता है। आध्यात्मिक लक्ष्मी तीन से मिलती है- 1. वात्सल्य, 2. विवेक, एवं 3. वैराग्य से। जो आध्यात्मिक लक्ष्मी को बढ़ायेगा वह चारित्र लक्ष्मी को प्राप्त कर लेगा। उसके दोष हट जायेंगें, दुःख मिट जाएंगें। इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ। ■

शोधालेख

जैन वाङ्मय में आकाश द्रव्य

श्री मनोज कुमार भौंसले

भूमिका

जैन धर्म दर्शन के अनुसार भगवान महावीर ने अपनी धर्मदेशना का प्रारम्भ करते हुए कहा है कि लोक भी है और अलोक भी है। जैन दर्शन में लोक की चर्चा बहुत प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण है। जीवों का उपपात लोक में ही संभव है अलोक में नहीं। इसीलिए यह आवश्यक है कि लोक की परिभाषा, उसकी स्थिति आदि को समझा जाये। आकाश कोई ठोस द्रव्य नहीं अपितु खाली स्थान है, वह सर्वव्यापी, अमूर्त और अनन्त प्रदेश वाला है। जो जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और काल को स्थान प्रदान करता है वह आकाश द्रव्य है।[1] आकाश अनन्त प्रदेशात्मक द्रव्य है। क्षेत्र की अपेक्षा से आकाश अनन्त विस्तार वाला है- लोक अलोकमय है। काल की अपेक्षा से आकाश अनादि अनन्त है और भाव की अपेक्षा से अमूर्त है। इस के दो भाग किये गए हैं- लोकाकाश और अलोकाकाश।[2] जैसे जल का आश्रय-स्थान जलाशय कहलाता है वैसे ही समस्त द्रव्यों का आश्रय- स्थान आकाश है।

लोक की परिभाषा

'लुक्' धातु से अधिकरण अर्थ में घञ् प्रत्यय करके लोक शब्द बनता है।[3] लोक्यते इति लोकः अर्थात् आकाश के जिस भाग में धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि द्रव्य दिखाई देते है, वह लोक कहलाता है।[4]

लोक वह है जहाँ पर षड्द्रव्यों की सहस्थिति होती है। उत्तराध्ययन सूत्र में संक्षेप की दृष्टि से जीव और अजीव की सहस्थिति को लोक कहा है।[5] जीवादि छः पदार्थों का जो संग्रह है, वह लोक है।[6] जितने क्षेत्र में धर्म, अधर्म, आकाशादि इन षड्द्रव्यों का अस्तित्व पाया जाता है वह क्षेत्र लोक है।[7] लोक सूक्ष्म और स्थूल अनन्तानन्त नाना प्रकार के पुद्गलास्तिकायों से खचा-खच भरा है।[8] आकाश का जो भाग जीव और पुद्गल से युक्त है और धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय एवं काल से भरा हुआ है, वह सर्वकाल में लोक है।[9]

जीवाजीवमयो लोकः अर्थात् लोक जीव और अजीव से युक्त है।[10] चूंकि उपयोग जीव का लक्षण है।[11] इसलिए वह अजीव पदार्थों को अपने उपयोग का साधन मानता है। जहाँ पर इस प्रकार का व्यवहार घटित होता है, वह लोक है। लोक व्यवहार जगत का ही नाम है।

लोक और अलोक का आकार

लोक का संस्थान 'सुप्रतिष्ठ संस्थान' वाला बताया है। वह नीचे विस्तृत, मध्य में संकीर्ण और ऊपर मृदंगाकार है। तीन शरावों (सिकोरों) में से एक शराव औंधा रखा जाए, दूसरा सीधा और उसी के ऊपर औंधा रखा जाए तो जो आकृति बनती है वही आकृति लोक की है।[12] अलोक का आकार मध्य में पोल वाले गोले जैसा है।[13] अलोक का कोई भी विभाग नहीं है। वह अनन्त है। जबकि लोक तीन भागों मे विभक्त है-'उर्ध्वलोक, मध्यलोक और अधोलोक।[14]

तीनों लोकों की कुल लम्बाई 14 रज्जू है। जिसमें से उर्ध्वलोक सात रज्जू ,मध्यलोक सात रज्जू से कुछ कम 1800 योजन और अधोलोक सात रज्जू से कुछ अधिक है। लोक के तीनों भागों को विभक्त कर देने के कारण उन तीनों की अलग-अलग आकृतियाँ बनती हैं। धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय कहीं पर फैले हुए और कहीं पर संकुचित हैं। ऊर्ध्वलोक में धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय फैले हैं इस कारण ऊर्ध्व लोक का आकार मृदंग सदृश है। मध्यलोक में कृश है, इसलिए उसका आकार बिना किनारी वाली झालर के समान है। अधोलोक में फिर विस्तृत होते चले गए हैं, इसलिए अधोलोक का आकार औंधे शराव के जैसा है।[15] यह लोकाकाश की ऊँचाई है। उसकी मोटाई सात रज्जू है। लोकाकाश के तीनों भागों का वर्णन निम्नलिखित है-

ऊर्ध्वलोक

जहाँ हम निवास करते हैं, उससे सात सौ नब्बे योजन ऊपर का भाग ऊर्ध्व लोक कहलाता है। ऊर्ध्व लोक में देवों का निवास है, इसलिए उसे देवलोक, ब्रह्मलोक, यक्षलोक और स्वर्गलोक भी कहते हैं।[16] अन्तिम देवलोक का नाम सर्वार्थसिद्ध है। उससे 12 योजन ऊपर एक सिद्धशिला है। यह सिद्धशिला 45 लाख योजन ऊपर लम्बी और इतनी ही चौड़ी है, इसकी परिधि कुछ अधिक तीन गुणी है। मध्य भाग में इसकी मोटाई आठ योजन है।[17] जो क्रमश: चारों और कृश होती हुई अन्त में मक्खी के पैर से भी अधिक कृश हो गई है। इसका आकार खुले हुए छत्र के समान है। शंख, अंक-रत्न और कुन्द पुष्प के समान स्वभावत: सफेद, निर्मल, कल्याणकारिणी एवं स्वर्णमयी होने से इसे सीता नाम से अभिहित किया है। इसे ईषत्प्राग्भार नाम से भी उल्लिखित किया गया है। इससे एक योजन प्रमाण ऊपर वाले क्षेत्र को लोकान्त-भाग कहा है, क्योंकि इसके बाद लोक की सीमा समाप्त हो जाती है। इस योजन प्रमाण लोकान्त भाग के ऊपरी कोस के छठे भाग में मुक्त आत्माओं का निवास माना गया है।[18] जैन धर्म दर्शन में देवों की संख्या चार बताई गई है- भवनवासी देव,

व्यन्तर देव, ज्योतिष्क देव, और वैमानिक देव। इन का वर्णन निम्नलिखित है-

1 .भवनवासी देव

जिनका स्वभाव भवनों में निवास करना हैं, वे भवनवासी देव कहलाते हैं।[19] इस पृथ्वी के नीचे रत्नप्रभा आदि सात पृथ्वियां हैं। इन पृथ्वियों में प्रथम रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन भाग हैं- खरभाग, पंकभाग और अव्वहुलभाग।[20] इनमें से खर व पंकभाग में भवनवासी देव रहते हैं और अव्वहुलभाग में प्रथम नरक है। इसके अतिरिक्त मध्यलोक में भी यत्र-तत्र भवनपुरों में रहते हैं। भवनवासी देव दस प्रकार के कहे गए हैं- 1. असुरकुमार, 2. नागकुमार, 3. विद्युत्कुमार, 4. सुपर्णकुमार, 5. अग्निकुमार, 6. वातकुमार, 7. स्तनितकुमार, 8. उदधिकुमार, 9. द्वीपकुमार, 10. दिक्कुमार।[21]

2. व्यन्तर देव

वि+अन्तर=व्यन्तर अर्थात् विविध प्रकार के अन्तर।[22] विभिन्न अन्तरों में निवास करने एवं वन भ्रमण के शौकीन होने के कारण इन देवों को व्यन्तर देव कहा जाता है। ये आठ प्रकार के हैं- 1. पिशाच, 2. भूत, 3. यक्ष, 4. राक्षस, 5. किन्नर, 6. किंपुरुष, 7. महोरग और 8. गन्धर्व। इनके अवान्तर आठ प्रकार हैं। जिन्हें वाणव्यंतर देव भी कहा जाता है। ये इस पकार हैं- 1. अणपन्निक, 2. पणपन्निक, 3. ऋषिवादिक, 4. भूतवादिक, 5. क्रदिन्त, 6. महाक्रदिन्त, 7. कूष्मांड और 8. पयंगदेवा।[23] इस प्रकार आठ व्यन्तर और आठ वाणव्यन्तर मिलकर व्यन्तरों की संख्या सोलह होती है।

3. ज्योतिष्क देव

जो जगत को प्रकाशित करते हैं वे ज्योतिष्क कहलाते हैं। जो देव प्रकाशमान विमानों में निवास करते हैं वे ज्योतिष्क देव कहलाते हैं।[24] ये पांच प्रकार के हैं[25]- 1. चन्द्र, 2. सूर्य, 3. ग्रह, 4. नक्षत्र और 5. तारा। यह चर और अचर के भेद से दो-दो प्रकार के हैं। मनुष्य लोक में 120 सूर्य और 132 चन्द्रमा हैं। जम्बूद्वीप में दो सूर्य और दो चन्द्रमा हैं। लवण समुद्र में चार सूर्य और चार चन्द्रमा हैं। धातकी खण्ड में 12 सूर्य और 12 चन्द्रमा हैं।

4. वैमानिक देव :

जो विशेषत: अपने में रहने वाले जीवों को पुण्यात्मा मानते हैं, वे विमान हैं और जो उन विमानों में रहते हैं वे वैमानिक होते हैं।[26] ज्योतिष्क देवों से ऊपर विमानों में निवास करने वाले देव वैमानिक देव कहलाते हैं। ये दो प्रकार के हैं - 1. कल्पोपपन्न, 2. कल्पातीत।[27]

कल्प में रहने वाले कल्पोपपन्न कहलाते हैं। लोकपाल सेनापति आदि देवों द्वारा यहाँ राज्य प्रबन्ध हो रहा है। ये मर्यादा पूर्वक रहते हैं। इनमें स्वामी और सेवक भाव होता है।

मनुष्य लोक में आवागमन का कार्य कल्पोपपन्न देव ही करते हैं।[28] ये 12 प्रकार के होते है- 1. सौधर्म, 2. ईशान, 3. सनत्कुमार, 4. महेन्द्र, 5. ब्रह्म, 6. लान्तक, 7. महाशुक्र, 8. सहस्रार, 9. आनन्त, 10. प्राणत, 11. आरण और 12. अच्युत देवलोक। [29]

कल्प के ऊपर रहने वाले कल्पातीत हैं। यहाँ कल्प मर्यादा नहीं होती। इनमें स्वामी और सेवक भाव नहीं होता है। ये अपना स्थान छोड़कर कहीं नहीं जाते। ये दो प्रकार के हैं- 1. ग्रैवेयकवासी, 2. अनुत्तरौपपातिक।[30]

मध्यलोक

मध्यलोक 1800 योजन प्रमाण है, यह पूर्व पश्चिम में एक रज्जू चौड़ा और उत्तर दक्षिण में सात रज्जू विस्तार वाला है। इसमें मनुष्य और तिर्यंचों का निवास है। लोक के मध्य में होने के कारण इसे मध्यलोक कहा जाता है। मध्यलोक को तिर्यक्लोक भी कहा जाता है।[31]

मध्यलोक के बीच में जम्बूद्वीप है। यह थाली के आकार का है। इस का व्यास विस्तार में एक लाख योजन है। जम्बूद्वीप को लवणसमुद्र ने चारों ओर से घेर रखा है। यह चूड़ी के आकार का और दो लाख योजन है। लवणसमुद्र धातकी खण्ड के द्वारा घेरा गया है और आठ लाख योजन है। इसको कालोदधि समुद्र ने घेर रखा है। कालोदधि समुद्र, पुष्करद्वीप द्वारा घेरा गया है। इस के बाद क्रम अनुसार वारुणीवर, क्षीरवर, घृतवर, क्षौद्रवर, क्रौंचवर, नंदीशवर, वरुणवर, अरुणवर, कुंडलवर, शंखवर, रुचकर, भुजंगवर, कुशवर आदि। इस क्रम अनुसार असंख्यात द्वीप और समुद्र परस्पर एक दूसरे को घेरे हुए हैं।[32] इतने विशाल क्षेत्र में केवल अढ़ाई द्वीपों में ही मानव का निवास माना गया है।[33] अढ़ाई द्वीप को समयक्षेत्र भी कहा गया है।[34] इन अढ़ाई द्वीपों की रचना एक जैसी है, अन्तर इतना है कि इनका क्षेत्र दुगुना-दुगुना हो जाता है। पुष्करद्वीप के मध्य में मानुषोत्तर पर्वत आ जाने से आधा पुष्करद्वीप ही मनुष्य क्षेत्र में गिना गया है। अढ़ाईद्वीप में जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड और पुष्करद्वीप आते हैं। इन सभी का आकार अपने पहले द्वीप और समुद्र से दोगुना है।

अधोलोक

अध: शब्द अशुभ अर्थ का सूचक है।[35] अतएव क्षेत्रस्वभाव से अधिकतर अशुभ द्रव्यों का परिणमन अधोलोक में होता है।

जैन मान्यता के अनुसार लोक की ऊपर से नीचे तक लम्बाई चौदह रज्जू है और विस्तार अनियत है। यह धर्मास्तिकाय आदि षड्द्रव्यों से व्याप्त है।[36] आचार्य यास्क ने लिखा है कि जहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं है, जहाँ कोई रमणीय स्थान नहीं है, वह नरक है[37] अर्थात् कर्मों से प्राप्त शीत और उष्ण आदि की वेदना से जीवों को रुलाने के स्थान को नरक

कहा जाता है।[38] अधोलोक में सात पृथ्वियाँ कही गई हैं- 1. रत्नप्रभा, 2.शर्कराप्रभा, 3. बालुकाप्रभा, 4. पंकप्रभा, 5. धूमप्रभा, 6. तम:प्रभा, 7. तमस्तम:प्रभा।[39] इनके साथ जो 'प्रभा' शब्द जुड़ा हुआ है वह इनके रंग को अभिव्यक्त करता है। इनमें मुख्य रूप से नारक जीव रहते हैं। ये भूमियाँ एक दूसरे से नीचे हैं, परन्तु एक दूसरे से सटी हुई नहीं हैं। नारकी जीवों को तीन प्रकार की वेदनाएँ मिलती हैं- परमाधर्मी देवों द्वारा, क्षेत्र वेदना और परस्पर वेदना। ये जीव सदा पाप में रहते हैं। दूसरों को कष्ट देने में इन्हें आनंद मिलता है। नारकियों का जीवनकाल थोड़ा-सा भी न्यून नहीं किया जा सकता। ये अकाल मृत्यु से नहीं मरते।[40]

सन्दर्भ: -

1. तत्त्वार्थ सूत्र 5/18
2. भवगती सूत्र 13/4
3. सर्वार्थसिद्धि 5/13
4. (क) जैन तत्त्व प्रकाश, पृ.44 (ख) निर्ग्रंथ प्रवचन 1/46
5. जीवा चेव अजीवा य लोय वियाहिए। -उत्तराध्ययन सूत्र 36/2
6. जीवादिछह्लण समवाओ सो निरुच्चये लोगो। बारस अनुपेक्खा 36
7. षड्द्रव्यात्मको लोकः। जैन सिद्धान्त कोष 1/8
8. सर्वार्थसिद्धि 5/15
9. प्रवचन सार गाथा 128
10. स्थानांग सूत्र 2/417, पृ. 89
11. तत्त्वार्थ सूत्र 2/8
12. भगवती सूत्र 7/1/260
13. वही 11/10
14. वही 11/10
15. वही 11/91
16. उत्तराध्ययन सूत्र 19/8, 18/29, 5/24, 14/41
17. वही पृ. 1688
18. वही सूत्र 36/57-62
19. (क) सर्वार्थसिद्धि 4/10-11 (ख) जैन तत्त्व प्रकाश, पृ. 59
20. सर्वार्थसिद्धि 3/3
21. उत्तराध्ययन सूत्र 19/206
22. जीवाजीवभिगम सूत्र, पृ. 107
23. प्रज्ञापना सूत्र, 2/181
24. जीवाजीवभिगम सूत्र, पृ. 108
25. प्रज्ञापना सूत्र 142, पृ. 120
26. सर्वार्थसिद्धि 4/16-18
27. प्रज्ञापना सूत्र 143
28 तत्त्वार्थ सूत्र पृ. 104
29. प्रज्ञापना सूत्र 1/143
30. वही 1/145
31. उत्तराध्ययन सूत्र 36/57-62
32. जीवाजीवभिगम सूत्र 3/123
33. तत्त्वार्थ सूत्र 3/44
34. उत्तराध्ययन सूत्र 36/7
35. अनुयोगद्वार सूत्र पृ. 103
36. वही
37. निर्युक्ति सूत्र पृ. 67
38. तत्त्वार्थ सूत्र 2/50/203
39. स्थानांग सूत्र, पृ. 564
40. तत्त्वार्थ सूत्र 2/52, 3/3-5

-पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब)

दीक्षा अर्द्धशती वर्ष

आदर्श संयमी जीवन के धनी : उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी

श्री पारसमल चण्डालिया

माघ कृष्णा 4 वि.सं. 1991 को सूर्यनगरी (जोधपुर) में जन्मे माँ छोटाबाई और पिता श्री अचलचन्द जी के लाल, सेठिया कुल की शान, वैशाख शुक्ला 13 वि.सं. 2020 को जोधपुर में दीक्षित रत्नसंघ के ज्येष्ठ एवं वरिष्ठ संत पूज्य उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. महान् वैरागी, आत्मार्थी, मधुर व्याख्यानी, शांत व सरल स्वभावी, अध्यात्म योगी और उच्च कोटि के साधक संत हैं। भौतिक जगत् की चमक आपकी साधना के समक्ष फीकी एवं व्यर्थ प्रतीत होती है। आपकी निर्मल निरतिचार साधना, संयमनिष्ठा और निरभिमानता आदि आत्मगुणों की छाप जनमानस पर अंकित है। यही कारण है कि चतुर्विध संघ के सभी सदस्य आपसे आध्यात्मिक प्रेरणा प्राप्त कर प्रमोद का अनुभव करते हैं।

उपाध्यायप्रवर का महनीय व्यक्तित्व अनेक सद्गुणों का सम्मिश्रण है। स्मित हास्य, इन्द्रिय-विजय, मार्मिक वाणी नहीं बोलना, शुद्धाचार और सत्यानुराग आपके जीवन के मुख्य अंग हैं। सरलता, समता, कथनी-करणी की एकता आपकी प्रेरणा के बिन्दु हैं। जिस प्रकार अगरबत्ती और मोमबत्ती जल कर भी सुगंध और प्रकाश देती है उसी प्रकार आप भी ज्ञान, दर्शन, चारित्र के द्वारा भव्यात्माओं को प्रकाश और सौरभ देकर सुगंधित कर रहे हैं। आपकी अमृतमयी वाणी सुनकर भव्यों के हृदय में नवज्योति जागृत होती है। आपकी ओजस्वी और माधुर्य रस से परिपूर्ण वाणी से शुष्क और निष्ठुर, नीरस हृदय व्यक्ति भी सरसब्ज हो जाते हैं। आपश्री के जीवन के कण-कण में, अणु-अणु में वात्सल्य भरा हुआ है। आप त्यागी-वैरागी, ज्ञान-क्रिया के संगम, अनूठे संत रत्न हैं। पूज्यश्री गौतममुनि जी म.सा. के शब्दों में-

रत्नवंश के अनुपम मोती, उपाध्याय पद पाया हो।
नाम मान पर ज्ञान क्रिया का, मान तनिक नहीं आया हो
जीवन विनय प्रधान है, गुण रत्नों की खान हैं, त्यागी और वैरागी उत्तम, साधु की पहचान है।
मुनिवर मान महान् हैं, जिनशासन की शान हैं.......

पंच परमेष्ठी में उपाध्याय का महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि-

उपाध्याय अध्ययन कराते, भ्रांति मिटाते ज्ञान बढ़ाते।

द्वादशांग आधार, परमेष्ठी करते हैं नमस्कार।

एक सौ आठ बार परमेष्ठी करते हैं नमस्कार.....

पंच परमेष्ठी के पाँच पदों में उपाध्याय पद आचार्य के बाद एवं साधु से पहले है। उपाध्याय महाराज आचार्य के पथ के अनुगामी होते हैं। वे स्व-पर सिद्धान्त के विज्ञ होते हैं तथा साधुओं को सूत्र और अर्थ पढ़ाने वाले हैं, अतः वे साधुओं के गुरु हैं। इस कारण उन्हें चतुर्थ पद पर रखा गया है।

ऐसे ही चौथे पद के धारक उपाध्यायप्रवर पूज्य पंडितरत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. अध्यात्मयोगी, बाल ब्रह्मचारी, शांत-दान्त-गंभीर और प्रबल पुरुषार्थी हैं। सेवा, स्वाध्याय और समर्पण ही आपके जीवन का आदर्श है।

उपाध्याय पदानुरूप विशेषताएँ

उपाध्याय पद के अनुरूप आप में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

1. **आचार्य अनुगामित्वः-** आप आचार्य श्री द्वारा निर्दिष्ट संघ के कार्यों को संपादित करते हैं। अतः आचार्य के बाद संघ में आपका महत्त्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान संघनायक आचार्य पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. को अपना पूर्ण स्नेह, सहयोग व समादर प्रदान करते हुए आप रत्नसंघ परम्परा में गौरवाभिवृद्धि कर रहे हैं।
2. **स्व-पर सिद्धान्त के ज्ञाताः-** उपाध्यायप्रवर स्व-सिद्धान्त (जैनागम) और पर-सिद्धान्त (अन्यतीर्थिकों के शास्त्र) के ज्ञानी हैं। ज्ञान गरिमा के साथ वैयावृत्त्य, सदा प्रसन्नतायुक्त आनन, स्थिरप्रज्ञता, गंभीरता, सहजता, सरलता आपके विशिष्ट गुण हैं।
3. **पाठकत्वः-** उपाध्यायश्री जिज्ञासु साधकों को सूत्र और अर्थ रूप आगमज्ञान प्रदान करते हैं। आप ज्ञान के प्रबल प्रसारक हैं। जिनशासन में शिक्षक स्थानीय होने के कारण संघ में आपका महत्त्वपूर्ण स्थान है।
4. **साधु-गुरुत्वः-** उपाध्यायप्रवर संत-सतियों को चरण-करण की प्रेरणा देते हैं, उनका रहस्य समझाकर आचार में प्रवृत्त करवाते हैं, अज्ञानजनित जड़ता दूर करते हैं अतः आपश्री का स्थान साधुओं से पूर्व और आचार्य के बाद निश्चित है।
5. **स्व-तंत्र निपुणताः-** उपाध्यायश्री की पाँचवीं विशेषता है- स्व-तंत्र निपुणता। स्व=अपना+तंत्र=शासन अर्थात् अपने आप पर अपना शासन करना-उसमें निपुण।

उपाध्यायश्री आत्मानुशासन में निपुण हैं। आपके जीवन में स्वच्छंदता को स्थान नहीं है। स्व-तंत्र निपुणता का दूसरा अर्थ- जिनागमों के अनुसार आत्म-साधना की पद्धति में दक्षता। स्व-पर सिद्धान्त के पारगामी होने के कारण आपकी बुद्धि में अस्थिरता उत्पन्न नहीं होती, जिससे आप जिनशासन की साधना-पद्धति से बुद्धि को हटने नहीं देते हैं।

6. **दृढ़ आस्थावान्:-** उपाध्यायश्री जिनागमों और जैनेतर आगमों के पारगामी होते हुए भी जिनागमों के प्रति ही पूर्णतः भक्तिमान हैं, उनमें ही दृढ़-आस्थावान् और अत्यन्त निष्णात हैं। "**णिग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरइ**"- जिनवाणी को ही सम्मुख रखते हुए विचरण करते हैं और अपने अनुभवों को भी आगम माध्यम से ही तराशते रहते हैं।

7. **अहंकार रहितता:-** आगम-ज्ञान और बुद्धि की तीक्ष्णता के कारण बुद्धि-ज्ञान का अहंकार हो सकता है, जिससे पूर्वकालीन या समकालीन आगम पुरुषों के प्रति तिरस्कार उत्पन्न होने की संभावना रहती है, परन्तु आप अहंकार से दूर परम विनीत हैं। आप अपने गुरुकुल के विनय सहित अनुगामी हैं अर्थात् अपने गुरु की समाचारी के अनुसार चरण-करण के पालन में निपुण हैं।

8. **श्रुत-दान परायणता:-** आप साधकों के आत्म-हित को लक्ष्य में रखकर श्रुतदान करते हैं। आप श्रुत-अभ्यासी की पात्रता और श्रुत की मात्रा का पूरा ध्यान रखते हैं। साधक में ज्ञान की वृद्धि हो और सत्क्रिया में प्रगति हो-इस विधि से आप श्रुतदान करते हैं और उन्हें श्रुतस्वामी बनाने का प्रबल पुरुषार्थ करते हैं। यह आपकी परम करुणा है।

9. **अनुपम व्यक्तित्व-** पूज्य उपाध्यायप्रवर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व अनुपम एवं अनुत्तर है। सौम्य, शांत मुखाकृति पर मुस्कुराती निश्चल भावनाओं की आभा, प्रखर भास्कर के समान दमकते ललाट पर विचारों की दृढ़ता, यह है आपका बाह्य अलौकिक सुन्दर व्यक्तित्व, पर इससे भी बढ़ कर है आपका नयनाभिराम मन मोहक आभ्यन्तर व्यक्तित्व, जिसकी दिव्य आभा आपके शांत सौम्य मुखमंडल पर चमकती है। यही कारण है कि आप अपनी तेजस्विता से, सौम्यता से जनमानस के हृदय में रच बस गये हैं।

10. **आदर्श श्रमण निर्ग्रंथ-** "**अणगारे उज्जुकडे णियागपडिवण्णे अमायं**

कुव्वमाणे'' इस आगम-वाक्य के अनुसार आप एक आदर्श श्रमण निर्ग्रंथ हैं। आपकी ऐसी कई चारित्रिक विशेषताएँ हैं जिनके कारण आप न केवल रत्नसंघ में अपितु जन-जन के श्रद्धा के केन्द्र बन गये हैं और जिनवाणी के अनुरूप अपना जीवन बनाकर जिनशासन की गौरव गरिमा में चार चाँद लगा रहे हैं।

साधनामय जीवन की विशेषताएँ

आपके साधनामय जीवन की कतिपय विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. **निर्मलता और निष्कपटता-** आपका चारित्र सोने के समान निर्मल एवं निष्कलंक है। आप आदर्श (दर्पण) के समान प्रकट भाव वाले हैं। जिस प्रकार जैसा रूप होता है वैसा ही स्वच्छ दर्पण में दिखाई देता है, उसमें अन्तर नहीं आता, उसी प्रकार आपका हृदय स्वच्छ है। ''जहा अंतो तहा बाहिं, जहा बाहिं तहा अंतो'' के अनुसार आप भीतर और बाहर एक समान हैं। उसमें छुपाने जैसी कोई बात ही नहीं है। आपके सरल एवं निष्कपट हृदय के दर्शन आपके चेहरे, आपकी वाणी और आपकी चर्या से ही हो जाते हैं।
2. **जितेन्द्रियता:-** कछुए के समान आपकी इन्द्रियाँ गुप्त हैं। ''**अल्लीणगुत्तो परिव्वए**'' अपनी श्रोत्रादि इन्द्रियों को आपने इस प्रकार अधिकार में कर लिया है कि वे विषयों को ग्रहण करने में उत्सुक नहीं रहती हैं। मन पर अधिकार कर लेने से आपकी इन्द्रियाँ भी आपके आधीन हो गई हैं। इसका मुख्य कारण है ज्ञान का बलवान अवलम्बन। जिस प्रकार कछुए के अंगोपांग की रक्षा उसकी ढाल करती है, उसी प्रकार चारित्र रूपी ढाल के नीचे आपकी इन्द्रियाँ दबी हुई हैं।
3. **निरावलम्बिता:-** आप आकाश की तरह आलम्बन रहित हैं। '**तत्थ आलंबणं णाणं दंसणं चरणं तहा**'- उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन 24 के अनुसार श्रेष्ठ मुनिवर अपने ज्ञान, दर्शन और चारित्र के आश्रय से ही मोक्ष-मार्ग में विचरण करते हैं। तदनुसार किसी असंयमी गृहस्थ अथवा सम्बन्धी के अवलम्बन की आपको आवश्यकता नहीं लगती है। आप स्वयं दूसरों के लिए अवलम्बनभूत हैं। आपके आश्रय से कई संयमी अपना संयम पालकर मोक्ष के साधक बनते हैं। इस प्रकार आप दूसरों के लिए अवलम्बनभूत हैं।

   जिस प्रकार पक्षियों के आकाश-विहार में कोई प्रतिबन्ध नहीं होता, वे स्वेच्छा से जहाँ चाहें, जाते हैं, उसी प्रकार आप उन्मुक्त विहारी हैं। क्षेत्र विशेष के प्रतिबन्ध से

रहित हैं। अपनी मुनि मर्यादानुसार विचरते ही रहते हैं। स्वजनादि के मोह अथवा स्थान या क्षेत्र मोह के बन्धन से आप मुक्त हैं।

4. **निस्पृहता**:– जिस प्रकार वायु एक स्थान पर नहीं ठहरती, उसका कोई स्थान नहीं होता, उसी प्रकार आपका भी कोई घर नहीं। वृद्धावस्था में भी आप एक स्थान पर नहीं रहकर ग्रामानुग्राम विचरण कर रहे हैं। किसी क्षेत्र, संघ अथवा व्यक्ति विशेष से आप बन्धे हुए नहीं हैं। जैसे वायु, गरीब और अमीर, सबको स्पर्श करती है, उसी प्रकार आप "**जहा तुच्छस्स कत्थइ तहा पुण्णस्स कत्थइ, जहा पुण्णस्स कत्थइ, तहा तुच्छस्स कत्थइ**" (आचारांगसूत्र) गरीब-अमीर का भेद रखे बिना सबको ज्ञान-दान देते हैं।

5. **शीतलता**:– जिस प्रकार चन्द्रमा, सौम्य और शीतल होता है, उसका शीतल प्रकाश रात्रि को सुहावनी बना देता है; उसी प्रकार आपकी पवित्र लेश्या- शुभ परिणाम, सभी जीवों के लिए सुखदायक होते हैं। संसार के त्रि-ताप से तपे हुए, घबराये हुए और झुलसे हुए जीवों के लिए आप चन्द्रमा के समान शांति प्रदायक हैं। आपके चेहरे और वाणी से झरती हुई सुधा में सराबोर होकर भव्य प्राणी अनुपम शांति का अनुभव करते हैं। अंधेरी रात में चन्द्रमा का प्रकाश, पथिकों के लिए आधारभूत होता है, उसी प्रकार मिथ्यात्व एवं अज्ञानरूपी भाव अन्धकार से भरे हुए इस भयानक संसार में आपके ज्ञान का तेजोमय प्रकाश मोक्ष-मार्ग के पथिकों का मार्ग प्रशस्त करता है।

6. **तेजस्विता**:– जिस प्रकार सूर्य अपने तेज से प्रकाशित हो रहा है, वैसे आप अपने तप के तेज से देदीप्यमान हो रहे हैं। सूर्य का प्रकाश अन्धकार को मिटाता है, उसी प्रकार आपका ज्ञान-प्रकाश भी अज्ञान रूपी अन्धकार को मिटाने वाला है।

7. **गंभीरता**:– जिस प्रकार समुद्र गंभीर होता है, वह क्षुद्र नाले की तरह छलक कर खाली नहीं हो जाता, उसी प्रकार आप भी उदार हृदयी और गंभीर हैं। आप अनुकूल निमित्तों से प्रसन्न नहीं होते और प्रतिकूल निमित्तों से उद्वेलित नहीं होते है। आप समुद्र के सम गंभीर और पृथ्वी सम क्षमाशील हैं।

8. **संयमप्रियता**:– जिस प्रकार सुमेरु पर्वत भयंकर बवण्डर से भी कम्पित नहीं होता और स्थिर रहता है, उसी प्रकार आप दृढ़ संयमी, अनगारसिंह, संयम-साधना में उपस्थित होते हुए भयंकर उपसर्ग से भी नहीं डिगते और संयम में अधिकाधिक स्थिर रह कर उपसर्गों का सामना करते रहते हैं। आपको न तो अनुकूल (स्त्री एवं सत्कार)

और न ही प्रतिकूल (रोग एवं वधादि) परीषह डिगा सकते हैं। आप परीषहों और उपसर्गों के सामने धीर-वीर होकर डटे हैं। जिस प्रकार हाथी युद्ध में डट जाता है और भयंकर घाव लगते हुए भी पीछे नहीं हटता, उसी प्रकार आप शूरवीर मुनिवर परीषहरूपी सेना के सामने डट जाते हैं और आपत्तियों से घबराकर कभी पीछे पाँव नहीं रखते हैं। जिस प्रकार सिंह किसी भी पशु से पराजित नहीं होता, उसी प्रकार आप परीषहों से पराजित नहीं होते हुए सिंह के समान निर्भीक होकर अपनी संयम-यात्रा को आगे बढ़ा रहे हैं।

जिस प्रकार मारवाड़ का धोरी वृषभ, उठाये हुए भार को उत्साहपूर्वक यथास्थान पहुँचाता है, उसी प्रकार आप स्वीकार किये हुए संयम का, आडम्बर प्रदर्शन से दूर रह कर चढ़ते हुए भावों से यथाविधि निर्वाह कर रहे हैं।

9. **अप्रमत्तता:-** दीक्षा दाता गुरुदेव आचार्यप्रवर पूज्यश्री हस्तीमल जी म.सा. ने दीक्षा देते ही ये वचन कहे कि-'प्रमाद तो जीवन में आने वाला ही है, अप्रमत्त रह कर बताओ।' उसी अप्रमत्तता की राह पर चलते हुए आप "**धीरो मुहुत्तमवि णो पमायए**" तथा "**भारंडपक्खी व चरेऽप्पमत्ते**" (उत्तराध्ययन सूत्र, 4) के अनुसार अपनी संयम-साधना में सदा सावधान रहते हैं।

10. **सहनशीलता:-** जिस प्रकार पृथ्वी सर्दी, गर्मी, कूड़ा-कर्कट, विष्ठा, मूत्र तथा हल-कुदालादि के प्रहार सहती हुई भार वहन करती है, उसी प्रकार आप "**समो निंदा-पसंसासु**" अपने को वन्दन करने वालों तथा गाली देने और प्रहार करने वालों के प्रति समभाव रखते हुए, सभी प्रकार के कष्टों को सहन करते हैं।

11. **देदीप्यमानता:-** "**घयसित्तिव्व पावए**" (उत्तराध्ययन सूत्र, 3) जिस प्रकार घृत से सिंचन की हुई अग्नि, विशेष रूप से जाज्वल्यमान होती है, उसी प्रकार आप ज्ञान और तपस्या के तेज से देदीप्यमान हैं। अग्नि अपने को और दूसरों को प्रकाशित करती है, किन्तु वह किसी दूसरे से प्रकाशित नहीं होती, उसी प्रकार आप अपने ज्ञान और तप के प्रभाव से स्वयं देदीप्यमान हैं और दूसरे भव्य प्राणियों को भी प्रकाशित करते हैं।

12. **उपशांतता:-** गोशीर्ष चन्दन शीतल और सुगन्धित होता है। उसके विलेपन से शरीर शीतल और सुगन्धित होता है, उसी प्रकार आप कषायाग्नि के शान्त हो जाने से शीतल हैं और आपके पवित्र चारित्र की सुयश रूपी भीनी सुगन्ध चारों ओर फैल रही है। जिस प्रकार हवा के नहीं चलने से सरोवर का जल स्थिर और सम रहता है, उसमें

लहरें नहीं उठतीं, उसी प्रकार कषाय उपशान्त हो जाने से आपमें समत्व आ गया है। आप सरोवर के समान शान्त और गंभीर हैं। परिस्थिति की विषमता आपको उत्तेजित नहीं कर पाती है।

13. **ध्येयनिष्ठाः**- जिस प्रकार सर्प अपने लक्ष्य की ओर दृष्टि रखता है, इधर-उधर नहीं देखता, उसी प्रकार आप केवल मोक्ष की ओर ही दृष्टि रख कर आराधना करते रहते हैं। सदैव आपका लक्ष्य मोक्ष की ओर ही रहता है। आप **''णो लोगस्सेसणं चरे''** लोकैषणा से रहित इस भारत भूमि पर विचरण कर स्व-पर कल्याण साध रहे हैं। यदि कोई जिज्ञासु बन कर आपके समीप आता है तो आप उसे अपनी सीधी-सादी भाषा में मोक्ष-मार्ग का उपदेश करते हैं, अन्यथा अपने ध्यान में लीन रहते हैं। शब्दाडम्बर और पाण्डित्य-प्रदर्शन से आप दूर ही रहते हैं। इस प्रकार के ध्येयनिष्ठ निर्ग्रंथ अनगार ही खरे 'तिन्नाणं तारयाणं' होते हैं।

समयज्ञता

आपके जीवन का एक प्रसंग समाज में समरसता पैदा करने वाला है। उसे यहाँ मैं प्रस्तुत करना बहुत आवश्यक समझता हूँ-

वि.सं. 2066 का प्रसंग है। जब उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास ब्यावर के पीपलिया बाजार स्थानक में था। पूज्य संत प्रवर चातुर्मासार्थ स्थानक की तीसरी मंजिल पर विराजमान थे। द्वितीय मंजिल पर व्याख्यान होता एवं श्रावक वर्ग धर्मसाधना करते। प्रथम मंजिल पर अप्काय एवं तेजस्काय का आरंभ होने से सायंकाल के समय नीचे के द्वार बंद कर दिये जाते थे। स्थानक का दूसरा द्वार भी था, जो सीधे दूसरे मंजिल से जुड़ता था।

सभी सम्प्रदायों का सामूहिक धर्मस्थान होने से पर्वाधिराज पर्युषण के दिनों में प्रतिक्रमण के समय उपस्थिति प्रशंसनीय थी। कुछ मनचले युवा साथी माइक में प्रतिक्रमण कराने का आग्रह कर रहे थे। प्रथम और द्वितीय मंजिल पर स्थान कम होने से साधु समाचारी से अनभिज्ञ कुछ श्रावकों ने ऐसा वातावरण निर्मित कर दिया कि नीचे की मंजिल के द्वार खोलने में क्या बाधा है? बात को तूल दे दिया गया, पक्ष-विपक्ष जैसी स्थिति बन गयी। उपाध्यायप्रवर के कानों में भी शब्द पहुँचे। स्थिति को समझ कर दूसरे दिन प्रवचन सभा में पूज्यश्री ने आत्मीयता पूर्ण शब्दों में फरमाया-''श्रावक, श्राविका साधु के अम्मा पिया होते हैं। वे पूज्य संत-सतियों के समाचारी-पालन में सहयोगी होते हैं। हमारी ऐसी समाचारी है कि जहाँ अप्काय तेजस्काय का आरंभ होता है, वहाँ हमें ठहरना नहीं कल्पता है।

पर्वाधिराज पर्युषण के पावन दिनों में आप सभी धर्माराधना में एक दूसरे के सहयोगी बनें। धर्म स्थानक झगड़ा करने के लिए नहीं है, झगड़ों का अंत करने के लिए है। आप जब तक एक दूसरे की भावना नहीं समझेंगे तब तक न एकता रहेगी और न ही आनंद मिलेगा। वृद्ध आदि को कोई असुविधा हो, स्थान की कमी हो तो हमारे पास बहुत जगह है, आप हमारे पास आकर प्रतिक्रमण कर सकते हैं।''

उपाध्यायप्रवर के शालीनता एवं आत्मीयता पूर्ण मधुर शब्दों से सभी शांत हो गये। बात आगे नहीं बढ़ी, कलह और विवाद की स्थिति नहीं बनी और सभी ने उत्साहपूर्वक पर्युषण पर्वाराधन किया।

यह थी उपाध्यायश्री जी की समयज्ञता, संयमप्रियता, सहनशीलता और सौम्यता, जिसका प्रभाव सेवा में पहुँचने वालों पर पड़े बिना नहीं रहा।

विद्वत्ता, प्रज्ञा और साधना की त्रिपुटी के आदर्श हैं- उपाध्यायप्रवर पूज्य श्री मानचन्द्र जी म.सा.। ''**अहो य राओ य जयमाणे**'' प्रातः जागरण से लेकर रात्रि विश्राम तक मोक्ष का प्रयत्न करते हुए तथा ''**खणं जाणाहि पंडिए**'' के अनुसार प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करते हुए आप निम्न दोहे को जीवन में चरितार्थ करते हैं-

खण निकम्मो रहणो नहीं, करणो आतम काम।
भणणो गुणणो सीखणो, रमणो ज्ञान आराम।।

आप स्वाध्याय, ध्यान, मौन, प्रवचन, प्रतिक्रमण, प्रतिलेखन, शास्त्र-वाचना आदि सभी क्रियाएँ निश्चित समय पर सजगता पूर्वक करते हुए संघ-उत्थान एवं समाज-उत्थान हेतु सतत प्रयत्नशील रहते हैं।

''आणाए मामगं धम्मं'' प्रभु आज्ञानुसार संयमी-जीवन व्यतीत करते हुए आपके 50 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। दीक्षा स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में हम आपके संयमी-जीवन की अनुमोदना करते हुए यही मंगल भावना भाते हैं कि आप दीर्घायु एवं यशस्वी होकर जिनशासन की महती प्रभावना करते रहें, भव्यजनों को मोक्षमार्ग में आगे बढ़ाते रहें और चतुर्विध संघ का पथ प्रदर्शन करते रहें। अंत में कवि के शब्दों में:-

दोष मुक्त आचार आपका, जीवन का अनुरंजन है,
कोमल उर में रहता आपके, जन-जन का हित चिंतन है।
दीक्षा की है स्वर्ण-जयंती, अवसर ये सुख कंदन है।
श्रेयमार्ग के राही आपका, अभिनंदन शत वंदन है।।

-7/14, उत्तरी नेहरू नगर, बिट्ठल बस्ती, बंगाली मिठाई के सामने, ब्यावर (राज.)

दीक्षा अर्द्धशती वर्ष

साधनाशील योगी उपाध्यायप्रवर

श्रीमती प्रेमलता सिंघवी

परमश्रद्धेय प्रातःस्मरणीय उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का जन्म सूर्यनगरी जोधपुर में वि.सं. 1991 की माघ कृष्णा चतुर्थी को हुआ, जिनवाणी में पढ़ा कि माघ मास इतना शुभ है कि कितने भगवान के मोक्ष कल्याणक, जन्म कल्याणक, च्यवन कल्याणक, दीक्षा कल्याणक, केवल कल्याणक इस माघ मास में हुए। इसी माघ मास में आचार्यप्रवर श्री कजोड़ीमलजी म.सा. का जन्म व इसी माघ मास में आचार्यप्रवर पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. का दीक्षा दिवस व मेरे आराध्य प्रातःस्मरणीय आचार्यप्रवर पूज्य हस्तीमल जी म.सा. का भी दीक्षा दिवस आता है। ऐसे शुभ माघ मास में ही रत्नसंघ के प्रथम उपाध्याय प्रवर शान्त-प्रशान्त साधनाशील योगी महापुरुष का जन्म भी आता है।

उपाध्यायप्रवर का जन्म सुश्रावक गुरुभक्त वीरपिता श्री अचलचन्द जी सेठिया एवं उनकी धर्मपरायणा पत्नी वीरमाता छोटाबाई जी की कोख से सेठिया परिवार में हुआ। आपके सांसारिक छह भाइयों एवं तीन बहिनों भरा-पूरा परिवार का परस्पर प्रेम के साथ धर्मनिष्ठ है।

आप बचपन से ही शान्त, सरल, सादगीमय जीवन व्यतीत करते थे। संत-सतियों के दर्शन तथा सेवा-भक्ति का शुरू से ही आपके जीवन में महत्व था।

धीरे-धीरे आप गृहस्थ जीवन से अनगार धर्म की ओर बढ़ने लगे व निश्चय किया कि मुझे दीक्षित होना है। गृहस्थ में अनासक्त रहना अत्यन्त दुर्लभ है। आखिर वह शुभ अवसर आ ही गया। वीर संवत् 2002 में जोधपुर के सरदार स्कूल के प्रांगण में आचार्य हस्तीमल जी म.सा. के मुखारविन्द से भव्य वातावरण में आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई। दीक्षा के तुरन्त बाद गुरु के समक्ष विनयपूर्वक आपने कुछ ऐसे नियम लिये, जिससे दूसरे दिन से ही आप आत्म-साधना में लग गये। जीवन में उन नियमों के प्रति एक क्षण भी प्रमाद नहीं किया। मौन रहना, स्वाध्याय करना, नूतन थोकड़ों को सिखाना आपकी दिनचर्या बन गई।

आपके वैराग्य व साधु जीवन के पचास वर्ष पूर्ण होने का सुनहरा अवसर आ गया।

आपके जीवन में ज्ञान, वैराग्य, त्याग, तपस्या, साधना का जो मिश्रण हमें देखने व सुनने में आया उसे स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। आपके जीवन की सौरभ पूरे देश मैं फैली हुई है। जो व्यक्ति आपसे एक बार मिला वह इतना प्रभावित हो जाता है कि आपके दर्शन हेतु बार-बार आना चाहता है और उसके शब्द निकलते हैं कि इस पंचमकाल में ऐसे साधु कोई विरले ही होते हैं।

आत्म-गुणों की ऐसी साधना आपके जीवन में है कि बिना बोले ही आपके आचरण से दर्शन करने वाले के हृदय को छू जाती है। आपसे जब हम मिलते हैं, वंदन करके सुखसाता पूछते हैं तो एक मधुर ध्वनि कानों में मिश्री घोल देती है। आप सिर्फ फरसाते हैं- आनन्द ही आनन्द।

आपने एक चातुर्मास आचार्यश्री के साथ करने के बाद आपने नेश्राय गुरु की सेवा में रह कर ज्ञानार्जन में आगमज्ञान के साथ-साथ संस्कृत और प्राकृत भाषा का भी पूर्ण रूप में ज्ञान प्राप्त किया। आपने गुरु पंडित रत्न श्री लक्ष्मीचन्द जी म.सा. की सेवा में काफी समय रहकर ज्ञान प्राप्त किया। अपने ज्ञान पिपासु शिष्य को उन्होंने भरपूर ज्ञान दिया। आपको 'पंडित रत्न' के विशेषण से उपमित किया गया।

आपने अपने जीवन में ज्ञानार्जन के साथ-साथ वैयावृत्य का भी उदाहरण प्रस्तुत किया। जब पंडित जी महाराज बीमार हुए तो उनकी सेवा से उनको साता पहुँचाई। पंडित जी म.सा. का देवलोक होने के बाद श्री चौथमल जी म.सा. की सेवा की। बाबाजी श्री जयन्ती मुनि जी की अस्वस्थता के कारण जोधपुर में चातुर्मास हुआ। उस समय आपने उनकी जो सेवा की वैसी सेवा कोई विरला ही कर सकता है।

जैसा आपका नाम है वैसा ही रत्नसंघ का 'मान' आपने बढ़ाया है। युगों युगों तक हम एवं आने वाली पीढ़ी आपको अपने हृदय में रखकर नमन करती रहेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

आपका स्वयं का जीवन तो ज्योतिर्मय है ही, पर जो आपको मिलता है उसके जीवन में कर्म की ज्योति प्रज्वल्लित हो जाती है। वह भी जीवन में आसक्ति को कम करते हुए त्याग, तप की ओर अग्रसर हो जाता है।

मैं आपके चरणों में शत शत वंदन करती हुई यही कामना करती हूँ कि जब तब मेरा जीव संसार में आये तो आप जैसा गुरु ही मुझे मिले, ताकि कभी न कभी मैं भी मुक्तिमार्ग पर अग्रसर हो सकूँ।

- धर्मपत्नी श्री चन्द्रराज सिंघवी, डीजल शेड रोड़, जोधपुर (राज.)

चिन्तन

ज्ञान के साथ हो आचरण

आचार्य श्री विजयरत्नसुंदरसूरिजी

घर में अंधेरा था! लाइट चालू की! उजाला हुआ।
लाइट के उजाले में घर में पड़ा कचरा दिखाई तो दिया,
पर हाथ में झाड़ू उठाकर कचरे को दूर करने का
यदि कोई प्रयास ही न किया तो?
कचरा घर में ज्यों के त्यों पड़ा रहा!
प्रकाश निरर्थक हो गया!
विशेषावश्यक भाष्य नामक ग्रंथ में ज्ञान को
'अकिंचित्कर' बताया गया है।
ज्ञान आपको जानकारी तो दे देता है, परन्तु
जानकारी देकर वह वहीं रुक जाता है!
ज्ञान से आपको जो कुछ जानने को मिला उसके लाभ को
पाने के लिए अथवा उसके नुकसान से बचने के लिए
पुरुषार्थ तो आपको ही करना होगा।
ज्ञान वह नहीं कर सकता।
संदेश स्पष्ट है! **जानना अलग है और पाना अलग है।**
देख लेना अलग है और पहुँच जाना अलग है।
जानने के लिए ज्ञान चाहिए, पर पाने के लिए तो आचरण ही चाहिए।
देख लेने के लिए प्रकाश चाहिए, पर
पहुँच जाने के लिए तो पुरुषार्थ ही चाहिए।
वर्तमानयुग में आश्चर्य तो यह सृजित हुआ है कि
सुख को पाने के लिए और दुःख से दूर होने के लिए
इंसान जानकारी के अनुसार पुरुषार्थ कर ही रहा है।
पैसा कमाने के मार्ग को जान लेने के बाद

वह हाथ जोड़कर बैठा नहीं रहता।

बाजार में जाता ही है! ग्राहकों को सम्हालता ही है!

माल खरीदता ही है और बेचता ही है।

उसी तरह, शरीर को रोगमुक्त करने की

जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद

वह चादर तानकर बिस्तर में सो नहीं जाता!

दवाई लेता ही है! पथ्यपालन करता ही है!

आवश्यकता होने पर ऑपरेशन

कराने के लिए भी तैयार हो ही जाता है।

केवल पुण्य-पाप का क्षेत्र, पतन-उत्थान का क्षेत्र और

धर्म-अधर्म का क्षेत्र मनुष्य ने ऐसा रखा है कि जहाँ

वह केवल जानकारी प्राप्त करके संतुष्ट हो गया है,

तदनुरूप आचरण करने पर उसने गौर ही नहीं किया।

कारण? इस क्षेत्र में जानकारी के अनुसार

पुरुषार्थ करने पर शरीर और मन पर नियंत्रण रखने पड़ते हैं।

कष्टों को स्वीकारना पड़ता है, प्रलोभनों को छोड़ना पड़ता है।

जिसके लिए मनुष्य तनिक भी तैयार नहीं है।

किन्तु पढ़ लीजिए यह पंक्ति-

"जिसके होठों पर हंसी और पाँवों में छाले होंगे

मालिक, वो ही तेरे ढूंढने वाले होंगे"

संदेश स्पष्ट है।

रोगमुक्त बनना है?

औषधि की जानकारी ही पर्याप्त नहीं है।

दोषमुक्त बनना है?

उसकी भयानकता की जानकारी पर्याप्त नहीं है

जानकारी का आचरण में परिवर्तन करना ही होगा।

-'सुस्वागतम्' पुस्तक से साभार

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः80)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(गमा का थोकड़ा-3)

जिज्ञासा- देवताओं के 27 घरों के आगति स्थान कौन-कौनसे हैं?

समाधान- देवताओं के 27 घरों के आगति स्थानों को चार भागों में विभक्त कर समझने का प्रयास करते हैं-

11 घरों के आगति स्थान- 10 भवनपति व एक वाणव्यन्तर। इन 11 घरों में 5 प्रकार के जीव आते हैं- 1. असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, 2. संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, 3. असंख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय (तिर्यञ्च युगलिक), 4. संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य, 5. असंख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य (मनुष्य युगलिक)

1 घर में उपर्युक्त पाँच जीव आते हैं तो कुल 11 घरों में जीवों के आगति स्थान होंगे- 11X 5= 55

जिज्ञासा- असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय भवनपति, वाणव्यन्तर में ही आते हैं अथवा ऊपर के देवलोकों में भी आ सकते हैं?

समाधान- जैसाकि गति-आगति के थोकड़े से स्पष्ट है कि असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय मरकर यदि देवलोक में आये तो भवनपति-वाणव्यन्तर देवों में ही आते हैं, इनसे ऊपर के देवलोकों में नहीं आ पाते। इसका कारण यह है कि असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय पल्योपम के असंख्यातवें भाग से अधिक आयु का बन्ध ही नहीं कर पाते। भवनपति-वाणव्यन्तर में तो जघन्य स्थिति 10,000 वर्ष ही होने से इन घरों में तो आ सकते हैं, किन्तु ज्योतिषी व ऊपर के देवलोकों की जघन्य स्थिति पल्योपम का आठवाँ भाग व उससे अधिक ही होती है, अतः ज्योतिषी आदि ऊपर के देवलोकों में असंज्ञी तिर्यञ्च मरकर उत्पन्न नहीं हो सकते।

जिज्ञासा- असंख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यञ्च (तिर्यञ्च युगलिक) तथा असंख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य (मनुष्य युगलिक) मरकर

देवगति में कहाँ तक उत्पन्न हो सकते हैं?

समाधान- असंख्यात वर्ष की आयु वाले अर्थात् तिर्यञ्च युगलिक तथा मनुष्य युगलिक मरकर देवगति में ही उत्पन्न होते हैं। देवगति में भी दूसरे देवलोक तक उत्पन्न हो सकते हैं, किन्तु उससे ऊपर के देवलोकों में उत्पन्न नहीं हो सकते। क्योंकि तिर्यञ्च व मनुष्य दोनों ही प्रकार के युगलिकों की आयु कम से कम करोड़ पूर्व झाझेरी तथा अधिक से अधिक तीन पल्योपम की होती है। युगलिकों के लिए यह नियम है कि वर्तमान भव में जितनी आयु है, उससे अधिक आयु अगले देव-भव में प्राप्त नहीं कर सकते। किन्तु उससे कम आयु प्राप्त कर सकते हैं, उसके बराबर प्राप्त कर सकते हैं।

जिज्ञासा- युगलिक तिर्यञ्च व युगलिक मनुष्य की देवलोक में उत्पन्न होने सम्बन्धी क्या-क्या विशेषताएँ हैं?

समाधान- युगलिक तिर्यञ्च व युगलिक मनुष्य के देवलोक में उत्पन्न होने सम्बन्धी निम्नांकित विशेषताएँ हैं-

1. भवनपति, वाणव्यन्तर के घरों में सभी प्रकार की स्थिति वाले युगलिक उत्पन्न हो सकते हैं। क्योंकि भवनपति, वाणव्यन्तर की जघन्य स्थिति 10,000 वर्ष है। अतः करोड़ पूर्व झाझेरी स्थिति से लेकर 3 पल्योपम तक की आयु वाले सभी युगलिक इनमें उत्पन्न हो सकते हैं।
2. ज्योतिषी के घरों में वे ही युगलिक आकर उत्पन्न हो सकते हैं, जिनकी स्थिति कम से कम पल्योपम का आठवाँ भाग हो। इससे कम स्थिति वाले युगलिक ज्योतिषी में नहीं आ सकते हैं। क्योंकि ज्योतिषी के घर में जघन्य स्थिति पल्योपम का आठवाँ भाग है। यहाँ ज्योतिषी के पाँच भेदों को मिलाकर कथन किया गया है। अन्यथा एक-एक भेदों का अलग-अलग विचार करें तो उनकी जितनी-जितनी जघन्य स्थिति है, कम से कम उतनी स्थिति वाले युगलिक ही उसमें आ सकेंगे। उदाहरणार्थ- चन्द्र विमानवासी देवों की जघन्य स्थिति पाव पल्योपम है तो वहाँ कम से कम पाव पल्योपम की स्थिति वाले युगलिक ही उत्पन्न हो सकते हैं। अधिक से अधिक तो तीन पल्योपम वाले युगलिक भी उत्पन्न हो सकते हैं।
3. पहले व दूसरे देवलोक में वे ही युगलिक उत्पन्न होते हैं जिनकी स्थिति कम से कम क्रमशः एक पल्योपम व एक पल्योपम झाझेरी हो। क्योंकि इन दोनों देवलोकों में जघन्य स्थिति इतनी ही होती है।

4. पहले किल्विषी में ऐसे मिथ्यादृष्टि युगलिक ही उत्पन्न हो सकते हैं, जिनकी स्थिति तीन पल्योपम हो अर्थात् उत्कृष्ट स्थिति हो। क्योंकि पहले किल्विषी में तीन पल्योपम की स्थिति वाले देव ही मिलते हैं।
5. छप्पन अन्तरद्वीप युगलिक मनुष्यों की तथा खेचर युगलिक तिर्यञ्चों की उत्कृष्ट स्थिति पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग होती है, अतः वे मरकर भवनपति, वाणव्यन्तर के घरों में ही उत्पन्न होते हैं, इनसे ऊपर के देवलोकों में उत्पन्न नहीं हो सकते हैं।
6. जिन युगलिकों की स्थिति करोड़ पूर्व झाझेरी से लेकर एक पल्योपम के अन्दर-अन्दर होती है। अर्थात् एक पल्योपम में यदि अन्तर्मुहूर्त भी स्थिति कम है तो वे युगलिक नियमा मिथ्यादृष्टि होते हैं।
7. जो युगलिक जघन्य गमे से अर्थात् अपने भव की जघन्य स्थिति पाकर भवनपति, वाणव्यन्तर एवं ज्योतिषी के घरों में उत्पन्न होते हैं, तो वे भी नियमा मिथ्यादृष्टि होते हैं।
8. युगलिकों में आगमानुसार दृष्टि परिवर्तन नहीं होता है। अर्थात् जो जिस दृष्टि में उत्पन्न हुआ है, वह पूरे भव पर्यन्त उसी दृष्टि में रहता है। मिथ्यादृष्टि युगलिक मिथ्यात्व अवस्था में तथा सम्यग्दृष्टि युगलिक सम्यक्त्व दशा में आगामी भव का आयुष्य बन्ध करते हैं।
9. जो सम्यक्त्वी युगलिक हैं वे नियमा सम्यक्त्व में अगले भव का आयुष्य बन्ध करने के कारण आराधक बनते हैं। वे अधिकतम 15 भवों में मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं। मनुष्य और वैमानिक देव, इन दो दण्डकों के सिवाय शेष 22 दण्डकों के हमेशा के लिए ताले लगा देते हैं। अर्थात् 22 दण्डकों में जन्म-मरण नहीं करते हैं।
10. युगलिकों में सम्यक्त्व बदल सकती है, वह भी अपर्याप्त अवस्था में ही। पर्याप्त होने के बाद तो सम्यक्त्व भी नहीं बदलती। जैसे-युगलिक में उत्पन्न होते समय क्षयोपशम समकित हो (6 का क्षय 1 का वेदन), शरीर पर्याप्ति पूर्ण करते-करते एक समय के लिए वेदक समकित रहे, अगले ही समय में क्षायिक समकित प्राप्त हो जाय। इस अपेक्षा से कहा जाता है कि युगलिकों में अपर्याप्त अवस्था में समकित बदल सकती है।
11. युगलिकों में पहला व चौथा, ये दो गुणस्थान ही होते हैं। दूसरा व तीसरा गुणस्थान आगमानुसार नहीं माना जाता।
12. युगलिक मन्द-कषायी, उपशान्त वेदी एवं अल्प इच्छा वाले होते हैं।

उनमें किसी भी प्रकार की लब्धि का प्रयोग नहीं पाया जाता।

13. युगलिकों में किसी एक प्रकार के युगलिकों की अपेक्षा से विचार करें तो उनकी जघन्य तथा उत्कृष्ट स्थिति में बहुत अधिक अन्तर नहीं होता। यही कारण है कि उनकी उत्कृष्ट स्थिति लघुदण्डक आदि थोकड़ों में बतलाकर उनकी जघन्य स्थिति के लिए इतना ही कहा कि उत्कृष्ट से थोड़ी कम (देशोन) समझना चाहिए। **(क्रमशः)**

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

मान गुरु की जय-जयकार

श्री परासमल अशोककुमार गोगड़

प्रेम से बोलो सभी नर-नार, मान गुरु की जय जयकार,
भाव-भक्ति से बोलो हर बार, मान गुरु की जय-जयकार।।

जोधाणा शहर में जन्म लिया, सेठिया कुल में छाई खुशियाँ,
बज गई सबके दिल की सितार, मान गुरु की जय-जयकार।।

माता छोटा बाई पिता अचलचन्द, संस्कारों से कर दीना मालामाल,
जीवन हो गया तेरा गुलजार, मान गुरु की जय-जयकार।।

24 वें वर्ष में हुए तैयार, गुरु हस्ती से दीक्षा ली धार,
धवल वेश और उच्च विचार, मान गुरु की जय-जयकार।।

षट्काया को दिया अभयदान, वीर शासन का बढ़ाया मान,
पंच महाव्रत का किया श्रृंगार, मान गुरु की जय-जयकार।।

मन में बस एक ही लगन, पापों से मानव स्वतन्त्र,
शत-शत वन्दन करूँ हर बार, मान गुरु की जय-जयकार।।

धन्य हुई नगरी, धन्य समाज, युग-युग जीओ मान गुरुराज,
वंदन करते सभी नर-नार, मान गुरु की जय-जयकार।।

सब संतों में उत्तम जानो, आतमबल, धैर्य को पहचानो,
मौनी और तपसी गुरुवर की जय-जयकार।।

चरणों में 'अशोक' का वंदन हो, मम श्रद्धा-भक्ति का अर्पण हो,
जिनशासन दिव्य दिवाकर की, मान गुरु की जय-जयकार।।

-प्रतापनगर, जोधपुर (राज.)

युवा-स्तम्भ

अपने मित्र बनो

श्री रणजीत सिंह कूमट (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)

क्या आप अपने मित्र हैं? यह भी कितना बेतुका प्रश्न है। क्या कोई अपना शत्रु हो सकता है? जी हाँ, यह सही है। हम अपने शत्रु बन सकते हैं और हम ही अपने मित्र। मित्र होते हैं तो अपना भला करते हैं और शत्रु होते हैं तो शत्रु की तरह व्यवहार कर अपना ही नुकसान करते हैं। इस बात का हमें जरा भी पता नहीं है कि हम कब अपने शत्रु बनकर अपने आप की हानि कर लेते हैं? हानि और लाभ का आकलन तो तब हो सकता है जब हमें अपने दैनन्दिन जीवन पर अपना ध्यान हो कि हमारा लक्ष्य क्या है और किधर जा रहे हैं? हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है? क्या यह लक्ष्य हमारे जीवन के लिए श्रेयस्कर है? क्या हमारी दैनन्दिन गतिविधियाँ उसी लक्ष्य की ओर गति कर रही हैं?

अँधा चिपकाव व कषाय

अधिकांश में हम जीवन का लक्ष्य निर्धारित ही नहीं करते, यदि करते भी हैं तो अधिकांशतः धन, पद आदि भौतिक प्रगतिवादी लक्ष्य निर्धारित करते हैं जो विनाशी और अशाश्वत है। भौतिक प्राप्तियाँ एवं उपलब्धियाँ एक सीमा तक आवश्यक व व्यावहारिक हैं परन्तु वे जीवन के अंतिम लक्ष्य नहीं हो सकते और उनके प्रति अँधा चिपकाव ही हमें स्वयं का मित्र बनने में बाधक बनाता है। भौतिक उपलब्धियों के पीछे पागल होने पर कुछ भूत सवार हो जाते हैं जैसे-क्रोध, मान, माया और लोभ। ये भूत न केवल हमें दूसरों से दूर कर उनसे मित्रता समाप्त करवाते हैं, हमें भी स्वयं से दूर कर देते हैं और स्वयं के शत्रु बन जाते हैं। दशवैकालिक सूत्र में इन चारों भूतों अर्थात् कषायों के बारे में निम्न प्रकार कहा है-

कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणय-नासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोहो सव्व-विणासणो।।

-दशवैकालिक सूत्र, अध्याय 8, गाथा 38

अर्थात् क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय को समाप्त करता है, माया मित्रता का नाश करती है और लोभ सर्वनाश (सर्व गुणों का नाश) करता है।

जब लोभ सवार होता है तो किसी की परवाह नहीं करते। लोभ से माया या कपट और धोखाधड़ी की जाती है। तब अपने नजदीक के रिश्तेदार और प्रियजन को भी नहीं छोड़ते। लोभ के बीच कोई बाधक बने तो क्रोध सवार हो जाता है। मान या अहम् के पोषण के लिए

कितने पापड़ बेले जाते हैं। अहम् पर चोट लगी और क्रोध सवार हो जाता है। चारों कषाय एक दूसरे से जुड़े हैं और मिलकर हमारा सर्वनाश करते हैं। कषाय जब सिर पर भूत बनकर सवार हो जाते हैं तो हम स्वयं अपने वश में नहीं होते और हमें मालूम ही नहीं कि हम किस का लाभ कर रहे हैं और किसकी हानि।

क्रोध का दुष्प्रभाव

जब हम किसी पर क्रोध करते हैं तो किसकी हानि कर रहे हैं? स्वयं की या जिस पर क्रोध कर रहे हैं उसकी। जिस पर क्रोध कर रहे हैं उसकी हानि हो या न हो, स्वयं की हानि अवश्य हो रही है। जब माचिस की तीली किसी को जलाती है तो स्वयं पहले जलती है। बिना स्वयं के जले कोई किसी को नहीं जला सकता। इसलिए क्रोध करने पर पहले हानि स्वयं की होती है। दूसरे की हानि तब ही होगी जब वह क्रोध को स्वीकार करेगा। इसी प्रकार यदि सामने वाले के क्रोध की हम उपेक्षा कर दें और ध्यान ही न दें तो क्रोध करने वाले व्यक्ति का हम पर कोई असर न होगा। जब तक हम स्वीकृति न दें हमारा अपमान कोई नहीं कर सकता। सामने वाले के क्रोध का हम पर तब ही असर होगा जब हम उसे स्वीकार करें या उस पर ध्यान दें। जैसे ही ध्यान दिया या स्वीकार किया हम प्रतिक्रिया करेंगे और फिर क्रिया-प्रतिक्रिया की शृंखला चल पड़ेगी और क्रोध में दोनों पक्षों की हानि ही होगी। क्रोध से प्रीति का नाश तो होता ही है, स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ता है। उच्च रक्तचाप (Hypertension), तनाव जनित रोग यथा मधुमेह (Diabetes), स्नायु रोग आदि का आगमन क्रोध से ही होता है। यह स्वयं के प्रति शत्रुता ही है। रोग को आमंत्रण हम ही दे रहे हैं। क्रोध हमें स्वयं का शत्रु बना देता है। स्वयं का मित्र बनना है तो क्रोध पर नियंत्रण करना होगा।

प्राणिमात्र से मित्रता

यदि हम अपने खुद के मित्र बनना चाहते हैं तो सब प्राणियों के मित्र बनो ('सर्वेषु मैत्री'- सबसे मैत्री अथवा 'मित्ती मे सव्व भूएसु'-समस्त सत्त्वों या प्राणियों से मैत्री)। किसी भी प्राणी से वैर भाव न हो (वेरं मज्झं न केणइ)। सब प्राणी हमारे जैसे हैं और उनके साथ मैत्री है और उनसे वैर स्वयं से ही वैर है। प्राणिमात्र के मित्र बनने से स्वयं से मित्रता स्थापित होगी। भगवान महावीर ने कहा है जिस प्राणी को तुम हणने (मारने) योग्य समझते हो वह कोई अन्य नहीं तुम ही हो। जिस प्राणी को तुम प्रताड़ित या दमित करने योग्य समझते हो वह कोई अन्य नहीं तुम ही हो। जब हम अपने आप में अन्य जीवों की अनुभूति महसूस करने की कोशिश करते हैं तो अन्य जीवों की अनुभूति हमारे में समाहित हो जाती है और तब मुझमें और अन्य जीव में कोई फर्क नहीं रहता। जब तक हम दूसरे को 'दूसरा'

समझते हैं तब तक ही हिंसा करते हैं। हम स्वयं पर हिंसा नहीं कर सकते। हिंसा 'दूसरे' पर ही होती है। जब हमारे भावों में 'दूसरा' नहीं रहता तो हिंसा का भाव ही समाप्त हो जाता है। अतः सर्वप्रथम 'दूसरे' का भाव मन से निकाल दें और सबको अपना ही हिस्सा मानें। मुझमें और अन्य में कोई अंतर नहीं रह गया, इसे 'एकत्व' भाव भी कहते हैं; जहाँ सब एक समान दिखाई देते हैं और कोई अपने से अलग नहीं दिखता। सबसे मित्रता करने पर स्वयं के साथ मित्रता स्वतः स्थापित हो जाती है। जो स्वयं का मित्र है वह सबका मित्र है और जो सबका मित्र है वह स्वयं का मित्र है।

शरीर से मित्रता

स्वयं का मित्र बनने के लिए वे सब कार्य त्यागने होंगे जो हमारे शरीर के लिए हानिकारक हैं। 'अप्पमित्तं भव' की प्राथमिक शर्त है स्वयं के शरीर से मित्रता। सबसे पहले स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। अपने स्वास्थ्य के लिए वे सब प्रकार के भोजन त्यागने होंगे जो हानिकर हैं। मांसाहार न केवल हमारे शरीर के लिए हानिकर है, उन प्राणियों के लिए भी हानिकर है जिनकी हिंसा से ही हमारे मांसाहार का प्रबंध होता है। निरीह प्राणियों के वध से ही मांसाहार तैयार होता है। अतः स्वयं का मित्र बनने के लिए सब प्राणियों को मित्र बनाना आवश्यक है, जिससे उन निरीह प्राणियों की हिंसा समाप्त हो सके। अहिंसा और शाकाहार भोजन ही सब प्राणियों की रक्षा कर सकता है और हमें उनका मित्र बना सकता है। सब प्राणियों का मित्र ही स्वयं का मित्र है।

सिटी बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री फिलीप वोलेन (Shri Phillip Wollen) के अनुसार करीब करोड़ों जानवर प्रति सप्ताह काटे जाते हैं। यह मानवता और प्राणिमात्र के खिलाफ अकल्पनीय अनुपात का अपराध है। मांसाहार न केवल पशुओं को मार रहा है, हमारी अर्थ-व्यवस्था को भी नष्ट कर रहा है। आज करीब एक अरब लोग भूख से तड़प रहे हैं और बीस करोड़ लोग कुपोषण से पीड़ित हैं। मांसाहार समाप्त करने पर भुखमरी हमेशा के लिए समाप्त की जा सकती है। एक किलो मांस तैयार करने के लिए पचास हजार लीटर पानी की आवश्यकता होती है। पानी भविष्य में बहुत कम होने वाला है और अगला युद्ध तेल के लिए नहीं पानी के लिए होगा। पानी बचाने के लिए भी मांसाहार का त्याग आवश्यक है। मांसाहार से विभिन्न प्रकार के केंसर और हृदय रोग होते हैं जबकि शाकाहार-जनित किसी प्रकार की बीमारी का नाम नहीं लिया जा सकता। यदि कत्लखानों के कांच की दीवारें हों, तो जो भी व्यक्ति कत्लखाने को देख लेगा उसे मांस त्याग की दलील देने की आवश्यकता नहीं रहेगी। शांति का अर्थ मात्र युद्ध का अभाव नहीं है, इसका अर्थ है किसी जाति, नस्ल, रंग, धर्म और प्राणि-प्रजाति (Species) के भेदभाव के बिना सबको

प्रति न्याय। पशुओं की हत्या हमारे ही विनाश की रूपरेखा है। शाकाहार विश्वशांति का आधार है।

इसके अतिरिक्त भोजन अधिक तीखा, तला हुआ, अधिक घी-तेल और वसा से युक्त न हो और अधिक मीठा और नमकीन भी न हो। इनसे भी मोटापा, मधुमेह, रक्तचाप आदि रोग होते हैं जो शरीर को अन्दर ही अन्दर खोखला कर देते हैं और विभिन्न अंगों को हानि पहुँचाते हैं। सादा और स्वस्थ भोजन के साथ घूमना व व्यायाम भी अत्यंत आवश्यक है जिससे शरीर स्वस्थ बना रहे। यदि शरीर स्वस्थ नहीं है तो किसी भी प्रकार का कार्य करने में असमर्थ होंगे और जीवन का आनंद भी नहीं ले पाएँगे। शरीर इस जीवन रूपी नदी को पार करने की नैया है और यदि नैया ही ठीक नहीं है तो नदी कैसे पार कर सकते हैं? स्वयं को मित्र बनने के लिए स्वयं के शरीर का ध्यान रखना होगा।

व्यसन मुक्ति

भोजन के अतिरिक्त हमारे शरीर को हानि पहुँचाने वाली कुछ बुरी आदतें भी हैं, जैसे-तम्बाखू, गुटखा, धूम्रपान, नशीली वस्तुएँ जैसे शराब, ब्राउन शुगर व अन्य ड्रग्स। इनसे शरीर व धन की हानि होती है और परिवार के सदस्य भी परेशान होते हैं। केंसर जैसी भयंकर बीमारियाँ धूम्रपान व गुटखा के प्रयोग से होती हैं। शराब से शरीर खोखला हो जाता है, यकृत (Liver) खराब हो जाता है और नशे में उचित-अनुचित का भान भी समाप्त हो जाता है। शराब की लत से अच्छे-अच्छे घराने नष्ट हो गये। गरीब व मध्यम वर्ग में तो शराब बच्चों को दाने-दाने को मोहताज कर देती है। घरेलू हिंसा (पत्नी और बच्चों की पिटाई) अथवा Domestic violence आम बात हो जाती है। परिवार टूट जाते हैं और गरीबी में बसर करना एक मजबूरी बन जाती है। इन आदतों से हम अपने मित्र बनने के बजाय स्वयं व परिवार के शत्रु बन जाते हैं। परिवार ही नहीं समाज व देश के भी शत्रु बन जाते हैं। जो शराब और ड्रग्स लेते हैं वे इनका धंधा भी करने लग जाते हैं। जिससे शराब और ड्रग्स का प्रचार-प्रसार होता है, तस्करी और काला-बाजारी, चोरी, हिंसा, शस्त्र-व्यापार आदि बढ़ते हैं, नवयुवकों को ड्रग्स का शिकार बनाया जाता है, नकली शराब का व्यापार होता है जिसमें विषैली शराब भी बिकती है और अनेकों निरपराध लोगों की जान चली जाती है। शराब और ड्रग्स के अंतरराष्ट्रीय गुट (gang) बने हुए हैं जो राष्ट्रों और सरकारों से भी युद्ध पर उतारू हो जाते हैं। जो इन धंधों से दूर हैं वे स्वयं का भी भला कर रहे हैं और समाज व राष्ट्र का भी।

मन, वचन और कर्म की शुद्धता

मन में जो विचार उठते हैं वे सर्व हितकारी हों, किसी को हानि पहुँचाने के लिए न हों।

वचन भी प्रिय हों और किसी का मन न दुःखायें। मन और वचन शुद्ध हैं तो हमारे कार्य स्वतः ही शुद्ध और सर्व हितकारी व प्रिय होंगे। जो विचार, कार्य या वाणी अन्य के लिए हितकारी है वह स्वयं के लिए भी हितकारी है और जो दूसरों के लिए अहितकर है। वह हमारे लिए भी अहितकर है।

मन, वचन और काया का संचालन सर्व हितकारी कैसे बने, इसका निर्देश भगवान महावीर और भगवान बुद्ध ने पाँच व्रतों अथवा शील में समाहित कर एक आचरण शैली का निर्धारण किया है। मन, वचन और काया से किसी की हिंसा करूँ नहीं, कराऊँ नहीं और करते का अनुमोदन नहीं करूँ, ऐसा प्रावधान किया है। इसी प्रकार मन, वचन और काया से झूठ बोलूँ नहीं, बुलवाऊँ नहीं और बोलने वाले का अनुमोदन करूँ नहीं। अदत्तादान (बिना दी हुई चीज लेना) अथवा चोरी करूँ नहीं, कराऊँ नहीं और करते का अनुमोदन करूँ नहीं मन, वचन और काया से। यही बात मैथुन व्रत (Sexual conduct) के लिए कही है। गृहस्थ के लिए स्वयं की पत्नी (स्त्री के सम्बन्ध में पति) के अतिरिक्त अन्य के साथ सम्भोग करने व करवाने पर रोक है, तो साधु, साध्वी के लिए संपूर्ण रूप से सम्भोग मन, वचन व काया से करने, करवाने व अनुमोदन पर रोक है। उनके लिए पूर्ण ब्रह्मचर्य का प्रावधान है। पाँचवाँ व्रत भगवान के मुताबिक अपरिग्रह है जिसमें गृहस्थ के लिए स्वयं द्वारा निर्धारित सीमा से अधिक धन-सम्पत्ति के संग्रह करने का निषेध है, परन्तु साधु के लिए तनिक भी संग्रह करने या संग्रहवृत्ति में प्रवृत होने, करवाने या अनुमोदन पर रोक है। संग्रह प्रवृत्ति पर सीमा लगाने से धन संग्रह की होड़ पर रोक लगेगी और अतिरिक्त धन को समाज के भले में लगाने की प्रेरणा रहेगी। भगवान बुद्ध के अनुसार पाँचवाँ शील नशीली वस्तुओं के उपयोग का निषेध है, जिसका वर्णन ऊपर विस्तार से किया जा चुका है।

ये व्रत स्वयं के जीवन-उत्थान के लिए तो आदर्श और आवश्यक हैं ही, सामाजिक शांति, सामञ्जस्य व विकास के लिए भी आवश्यक हैं। जिस समाज में हिंसा, चोरी, कुशील और झूठ का बोलबाला होगा वह समाज कैसे शांत और उन्नतशील हो सकता है? जहाँ नारी का सम्मान नहीं और बलात्कार, व्यभिचार के वाकये आये दिन होते हैं वह समाज कितने निकृष्ट स्तर पर पहुँच चुका होगा? समाज में शांति और उत्थान के लिए कानून के अतिरिक्त जन-मानस में उपर्युक्त नियमों के पालन की प्रेरणा होनी चाहिए, जिससे कानून की पालना के लिए पुलिस व अदालत की आवश्यकता ही नहीं रहे। नागरिक यदि शीलवान हैं तो कानून की आवश्यकता नहीं है और यदि नागरिक शीलवान नहीं हैं तो कानून उनके लिए बेमाने हैं, क्योंकि वे कानून को तोड़ना अपनी हिम्मत और ताकत मानते हैं। समाज के विकास के लिए व्यक्ति का विकास आवश्यक है। व्यक्ति से समष्टि है और

व्यक्ति सुधर गया तो पूरा समाज सुधर जायेगा। स्वयं को सुधारे बिना जग को सुधारने की संकल्पना हास्यास्पद है।

स्वयं में समाहित होना

स्वयं में समाहित होना ही स्वयं से मित्रता है। हम अधिकाँश में भौतिक वस्तुओं व व्यक्तियों से आकर्षित होते हैं। उनके संग्रहण और उन पर आधिपत्य जमाने में ही व्यस्त रहते हैं। धन-अर्जन, गृह-निर्माण, साम्राज्य-विस्तार और इन्द्रियों को संतुष्ट करने के व्यापार में व्यस्त व्यक्ति स्वयं के प्रति कैसे ध्यान दे सकता है। मैं कौन हूँ और मेरा क्या लक्ष्य है इसका तो भान ही नहीं रहता। स्वयं को जानें तो स्वयं में समाहित होने की सोचें। मैं क्या हूँ इसका ही भान नहीं तो मैं के बारे में सोच कब और कैसे करें? जो भी धनार्जन किया जा रहा है वह किसलिए? स्वयं की आवश्यकता पूर्ति के लिए या पीढ़ियों के लिए या प्रतिष्ठा एवं प्रदर्शन के लिए? क्या यह धन शाश्वत है? हमारे साथ जायेगा? यदि अपनी आवश्यकता से अधिक है और अपने साथ जाने वाला नहीं है तो आवश्यकता से अधिक धन का अर्जन व संग्रहण क्यों? इस पर विचार कर अपनी और झांकें और शाश्वत लक्ष्यों की ओर प्रेरणा करें तो स्वयं पर ध्यान देने का अवसर मिलेगा। तब ही स्वयं में समाहित होने का प्रयास किया जायेगा। स्वयं में जो समाहित है वह निरर्थक प्रयास से ऊर्जा बचाकर सार्थक उद्देश्यों पर ऊर्जा का प्रयोग करेगा, द्वन्द्व से बचकर शांति की ओर प्रयाण करेगा। द्वन्द्व समाप्त कर शांति प्राप्त करने की ओर जो अग्रसर हैं वहीं स्वयं के मित्र हैं।

अतः स्वयं के मित्र बनो, अपने से दुश्मनी छोड़ो। जीवन में गुणों का विकासकर स्वयं आनन्द और शान्ति प्राप्त करें और समाज में भी शांति, समरसता व सामंजस्य स्थापित करें।

-सी-1701, लेक प्रिंम रोज, लेक होम्स, फेज-IV पवई, मुम्बई-400076 (महा.)

जिनवाणी पर अभिमत

श्री मोहनलाल तरावत

जिनवाणी के जनवरी-2013 के अंक में 'जग जाओ तो अच्छा है' कविता पढ़कर हृदय हर्षोल्लास से आत्मविभोर हो गया। मैं 'जिनवाणी' के प्रत्येक अंक का तत्परता से अध्ययन करता हूँ। यह पत्रिका जीवन-निर्माण हेतु उपयोगी है। आचार्य 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रवचनों के संकलन से मानव समुदाय को धर्म पथ पर चलने की प्रेरणा मिलती है। यह पत्रिका रत्नसंघ की प्रज्वलित, जाज्वल्यमान मशाल है, जिसमें जागृति और चेतना के स्वर गूंजते हैं।

4 फरवरी, 2013 कोयम्बटूर

समाज-चिन्तन

विवाह-समारोह सादगीपूर्ण एवं आदर्श बनें

श्री हस्तीमल झेलावत

जैन समाज एक गौरवशाली समाज रहा है। यह अहिंसक संस्कृति एवं उच्च संस्कार संपन्न समाज माना जाता है। 'जीओ और जीने दो' का मंगल उद्घोष इसका जीवन-धर्म रहा है। सम्पूर्ण राष्ट्र में जैन समाज की अपनी विशेष छवि रही है। इसके आचार, विचार, रीति-रिवाज, परम्पराएँ व व्यवहार श्रेष्ठ माने जाते हैं। आपसी समभाव, समन्वय व सद्व्यवहार समाज के आदर्श हैं। हमारे पूर्वजों ने मनुष्य का सांसारिक जीवन सुखमय बना रहे, दो परिवारों का मिलन तथा उनमें प्रेम संबंध मधुर, सुदृढ़ व स्थायी बने, इसके लिए विवाह संस्कार की एक सुन्दर सामाजिक व्यवस्था बनाई थी।

वर्तमान में भौतिकता की चकाचौंध में विवाह की सादगीपूर्ण परम्परा में हमारे अविवेक के कारण अनेक प्रकार की विकृतियाँ आ गई हैं। धन की प्रचुरता के कारण समाज का धनी वर्ग विवाह समारोह के आयोजन में धन के प्रदर्शन और अहंकार के पोषण में अनाप-शनाप पैसा खर्च कर अपने को दूसरे से अधिक सम्पन्न दिखाने के प्रयास में लगा हुआ है। इससे समाज में समानता की जगह विषमता की खाई बढ़ती जा रही है। यह स्थिति समाज के व्यापक हित को दृष्टिगत रखते हुए चिंतनीय है। इसमें शीघ्र ही आम सहमति के द्वारा सुधार लाने की आवश्यकता है।

बन्धुओं! मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर ही वह अपने जीवन का विकास करता है, जिसका सुदृढ़ आधार है- आपसी सहयोग, संगठन, एकता और भाईचारा। एक दूसरे के सुख-दुःख में सहभागी बनना मानवीय सामाजिक धर्म है। व्यक्ति का सम्पन्न होना बुरा नहीं है, बुरा है धन का अविवेकपूर्ण अपव्यय करना। पुण्य योग से आपको दूसरों की अपेक्षा अधिक धन मिला है, तो उसे व्यर्थ के प्रदर्शन में खर्च न करते हुए अपने ही साधर्मी बन्धुओं की सेवा के पवित्र कार्य में समर्पित कर उसे सार्थक कर सकते हैं। परोपकार ही श्रेष्ठ मानव धर्म है।

आप इस बात को भलीभांति जानते हैं कि आज अपने ही समाज के साधारण परिस्थिति के साधर्मी बन्धु बढ़ी हुई महंगाई के भारी बोझ तले पिसते जा रहे हैं। आर्थिक परेशानी से जूझते हुए इनके लिए गृहस्थी की गाड़ी चला पाना अत्यन्त कठिन हो रहा है। कर्ज में डूबे हुए समाज के भाई-बहिन अपने विवाह योग्य लड़के-लड़कियों को विवाह

सूत्र में बांधने में अपने आपको मजबूर और असहाय महसूस कर रहे हैं। इज्जत की खातिर वे किसी के सामने हाथ भी नहीं फैला सकते हैं। इसका शायद हमें अनुमान नहीं है। यदि समाज का सम्पन्न वर्ग विवाह-समारोह में धन का प्रदर्शन और फिजूलखर्ची न करते हुए हमारे ही इन साधर्मी बन्धुओं के जीवन को उन्नत बनाने और सामूहिक विवाह के माध्यम से इनके बच्चों के विवाह कार्य में सहयोग करेगा तो इंसान द्वारा इंसान की सेवा का आदर्श कार्य सिद्ध होगा।

जैन समाज की बिगड़ती हुई इस सामाजिक व्यवस्था में सुधार हेतु सकारात्मक प्रयास करना समय का तकाज़ा है। आज विवाह समारोह में बहुत संख्या में खाद्य सामग्री बनाई जा रही है। हमारे अविवेक के कारण इस महंगाई के समय में बड़ी मात्रा में खाद्य सामग्री प्लेटों में जूठी छोड़कर नष्ट की जा रही है, जिसके गटर में सड़ने से असंख्य जीवों की हिंसा के साथ ही पर्यावरण प्रदूषित होता है। अन्न को जूठा छोड़ना भोजन का अपमान और पाप है। इसलिए आवश्यक है कि स्वरुचि भोज में 21 आयटम से ज्यादा नहीं बनाएँ। इसके साथ ही सामूहिक भोजों में जमीकंद का प्रयोग कतई बंद किया जाना चाहिए। जैन धर्म तथा वैज्ञानिकों के अनुसार जमीकंद में अनन्त जीव होते हैं। जैनत्व के अनुरूप जमीकंद का उपयोग न करने से इन जीवों को अभयदान मिलेगा।

विवाह समारोह में रात्रि-भोजन नहीं किया जाना चाहिए। जैन धर्म में रात्रि-भोजन का पूर्णतया निषेध है। रात्रि-भोजन स्वास्थ्य की दृष्टि से तो हानिकारक है ही, अपितु वैज्ञानिक व धार्मिक दृष्टि से भी प्रतिकूल है। अतः रात्रिकालीन सामूहिक भोजों के प्रचलन का निषेध किया जाए। सबसे अच्छा तो यह है कि विवाह समारोह दिन में आयोजित हों, जिससे हमारी संस्कृति व सामाज़िक मर्यादाओं का सहज रूप में पालन संभव होगा तथा खर्च में मितव्ययिता भी होगी। जैन समाज में विवाह समारोह को सादगीपूर्ण बनाने हेतु सामूहिक रूप से चिंतन व प्रयास की आवश्यकता है। सामाजिक व्यवस्थाओं में बदलाव के लिए किसी नियम अथवा कानून की आवश्यकता नहीं, अपितु समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपने ही अंतरमन में जज्बा जगाना होगा। वर्तमान परिस्थिति पर गहन चिंतन कर सभी समाजजनों को एकजुट होकर विवाह समारोह में आ रही विकृतियों को दूर कर आदर्श व्यवस्था निर्माण करने हेतु संकल्प जगाना होगा।

विवाह समारोह में धन के प्रदर्शन व बढ़ती हुई फिजूलखर्ची पर सामाजिक नियंत्रण सभी चाहते हैं, परन्तु आगे आकर पहल करने का साहस कोई नहीं जुटा पा रहा है। इसके लिए आवश्यक है, देश के प्रत्येक नगर में जैन समाज के वरिष्ठजन, सामाजिक व धार्मिक संगठनों एवं महिला मण्डलों, सोश्यल ग्रुप्स के प्रतिनिधिगणों की सामूहिक बैठक बुलाकर

समारोह को अपनी संस्कृति व परम्परा के अनुरूप सादगीपूर्ण व आदर्श बनाने हेतु आम सहमति से कार्ययोजना बनाकर इसे कार्य रूप में परिणत करें। भविष्य में कोई कानून हमें अपनी गिरफ्त में ले, उससे पहिले हम जागरूक होकर अपने सामाजिक परिवेश को बदल लें तो ज्यादा बेहतर होगा। समाज द्वारा निर्मित नई व्यवस्था के विरुद्ध कोई सदस्य आचरण करे तो उसे प्रेमपूर्वक गांधीगिरी के द्वारा समाज के साथ चलने की प्रेरणा करें।

हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,

हर हाल में सूरत बदलनी चाहिए।

-21, सुभाष चौक, इन्दौर-02 (मध्यप्रदेश)

अच्छे काम का सम्मान

श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया

अमीरों के आंगन में जब कोई साज बजता है,
तो हर सुनने वालों को सुहाना लगता है।
यह दस्तूर है जमाने का, अमीरों को हाथों हाथ उठायेंगे।
देरी से आने के बाद भी जगह बनाकर आगे बैठायेंगे।
लोग उनकी हर बात पर हंसकर ताली बजायेंगे।
कुछ लोग आगे पीछे चलते हुए अपनी हाजरी दर्ज करायेंगे।
उनकी आंखों में चढ़ने के लिए बातें बनायेंगे।
क्योंकि उनको मालूम है कि वे ही तो कभी उनके काम आयेंगे।
यहाँ सम्मान व्यक्ति का नहीं उनकी दौलत का होता है,
क्योंकि चंदा चढ़ाने वालों में पहला नाम उनका होता है।
विद्या का दान विद्वान करते हैं, समय का दान समाज सेवक करता है,
धन का दान धनवान करता है,
इसीलिए देने वाले का हर जगह मान होता है।
जब बन गया यह दस्तूर दुनियां का, तब हम क्यों ऐतराज जतायेंगे।
यह सब खेल है पुनवानी का गुरु महाराज भी यही फरमायेंगे।
हम तो चाहते हैं अच्छे काम करने वाले को हर जगह सम्मान मिलना चाहिए।
उन्हीं के कारण तो इस समाज का काम चलता है,
उनकी अच्छी सोच से ही तो समाज आगे बढ़ता है।

-52, कालाथी पिल्लै स्ट्रीट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

नारी-स्तम्भ

सुख, शान्ति एवं उन्नति के आधार

श्री जशकरण डागा

सभी प्राणी जीवन में सुख, शान्ति एवं समुन्नति चाहते हैं। ज्ञानियों ने इस हेतु कुछ जीवन सूत्र बताए हैं, जो बड़े उपयोगी हैं। इन्हें अपनाकर प्रत्येक प्राणी अपने जीवन को सुखी व सार्थक कर सकता है। साधक के लिए आत्मा से परमात्मा बनने के लिए भी ये बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। इनका उल्लेख यहाँ संक्षेप में किया जा रहा है-

1. **विवेकशील बनें-** दुःख और अशान्ति का मुख्य हेतु है- राग, द्वेष एवं अज्ञान। इससे अप्रभावित रहने के लिए सदैव विवेकशील रहें। पर से हटकर स्व में रहने का अभ्यास करें। इस हेतु जीवन में प्रमाद-विषय-कषाय की प्रवृत्ति न हो, इसका पूरा विवेक व ध्यान सदा रखा जाये। जैसे कोई अपशब्द या कटुवचन कहे, तो उसे मोह एवं अज्ञान का परिणाम मानकर वक्ता को, दया का पात्र समझकर शान्त रहें। ज्ञानी विचारते हैं कि लोक असंख्यात शब्द वर्गणाओं से परिपूरित है, उसमें ये भी एक हैं। भला इनसे अरूपी आत्मा की क्या हानि हो सकती है? इस बारे में बुद्ध का कथानक बड़ा उपयोगी है। उन्हें एक बार भिक्षा जाते समय अनेक अपशब्द सुनने पड़े। तब उन्होंने यह कह कर कि अतिथि को दी जाने वाली वस्तुएँ यदि अतिथि न ले तो वह भेंटकर्त्ता की ही रहती हैं, अपशब्द बोलने वाले को शान्त कर दिया था। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु।' सभी प्राणियों में मेरी जैसी आत्मा है, ऐसा विचार कर हम सभी के प्रति सद्भावना और मैत्री भावना रखें।

   एक बार एक महात्मा नाव में बैठकर जा रहे थे। उनके साथ कुछ दुष्ट व्यक्ति भी बैठे हुए थे। प्रार्थना का समय होने से महात्मा ध्यानमग्न हो, प्रार्थना करने लगे। तभी उन दुष्टों ने उन्हें छेड़ने का अच्छा अवसर समझ, उनसे गाली गलोच की तथा पत्थर भी मारने लगे। उसी समय कोई देव प्रकट हुआ एवं महात्मा से बोला- "आपको ये लोग इतना कष्ट दे रहे हैं, आप कहें तो मैं नाव उलट दूँ", यह सुनकर दुर्व्यवहार करने वाले सभी व्यक्ति घबराकर महात्मा से क्षमायाचना करने लगे। महात्मा ने देव से कहा- "आप नाव नहीं, इनकी बुद्धि उलट दें।" यह सुन सभी विरोधी महात्मा के भक्त बन गए। हम भी विवेकशील रहें तो अपने विरोधियों को भी सुधार सकते हैं।

2. **भेदविज्ञानी बनें-** इस हेतु सर्वप्रथम दर्शन सप्तक (दर्शन मोहनीय- मिथ्यात्व, मिश्र

व समकित मोहनीय तथा अनंतानुबंधी (तीव्र चार कषाय) के त्याग का अभ्यास करें। जीव-अजीव, स्व-पर तथा ज्ञेय-ज्ञायक के संबंधों के ज्ञान को भली प्रकार समझें। आत्मा स्वयं ज्ञायक है, अन्य सब ज्ञेय हैं। "होता स्वयं जगत परिणाम" के अनुसार समग्र लोक का परिणमन स्वयमेव चालित है। निज के सुख-दुःख, हानि-लाभ, यश-अपयश, जन्म-मरण का कर्त्ता कोई अन्य नहीं है। पर में कर्त्तृत्व बुद्धि होना तथा पर का कर्त्ता भोक्ता अपने को मानना, यह जीव की बड़ी भूल है। इसे त्याग करना आवश्यक है। श्रीमद् रायचन्द्र ने कहा है-"छूटे देहाध्यास तो, नहीं कर्त्ता तू कर्म। नहीं भोक्ता तू तेहनो, एज धर्म नो मर्म।" पर में कर्तृत्व बुद्धि होना मिथ्या है, ऐसी दृढ़ मान्यता अंतरंग में होवे। संसार में माता-पिता, ज्ञाती-नाती, ये औपचारिक कुटुम्ब हैं। इन्द्रिय, देह, विषय-भोग आदि वैभाविक कुटुम्ब हैं। सच्चा कुटुम्ब है- आत्मा का ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि जो निज गुण है। इसे भलीभाँति जानकर, प्रथम के दो कुटुम्ब से राग बुद्धि त्यागे। जब तक पर में, इष्ट-अनिष्ट कर्तृत्व बुद्धि रहेगी, तब तक क्रोधादि की उत्पत्ति होती रहेगी। अतः पर में कर्तृत्व व भोग बुद्धि को मिथ्या समझकर त्याग करें।

3. **कर्म सिद्धान्त का ज्ञान व उस पर आस्था-** कर्म प्रकृतियों का, उनके बंध, उदय, निर्जरा, संक्रमण, उपशम, क्षय आदि को समझकर यह समझें कि वर्तमान में हो रहे सुख-दुःख, इष्ट-अनिष्ट आदि के मूलभूत कारण स्वयं द्वारा कृत कर्म ही हैं। जो भी अनुकूल प्रतिकूल घटित हो रहा है, उसमें किसी अन्य का कोई दोष नहीं है। उदित कर्मों को समभाव से भोगना है जिससे उनकी निर्जरा हो, आगे नये कर्मों का पुनः बंध न हो। यह तो मात्र उनके उदित होने में निमित्त होते हैं। इसे समझने हेतु यहाँ एक उपयोगी दृष्टान्त दिया जा रहा है। एक पोस्टमेन एक तार लेकर, एक सेठ के पास (जो सामायिक में थे) पहुँचा, जिसमें उनके माल का जहाज पुत्र सहित डूब जाने के समाचार थे। थोड़ी ही देर बाद दूसरा पोस्टमेन दूसरा तार लेकर आता है, जिसमें माल सहित पुत्र के सुरक्षित लौटने के समाचार थे। सेठजी दुखद समाचार लाने वाले पर नाराज और सुखद समाचार लाने वाले पोस्टमेन पर प्रसन्न नहीं हुए। शुभाशुभ समाचार पाकर भी वे सामायिक में ही रहे और सुख-दुःख का कारण स्वयं के शुभाशुभ कर्म को ही माना। पोस्टमेनों की तरह सुख-दुःख जिनके निमित्त से मिलते हैं, उन्हें माध्यम मानकर, अपने ही कर्मों को मूल कारण मानें तो भावों में विषमता नहीं आ पायेगी और सबके प्रति मैत्री व क्षमा का भाव बना रहेगा।

4. **निंदक, आलोचक को उपकारी मानें-** स्वयं के चेहरे के दाग स्वयं को नज़र नहीं

आते, किन्तु दर्पण में साफ दिख जाते हैं। निंदक व आलोचक को भी ऐसा दर्पण मानें, जो अपने दोष और बुराइयों को दिखाते हैं। अतः उन्हें अपना उपकारी मानें। कहा है-

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी बिन साबुन के, निर्मल करत स्वभाव।।

ईसाई धर्म में भी कहा है-"Love your enemies" अर्थात् अपने शत्रुओं से प्रेम करो।

5. **मौन साधना करे-** मौन ईश्वरीय भाषा है। यह वचनगुप्ति के अन्तर्गत आता है। वैसे तीनों योगों द्वारा पुद्गल व विभाव में प्रवृत्ति न करना, सही व पूर्ण मौन है। मौन में अनेक विशेषताएँ हैं। कहा है-

खामोशी में अमन है, शान्ति है और सफाई है।
यह वह दारू है, जो कितने ही मर्जों की दवाई है।।

मौन साधना का भूषण है। कहा है-

वचन रत्न मुख कोटडी, होठ कपाट जड़ाय।
बार-बार खोलत डरूँ, पर हाथ न लग जाय।।

मौन में अनेक विशेषताएँ हैं, जिनमें से कुछ मुख्य-मुख्य यहाँ दी जा रही हैं-

1. मौन समस्त साधनाओं की उर्वरा भूमि है, जिससे यह साधक का भूषण है। प्रायः सभी महापुरुष अपने जीवन में मौन को स्थान देते हैं।
2. मौन मोक्ष का अनुत्तर मार्ग है।
3. यह शान्ति व आनंद का अक्षय कोष होने से जो सुख मौन में है वह बोलने में नहीं है।
4. मौन वीतराग पद का द्योतक है और उसकी अनुभूति कराता है।
5. मौन विषय-कषाय को रोकने का प्रबल केन्द्रिय स्थान है।
6. मौन समुद्र के समान गंभीर है।
7. 'मोणेणं य मुणी होई' अनुसार मौन मुनित्व का द्योतक है।
8. मौन सन्मति का कारण व समाधि का गुरु मंत्र है।
9. मौन से आत्मज्योति, ध्यान, एकाग्रता, संवर एवं निर्जरा प्रकट होती है।
10. "मौन" का उलटा 'नमो' है, जो विनय का द्योतक है।
11. सभी तीर्थंकरों ने प्रथम मौन धारण कर अपूर्णता से पूर्णत्व को प्राप्त किया है।
12. मौन और एकान्त, आत्मा के सर्वोत्तम मित्र हैं।
13. मौन से वचन लब्धि होती है।

14. लड़ाई नहीं होती है।
15. शक्ति नहीं घटती है।
16. कर्मों का बंध नहीं होता या अल्प होता है।
17. मौन से कषाय नियंत्रित होता है। कभी क्रोध आ भी जाए तो वह भी जीभ का साथ न मिलने से झगड़े न होकर शांति बनी रहती है। झगड़े की जड़ जबान का क्रोध या अविवेक के साथ मिल जाना होता है। कहा है-

रहिमन जिह्वा बावरी, कह गई स्वर्ग पाताल।
आपहु तो अंदर गई, जूती खात कपाल।।

इस प्रकार मौन में उपर्युक्त विशेषताएँ होने से यह साधना का महत्त्वपूर्ण भाग है।

6. **सभी को आत्मसम समझो-** कहा है ''आत्मवत् सर्वभूतेषु, यः पश्यति स पण्डितः'। अर्थात् जो सभी आत्माओं को अपनी आत्मा के समान समझता है, वही ज्ञानी और पंडित है। ऐसा समझने पर फिर उसे, अपराधी पर भी क्रोध नहीं आयेगा। जैसे दांतों से जीभ कट जाती है, हाथ से आँख में लग जाती है, पैर से पैर के ठोकर लग जाती है, किन्तु फिर भी दांतों, हाथों या पैरों पर क्रोध नहीं आता है, क्योंकि उन सबमें अपनत्व की भावना होती है। वैसे ही अन्य में भी अपनी जैसी आत्मा है, उसे अंतर हृदय से समझकर अनुभूति कर अपनत्व रखें, तो उन पर ही नहीं प्राणिमात्र पर कभी क्रोध नहीं आयेगा। ध्यान रहे वैर से वैर कभी शान्त नहीं होता है। ज्ञानी कहते हैं-

''घृणा घृणा से, बैर बैर से, कभी शान्त हो सकते क्या?
कभी खून में सने वस्त्र को, खून ही से धो सकते क्या?''

बौद्ध धर्म में भी कहा है-''जो कोई दूसरों को दुःख देकर, सुख चाहता है, वह वैर की लपेट में पड़ा जीव, वैर से कभी नहीं छूटता।''

संसार के समस्त धर्मों, दर्शन व सम्प्रदायों के सिद्धान्तों व कथानकों का सार है- आत्मा के उत्कर्ष हेतु उसमें निर्मलता एवं सरलता का आधान हो। ऐसे व्यक्ति में निम्नांकित गुण प्रकट होते हैं-

''दया शान्ति समता क्षमा, सत्य त्याग वैराग।
होय मुमुक्षु अंतर हृदय यही सर्वथा जाग।।''

-आत्मसिद्धि-138 (श्रीमद् राजचन्द्र)

उपर्युक्त गुणों को प्रगट कर, विकसित करने के लिए इस जीव में वर्णित यह षट्पदी बहुत उपयोगी है, जिसे सभी आत्मार्थियों को अपनाकर, अपने जीवन को सुख-शांति पूर्ण बना सार्थक करना चाहिए।

-डागा सदन, संघपुरा, पो. टोंक-30400, (राज.)

समाज-चिन्तन

जैन मन्दिरों को शिक्षा का केन्द्र बनाइए

प्रो. (डॉ.) वीरसागर जैन

प्रत्येक जैनमन्दिर में जैन-ग्रन्थों के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए। प्राचीन परम्परा भी हमारी ऐसी ही रही है और आधुनिक युग की सख्त आवश्यकता भी ऐसी ही प्रतीत होती है। मुगलकाल में जब लगभग पूरे भारत में शिक्षा का भयंकर विनाश हो गया था, तब भी उत्तरभारत में आगरा, आमेर, सांगानेर आदि अनेक स्थानों पर जैनमन्दिर ही शिक्षा के केन्द्र बने हुये थे और उनमें नित्य विद्वानों द्वारा धर्म, दर्शन, अध्यात्म आदि की महत्त्वपूर्ण शिक्षा प्रदान की जाती थी। वर्तमान में उत्तरभारत में जीवित आगम-ज्ञान का श्रेय वस्तुतः इन्हीं जैनमन्दिरों के शिक्षा-केन्द्रों को जाता है। इन शिक्षा-केन्द्रों को उस समय 'सैली' या 'अध्यात्म सैली' के नाम से जाना जाता था।

जैनधर्म एक ज्ञान-ध्यान-प्रधान धर्म है। उसका दर्शनशास्त्र भी एकदम युक्तिसंगत और वैज्ञानिक है। जैनधर्म के अनुयायियों को तो उसका ज्ञान अवश्य ही होना चाहिए तथा यह कार्य तभी संभव है जब मन्दिर में जैनशास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन की सुन्दर व्यवस्था हो, वहाँ कोई एक नियमित शास्त्रसभा चलती हो।

अतः जैनमन्दिर के प्रबन्धकों/व्यवस्थापकों से मेरा विनम्र अनुरोध है कि यदि जैनधर्म को जीवित रखना है तो मन्दिर में एक स्वाध्याय-कक्ष की स्थापना अनिवार्यरूप से करनी चाहिए तथा इसमें कोई भी उपलब्ध विद्वान् नियमित रूप से जैनशास्त्रों का अध्यापन कराता रहे- ऐसी भी व्यवस्था अवश्य करनी चाहिए। इसी से हमारा आध्यात्मिक एवं सामाजिक दोनों प्रकार का संरक्षण, संवर्धन संभव होगा, अन्यथा हमारी सर्वप्रकार से महाहानि हो जाएगी।

महाकवि राजा भोज ने "भूपाल-चतुर्विंशतिका" में जिनमन्दिर को 'वाग्देवी-रति-केतनं' कहा है जिसका अर्थ है कि मन्दिर में नित्य ही माँ सरस्वती को क्रीड़ा करते रहना चाहिए। जिस मन्दिर में माँ सरस्वती क्रीड़ा न करे अर्थात् जिसमें जिनवाणी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था न हो, वह मन्दिर वस्तुतः पूर्ण मन्दिर नहीं माना जा सकता, अपूर्ण मन्दिर ही माना जाएगा। मन्दिर में अनिवार्य रूप से पाई जाने वाली वस्तुओं में जिनप्रतिमा के बाद दूसरे नंबर पर गिनी जानेवाली यदि कोई वस्तु है तो वह शास्त्रसभा ही है।

इसी प्रकार, शास्त्र-सभा के अतिरिक्त यदि सम्भव हो तो एक बालकक्षा/पाठशाला भी मन्दिर में अवश्य चलनी चाहिए। आजकल के बच्चे बड़े ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण के होते

हैं, उन्हें किसी अन्धविश्वास में नहीं रखा जा सकता। जैनधर्म बड़ा ही वैज्ञानिक धर्म है, उसका आचार व विचार- दोनों ही आज विज्ञान द्वारा पुष्ट हो रहे हैं। ऐसे में यदि हमारे बच्चे इनको समझ जाएं तो उनका स्वयं का भी कल्याण होगा और आगे चलकर जब वे समाज व राष्ट्र के कर्णधार बनेंगे तो अन्य भी हजारों-लाखों लोगों का कल्याण करेंगे।

यदि यह कक्षा दैनिक रूप से सम्भव नहीं हो तो साप्ताहिक रूप में ही सही, परन्तु चलनी अवश्य चाहिए। यदि अंग्रेजी माध्यम (English Medium) वाले पब्लिक स्कूलों के बच्चे हों तो उस बालकक्षा का नाम भी कुछ ऐसा ही रखा जा सकता है। जैसे-Sunday School for Jain Studies इससे उनमें विशेष आकर्षण उत्पन्न होगा।

जैन बच्चों को तो जैन संस्कृति का ज्ञान अवश्य ही होना चाहिए। अन्यथा आजकल टेलीविजन पर अनेक कार्यक्रमों में ईश्वर को कर्त्ता-धर्ता-हर्ता बताया जाता है और रामायण-महाभारत की कथा को विपरीत प्रकार से दिखाया जाता है, उसी पर हमारे ये बच्चे विश्वास कर लेंगे और बाद में इन्हें सत्य का ज्ञान-श्रद्धान कराना बहुत कठिन हो जाएगा।

बच्चों में स्मरण करने की भी अद्भुत क्षमता होती है। वे अपनी मानसिक एकाग्रता के कारण किसी भी पाठ, स्तुति या ग्रन्थ को शीघ्र कंठस्थ कर सकते हैं, जो उनके जीवन की एक बड़ी उपलब्धि सिद्ध हो सकती है। उसके माध्यम से वे जगत् में व्याप्त दुर्व्यसनों, अन्धविश्वासों और व्यर्थ के तनावों (Tensions) से अपने को बचाकर रख सकते हैं। अन्यथा आजकल लोगों का तन और मन-दोनों ही उनकी गलत जीवनशैली के कारण एकदम बरबाद हो रहा है। उनका पारिवारिक और सामाजिक जीवन भी बिखरता चला जा रहा है। वातावरण बड़ा विषाक्त है। ऐसे में यदि एक भी बच्चे को हम उन पाठशालाओं के माध्यम से विवेकी और सच्चरित्र बना सकें तो यह उस एक बच्चे का ही महान् उपकार नहीं होगा, अपितु अपने समाज और राष्ट्र की भी महती सेवा होगी।

-अध्यक्ष, जैनदर्शन विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली-110016

त्यागें सामूहिक रात्रिभोज

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की निरन्तर प्रेरणा से पोरवाल क्षेत्र सवाईमाधोपुर में जागृति आई है। क्षेत्र के अनेक ग्राम-नगरों के संघों ने संकल्प किया है कि वे विवाहादि समारोहों में सामूहिक रात्रिभोज का आयोजन नहीं करेंगे और न ही ऐसे समारोहों में भाग लेंगे। इस प्रकार के संकल्प की सभी शहरों में आवश्यकता है। जोधपुर जैसे शहर में अभी वीरपिता श्री इन्द्रचन्द जी गाँधी ने 2 मई, 2013 को पुत्री के विवाह एवं भोज का कार्यक्रम दिन में ही आयोजित किया। इस प्रकार की लहर सर्वत्र प्रसृत हो, यह असम्भव नहीं।**-सम्पादक**

A Report

Biodiversity Conservation and Animal Rights-Religious and Philosophical Perspectives

Sh. Atul K. Shah

A Workshop organised by Jaina Studies Centre, SOAS, University of London on March 21-22, 2012 on. 'Biodiversity Conservation and Animal Rights-Religious and Philosophical Perspectives' says a lot about the breadth and scope of this crucial and sensitive subject. Among all the religions, the Jaina tradition has had the most to say about this issue and has always had a deep reverence for animal life.

The keynote speaker was the author and film-maker Michael Tobias of the Dancing Star Foundation. His subject 'Mahavira, Don Quixote and a Brief History of Ecological Idealism' aimed to explore Jainism as profound philosophical framework for compassion towards animals. Tobias critiqued the notion of anthropocentrism, espousing the Jaina view that each living being is endowed with a soul and therefore sentient. Tobias argued that the philosophy requires each one of us to be an ambassador for non-violence. Evolution does not condemn us, but our choices do. "Parasparopagraho Jivānām"- all living beings are interdependent- is a profound scientific truth which humanity has failed to recognise for thousands of years, to its detriment.

The next morning, on 22, the conference was opened by Christopher Chapple (Loyola Marymount University). Chapple focussed on animal stories in the Indic traditions, drawing on four narratives from the *Panchatantra*, the *Jatakas* and the Jaina canons. These stories illustrate the great wisdom and spiritual life which animals have, and also concepts of family life and duty, and how going into the wilderness and monasticism help people reconnect with their own truth. These stories move the human soul, and cause people to change their own story.

Mark Bekoff (University of Colorado) explained how science has shown that animals experience a wide range of emotions and care very much about that happens to them. We need 'compassionate

conservation' and must recognise that animals are not property and we cannot and do not own them. Speciesism is a big problem. Bekoff called for a global moral imperative to 'do no harm'. How can humans say that they love animals except for the ones they eat? Humanity needs to move out of its comfort zone and expand its compassionate footprint.

Paul Waldau (Canisius College) argued that self-serving thinking and anthropocentrism are dangerous. We live in a multi-species world, and must face the limits of our own understanding about animals. It is very important to keep balance in Animal Studies, which is increasingly popular among students, with subjects such as anthrozoology, human-animal studies and animal humanities. It is an inter-disciplinary mega-field drawing from disciplines as diverse as history, religious studies, law, ecology, ethology and critical studies. Humans should recognise their 'animality', and need to speak very carefully about other living beings. He quoted Thomas Berry-'the world is not a collection of objects but a communion of subjects.' Humility, honesty and communality are the values through which we should animal welfare problems.

Lu Feng (Tsinghua University, Beijing) used cultural analysis to explain modern ecological damage. In Ancient China, there was great respect for scholars who were empathetic to nature, for example Confucious, who was pro-environment. However since the 1850s, modernity has been a strong ideology in China. Intellectuals stood firmly against ancient traditions and customs and were strongly in favour of modernity and its resulting exploitation of animals and the environment. This behaviour is clearly unsustainable. Lu Feng explained that recently there has been an official shift towards a more caring 'eco-civilisation' approach, but there is no consensus about what this means. He then proceeded to present his model of what eco-civilisation could look like in China.

Emma Tomalin (Leeds University) examined the impact of religious discourses about the environment, assessing whether these influences really contributed to sustainable development or whether they are over-romanticised. She found that there is a difference between eco-theology and lived practice. There is a sense of an elite bourgeois

environmentalism, and male domination of religious activity and discourse– a gender issue. Tomalin analysed the 'Sacred Groves' project as a way of engaging religious communities in nature preservation, and found that religious values in themselves did not influence the project. Instead, religion was being used for scientific conservation. Tomalin felt that religion has a role to play in conservation, but should not be taken over by outsiders imposing their own agendas. Careful engagement with local communities is recommended.

Sarra Tlili (University of Florida) analysed Muslim attitudes toward animals in the past and the present. She found that, in general, traditionally compassionate and caring attitudes have been declining in recent centuries. This change is explained by the rise of modernity and the shift in human ethics. Colonisation suppressed old traditions. There was also an accompanying shift in the pre-modern literature: humans were no longer situated within the animal world. In Islamic doctrine there was a perception that 'eating animals for food is permitted by God and Humans are on top of nature and assigned to care for it.' These attitudes broke the traditional kinship with non-human animals which was originally emphasised by the Shafii School of Law.

Tlili further argued that in future, there should be more engagement of scholars with animal welfare issues, and more exposure to Islamic scriptures about animals. Religious scholars have a lot of influence on the community, and engaging them in deeper discussions about animals might result in more creative and sensitive approaches to traditional texts in the search for solutions to modern challenges. Animals would certainly benefit from reestablishment of governmental and social institutions to oversee their treatment.

Andrew Linzey (Oxford Centre for Animal Ethics) analysed the role of Christianity in animal welfare. The dominant voices have been mainly negative. For example, Aquinas thought that animals were devoid of reason. Animals did not have rational souls and were not sentient, and therefore did not have any rights. They had no status and the language used described them as beasts, brutes and dumb animals. The feeling was that only humans mattered; the human species was

deified. However, careful study of *Genesis* shows that dominion means that we are divinely commissioned to look after the world as God intended, including care of animals. Linzey argued that we need to re-envision ourselves not as the master species but as the servant species. He stated that 'all sentient creatures can be seen to have rights because their Creator has rights to see what is created is treated with respect.' Maybe there should be a Jesus ethics, based on a paradigm of inclusive moral generosity towards those who are poor, marginalised and vulnerable (which include animals). The implications of this theology are living free of violence and cruelty, vegetarianism, and intensive farming.

Stephen R.L. Clark's (University of Liverpool) presentation 'Imaging the divine: how is humanity the reason for creation, and what is humanity?' addressed the problem of the impact of Christianity on human-animal relations, and reflected also on innate human limitations in a somewhat pessimistic philosophical note on the possible impact of the animal protection movement.

Michael Zimmerman (University of Hamburg) focussed on Buddhism, and explained that in most of Asia, Buddhists are fond of eating meat, and Buddhist organisations do very little to protect animals from cruel stock breeding. They also do not object to murderous long distance transportation of livestock, or slaughterhouses. The preservation of biodiversity has hardly entered the agenda of Buddhist organisations even though philosophically, animals are equal to humans. The golden rule is that one should not treat other sentient beings in a way that one would not like to be treated. In Buddhist philosophy, to be born as an animal is a karmic punishment- there is no practice of dharma in the animal kingdom, no righteousness. Monks are allowed to eat meat as long as an animal has not been killed specifically for them. He showed pictures of a sacred ceremony in Thailand where caught fish were released back into the water- and yet in the same community, the menu for lunch offered to monks included meat. Killing is a negatively charged karmic act, but consumption of meat has no karmic effect- these were the serious contradictions in the theology and

practice.

In 'Rethinking Animism- The Jaina Doctrine of Non-Violence from the Perspective of Comparative Ethics', Peter Flügel (SOAS) elucidated the Jaina theory, and its dualist distinction between *jiva* and *ajiva*- soul and non-soul, where plants, animals, humans and the five elements are classed as living, endowed with consciousness and will-power. In Flügel's view, the Jaina approach to the environment is self-interested. Non-violence and the protection of life is necessary for individual salvation, because violence to any living being attracts karmic particles, with adverse consequences for the future of the soul. Classical Jainism is not interested in the protection of the environment *per se*, he argued. Flügel then went on to explore the extent to which the Jaina philosophy of ahimsa could serve as the foundation for a universal ethic for animal welfare and protection.

At the end of the presentations there was a panel discussion which explored issues of environmental and social justice, activism using social media, and other practical methods of improving animal welfare. It was argued that humanity has become far too comfortable in recent decades, and we are now about to return to the hard life of the past, as the antibiotic war against bacteria is failing, and the ecosystem is being paralysed.

Overall, it was a very good conference with a wide range of speakers and a breadth of topics. Non-human animals were not there to speak for themselves, but the proxies did try to capture their feelings and emotions by centring their thinking away from the traditional anthropocentric bias and instead drawing on traditional wisdoms. This task is never easy as we are restricted by human language and frames of thinking and investigation. Given the huge plurality of views and research, the conference did not reach any conclusion about animal rights. But it definitely heightened the awareness and sensitivity to various philosophical and religious perspectives. Irrespective of debates and dialogues, the fundamental fact is that animals should not be made to suffer.

स्वास्थ्य-विज्ञान

स्वर का हमारे जीवन पर प्रभाव (2)

डॉ. चंचलमल चोरडिया

(अप्रेल अंक से आगे)

स्वर योग के अभ्यास का क्रम

अभ्यास द्वारा चन्द्र एवं सूर्य स्वर को आवश्यकतानुसार चलाया भी जा सकता है। अभ्यास का तात्पर्य चन्द्र स्वर को बदल कर तुरन्त सूर्य स्वर चलाना एवं इसी भांति सूर्य स्वर चलता हो तो उसे बदलकर तुरन्त चन्द्र स्वर सक्रिय करना। इस दुनिया में सभी स्थानों पर दिन-रात, सर्दी-गर्मी, खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार एवं बाह्य वातावरण प्रायः एक जैसा नहीं होता। अतः स्वर संचालन का भी समान रूप से एकसा नियम प्रतिपादित नहीं किया जा सकता। कार्य की आवश्यकता एवं वातावरण के अनुरूप संतुलित, नियन्त्रित, नियमित दोनों नासाग्र द्वारा स्वर संचालन से हम सुखी, रोग मुक्त, तनाव मुक्त जीवन जी सकते हैं। प्रकृति ने हमें सुखी एवं रोग मुक्त जीवन जीने के सारे साधन उपलब्ध करा रखे हैं, परन्तु हमें उसकी भाषा को समझ शारीरिक एवं मानसिक प्रवृत्तियाँ करनी होंगी, जिससे हम अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग कर सकें एवं हमें अपने कार्य में सफलता मिले।

यदि हमारा जीवन प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों के अनुसार संचालित होता है तो स्वर स्वतः सही चलने लगता है। अभ्यास द्वारा जब स्वर के प्रवाह की ठीक जानकारी हो जाये, तो उसके पश्चात् निद्रा त्यागने से लगाकर रात्रि में शयन पूर्व तक स्वर प्रवाह की अवधि का चंद दिनों का चार्ट बनाना चाहिये, जिससे हम यह जान सकें कि हमारा कौनसा स्वर कब और कितना चलता है। मौसम एवं वातावरण के अनुसार उसमें क्या परिवर्तन होता है। क्योंकि चन्द्रमा अपनी कलाओं के अनुसार रात्रि में सदैव एकसा प्रकाश नहीं फेंकता और सूर्य भी दक्षिणायन से उत्तरायण अथवा उत्तरायण से दक्षिणायन की ओर आता-जाता रहता है। इस अभ्यास से स्वर योग के मुख्य नियम एवं शिव स्वरोदय में वर्णित विभिन्न अनुभूत तथ्यों की सच्चाई सरलता से समझ में आने लगती है।

स्वरों से रोगोपचार

स्वर-चिकित्सा सहज, सरल, सस्ती, पूर्णतः निर्दोष, सर्वत्र उपलब्ध, सार्वकालिक, पूर्णतः वैज्ञानिक, स्वावलंबी, अहिंसक, बिना किसी दवा एवं डॉक्टर के स्वस्थ बनाने

वाली, प्रभावशाली चिकित्सा पद्धति है, जिससे बिना किसी दुष्प्रभाव के न केवल अच्छा स्वास्थ्य, अपितु जीवन की विविध समस्याओं का समाधान प्राप्त किया जा सकता है। रोगों के उपचार हेतु स्वरयोग से, औषधि एवं अन्य चिकित्सा पद्धतियों से प्रायः शीघ्र अच्छे परिणाम मिलते हैं। स्वर की प्रक्रिया बिगड़ने से भी रोग हो जाते हैं। अतः स्वरों का यथा संभव शोधन करते रहना चाहिए।

1. **गर्मी सम्बन्धी रोग**– मानसिक अशान्ति, आवेग, उत्तेजना, गर्मी, लू, प्यास, बुखार, पित्त सम्बन्धी रोगों, उच्च रक्तचाप में चन्द्र स्वर चलाने से शरीर में शीतलता बढ़ती है, जिससे गर्मी से उत्पन्न असंतुलन अर्थात् रोग दूर हो जाते हैं।
2. **कफ सम्बन्धी रोग**– सर्दी, जुकाम, खांसी, दमा आदि कफ सम्बन्धी रोगों, निम्न रक्तचाप में सूर्य स्वर अधिकाधिक चलाने से शरीर में गर्मी बढ़ती है। सर्दी का प्रभाव दूर होता है। अतः ठण्डक संबंधी रोग ठीक होते हैं।
3. **आकस्मिक रोग**– जब रोग का कारण समझ में न आये और रोग की असहनीय स्थिति हो, ऐसे समय रोग का उपद्रव होते ही जो स्वर चल रहा है उसको बन्द कर विपरीत स्वर चलाने से तुरन्त राहत मिलती है। शरीर में विजातीय तत्त्वों के जमा हो जाने एवं बराबर निष्कासन न होने से प्राण ऊर्जा के प्रवाह में अवरोध उत्पन्न होने लगता है। परिणामस्वरूप प्रभावित अंग, उपांग, तंत्र अपनी पूर्ण क्षमता से कार्य नहीं कर पाते, जिससे शरीर रोग ग्रस्त होने लगता है। स्वर संतुलन से प्राण ऊर्जा का प्रवाह पुनः बराबर होने से, विजातीय तत्त्व दूर होने लगते हैं तथा व्यक्ति स्वस्थ होने लगता है। असाध्य रोग ठीक होने लगते हैं एवं कभी-कभी शल्य चिकित्सा की भी आवश्यकता नहीं रहती। विजातीय तत्त्वों के जमा होने से जो गांठ बनती है वह बिखरने लगती है। निष्क्रिय अंगों में प्राण ऊर्जा का प्रवाह आवश्यकतानुसार होने से निष्क्रिय अंग पुनः सक्रिय होने लगते हैं। अतः सभी प्रकार के असाध्य एवं संक्रामक रोग स्वर-संतुलन द्वारा ठीक हो सकते हैं।

चन्द्र और सूर्य स्वर के असन्तुलन से सुस्ती, अनिद्रा, थकावट, चिंता आदि सभी रोगों का जन्म होता है। अतः दोनों का संतुलन और सामञ्जस्य स्वस्थता हेतु अनिवार्य होता है। लम्बे समय तक रात्रि में लगातार चन्द्र स्वर चलना और दिन में सूर्य स्वर चलना, रोगी के खराब स्वास्थ्य का सूचक होता है। निरन्तर चलते हुए सूर्य या चन्द्र स्वर के बदलने के सारे उपाय करने पर भी यदि स्वर न बदले तो रोग असाध्य होता है तथा उस व्यक्ति की मृत्यु समीप होती है। दोनों स्वरों के प्रवाह की अवधि में जितना ज्यादा असंतुलन होता है उतना ही व्यक्ति अस्वस्थ अथवा रोगी होता है। संक्रामक और असाध्य रोगों में यह अन्तर काफी

बढ़ जाता है। लम्बे समय तक एक ही स्वर चलने पर व्यक्ति की मृत्यु शीघ्र होने की संभावना रहती है। अत: सजगता पूर्वक स्वर चलने की अवधि को समान कर असाध्य एवं संक्रामक रोगों से मुक्ति पाई जा सकती है।

असाध्य रोगियों के उपचार में स्वर-परिवर्तन के साथ-साथ सामूहिक ओम् अथवा प्रभावशाली किसी मंत्र का जाप करने से अच्छे परिणाम आते हैं। जाप की तरंगों के प्रवाह से न केवल आसपास का वातावरण ही शुद्ध होता है, अपितु रोगी के स्वर का भी शोधन होने लगता है, जिससे उसके स्वास्थ्य में लाभ होने लगता है।

आसन, प्राणायाम, नमस्कार, स्वाध्याय, प्रार्थना, तप-जप, सकारात्मक सोच, ध्यान जैसी सम्यक् अनुप्रेक्षा एवं कषाय को घटाने वाली प्रत्येक प्रवृत्ति से शरीर एवं मन का आन्तरिक शोधन तथा तनाव कम होता है, आभा मण्डल शुद्ध होता है, श्वास की गति मंद होती है, स्वर संतुलित होने लगता है। अत: व्यक्ति का स्वास्थ्य अपेक्षाकृत अच्छा रहता है। जैन साधक एवं श्रावक द्वारा प्रात: एवं सायंकालीन विधिपूर्वक प्रतिक्रमण करने से व्यक्ति में अपने दोषों का निरीक्षण होता है, जिससे मानसिक तनाव दूर होता है। साथ ही शरीर के विभिन्न आसनों, मुद्राओं एवं वंदना-ध्यान करने से स्वर नियमित चलने लगते हैं जिससे प्रत्येक कार्य व्यवस्थित होने की संभावना बढ़ जाती है।

कौनसा स्वर कब लाभप्रद अथवा हानिकारक?

शिव स्वरोदय में कौनसा कार्य कब और किस स्वर में करना चाहिए, ताकि प्रतिकूलताओं से यथासंभव बचा जा सके एवं अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग किया जा सके। उसी के अनुसार जनसाधारण के लिए उपयोगी मार्गदर्शक जानकारियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं।

चन्द्र स्वर के कार्य:- इसमें शारीरिक ताकत की अधिक आवश्यकता नहीं होती। ऐसे मानसिक शांति से जुड़े सारे कार्य चन्द्र स्वर में करने चाहिए, जैसे:- चिन्तन, मनन, प्रार्थना, जप, स्वाध्याय आदि कार्य। शुभ एवं स्थायी कार्य जैसे गृह-प्रवेश, विवाह, दीक्षा, नवीन आभूषण, दोस्ती करना, दवा लेना, उपचार करना इत्यादि कार्यों को चन्द्र स्वर में करने से इच्छित फल-प्राप्ति की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। तरल पदार्थो का सेवन एवं मूत्र-त्याग भी चन्द्र स्वर में करना चाहिए। परन्तु गर्म पेय का सेवन सूर्य स्वर में ही करना चाहिए, अन्यथा खांसी, सिरदर्द एवं जुकाम हो सकता है।

सूर्य स्वर में करने योग्य कार्य:- जिन कार्यों के लिए शारीरिक ऊर्जा एवं मानसिक दृढ़ता की विशेष आवश्यकता हो, ऐसे कठिन एवं श्रम साध्य कार्य, व्यायाम, आवेग, जोश एवं उत्तेजनायुक्त कार्यो को सूर्य स्वर में करने से अपेक्षित परिणाम मिलने की पूर्ण सम्भावना

रहती है। सूर्य स्वर में मल त्याग करने से पेट साफ रहता है। उदर रोग की संभावनाएँ अपेक्षाकृत कम रहती हैं। भोजन करते समय एवं उसके पश्चात् लगभग एक घण्टा सूर्य स्वर चलाने से पाचन अच्छा होता है।

सुषुम्ना स्वर के कार्य:- सुषुम्ना स्वर में किया गया चिन्तन, विचार, भावना और अभिव्यक्त की हुई अच्छी या बुरी भविष्यवाणी प्राय: शत-प्रतिशत सत्य साबित होती है। अत: उस समय हमेशा सकारात्मक सोच एवं सर्वहितकारी मंगल भावना का ही चिन्तन करना चाहिये। उस समय का उपयोग प्रभु स्मरण, आत्मचिन्तन, स्वनिरीक्षण एवं शुभ संकल्प, व्रत, प्रत्याख्यान लेने हेतु श्रेष्ठ होता है।

1. घर से बाहर जाते समय जो स्वर चल रहा हो, उसी तरफ के पैर को पहले जमीन पर रखना चाहिए। परन्तु बाहर यात्रा पर जाते समय चन्द्र स्वर में ही यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए एवं सूर्य स्वर में घर में प्रवेश करना श्रेयस्कर होता है।
2. प्रात:काल निद्रा त्यागने के पश्चात् जो स्वर चलता है उस ओर के हाथ की हथेली से चेहरे के उसी तरफ स्पर्श कर शय्या से उठते समय जमीन पर उसी तरफ का पांव रख कर चलने से वह पूरा दिन प्राय: मंगलमय होता है।
3. शुक्ल पक्ष की द्वितीया के दिन सूर्यास्त के समय यदि चन्द्र स्वर सहजता से चलता हो तो वह पक्ष उस व्यक्ति के लिए अत्यन्त कल्याणकारी होता है। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को सूर्योदय के समय सहज रूप से सूर्य स्वर यदि चलता है तो वह व्यक्ति के अच्छे स्वास्थ्य का सूचक होता है, जबकि शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को सूर्योदय के समय सूर्य स्वर चलता हो तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य प्राय: अच्छा नहीं होता।
4. चन्द्र स्वर सभी शुभ, स्थायी कार्यो के लिए श्रेष्ठ होता है। जबकि सभी क्रूर, साहसी एवं ताकत वाले कार्य सूर्य स्वर में शीघ्र फलदायक होते हैं।
5. चन्द्र और सूर्य स्वरों का सही अभ्यास करने वाले साधक को भविष्य ज्ञान की अनुभूति होने लगती है। क्रोध एवं काम को प्रेम एवं ब्रह्मचर्य में रूपान्तरण करने की क्षमता प्राप्त होने लगती है। भविष्य में होने वाली घटनाओं का उसे पूर्वाभ्यास होने लगता है।
6. यदि किसी व्यक्ति का अकेला चन्द्र स्वर दिन रात चलता है तो उस व्यक्ति की मृत्यु अधिकतम तीन साल में संभावित होती है।
7. यदि किसी व्यक्ति का दिन भर सूर्य स्वर और रातभर चन्द्र स्वर चले तो उसकी मृत्यु लगभग छ: मास के अन्दर संभावित होती है।
8. यदि महीने भर तक दिन-रात मात्र सूर्य स्वर प्रवाहित हो तो मात्र तीन मास में व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है।

9. यदि सुषुम्ना स्वर सहज रूप से दो घण्टे तक लगातार चले तो व्यक्ति की मृत्यु 24 घण्टे के अन्दर हो सकती है।

स्वर-योग जीवन जीने की कला है। स्वर से ही राशि-नक्षत्रों एवं तिथि-लगन, मुहूर्त का संबंध होता है। अनुभवी स्वर योगी बिना ज्योतिष शास्त्र के किसी भी व्यक्ति का भविष्य में संभावित शुभाशुभ बता सकता है। स्वयं के रोग के साथ-साथ दूसरे रोगी का भी उपचार कर सकता है। भूत-प्रेत बाधाओं का निवारण भी सरलता से कर सकता है। आधुनिक वैज्ञानिकों से अपेक्षा है कि स्वर योग पर शोध करें, इस हेतु आवश्यक स्वर मापक यंत्रों का निर्माण करें, ताकि जनसाधारण आत्म-विश्वासपूर्वक स्वर ज्ञान का उपयोग कर अपने जीवन को सुखी बना सकें।

जिज्ञासु व्यक्ति अनुभवी स्वर-साधक से स्वरोदय विज्ञान का अवश्य गहन अध्ययन करें। क्योंकि स्वर विज्ञान से न केवल रोगों से ही बचा जा सकता है, अपितु प्रकृति के अदृश्य रहस्यों का भी पता लगाया जा सकता है। मानव देह में स्वरोदय एक ऐसी आश्चर्यजनक, सरल, स्वावलम्बी, प्रभावशाली, बिना किसी खर्च वाली चमत्कारी विद्या है, जिसका ज्ञान और सम्यक् पालना होने पर किसी भी कार्य में असफलता की प्रायः संभावना नहीं रहती। स्वर विज्ञान के अनुसार प्रवृत्ति करने से साक्षात्कार में सफलता, भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का पूर्वानुमान सम्भव है तथा सामने वाले व्यक्ति के अन्तरभावों को सहजता से समझा जा सकता है। जिससे प्रतिदिन उपस्थित होने वाली प्रतिकूल परिस्थितियों से सहज बचा जा सकता है। अज्ञानवश स्वरोदय की जानकारी के अभाव से ही हम हमारी क्षमताओं से अनभिज्ञ होते हैं, रोगी बनते हैं तथा अपने कार्यों में असफल होते हैं। स्वरोदय विज्ञान प्रत्यक्ष फलदायक है, जिसको ठीक-ठीक लिपिबद्ध करना संभव नहीं। केवल जनसाधारण के उपयोग की कुछ मुख्य सैद्धान्तिक बातों की आंशिक और संक्षिप्त जानकारी ही यहां दी गई है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोनः 0291-2621454, 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com,

Website: www.chordiahealthzone.com, www.chordiahealthzone.in

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के अप्रेल एवं मई-2013 अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर 15 जून 2013 तक श्री चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं पते सहित सीधे प्रेषित कर सकते

हैं। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

1. शरीर की प्रमुख नाड़ियाँ कितनी हैं? स्वरों के साथ सम्बन्ध बताइए।
2. स्वर परिवर्तन करना कब उचित है तथा उसे किस प्रकार परिवर्तित किया जा सकता है?
3. रेचक, पूरक और कुम्भक किसे कहते हैं?
4. भोजन करने के बाद कौनसा स्वर स्वास्थ्य के लिए अनुकूल होता है और क्यों?
5. तेज बुखार से पीड़ित व्यक्ति का चन्द्र स्वर चल रहा है, तो स्वर के सम्बन्ध में आप उसे क्या सुझाव देंगे?
6. स्वर-विज्ञान हमारे जीवन में क्यों उपयोगी है?
7. आपका सुषुम्ना स्वर चल रहा है तो उस समय आपको क्या-क्या कार्य करने में शीघ्र सफलता मिल सकती है?

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.

विजेता

क्या चतुर्दश पूर्व का
अध्येता केवली बनेगा?
जरूरी नहीं भजना है।
क्या राग-द्वेष का
पूर्ण विजेता केवली बनेगा?
जरूर बनेगा नियमा है।

सत्य

सत्य को सत्य
समझकर
सत्य के प्रति सर्वतो
भावेन समर्पण से
साधक सिद्धि को
प्राप्त कर लेता है।

डाँट

जो सहता है
बड़ों की डाँट,
उसके खुल जाते हैं
उन्नति के
कपाट (द्वार)।

खामोश

मत देखो
किसी के
दोष
दिख भी जाय
तो रहो
खामोश।

प्रज्ञा

कर्म गति
अति महीन है
फिर भी प्रज्ञा
से पकड़ने में
साधक
स्वाधीन है।

अध्यात्म

मत सुनो,
मत करो किसी की
निन्दा,
वरना नहीं रहेगा
तुम्हारा
अध्यात्म जिन्दा।

-संकलित

परिचर्चा-स्तम्भ

संवाद

पूर्व में पूछे गए प्रश्न का एक उत्तर आलेख रूप में प्राप्त हुआ, जिसका अंश प्रकाशित है-

प्रश्न 2. वर-वधू में परस्पर विश्वास कैसे उत्पन्न हो? उनमें विश्वास टूटने के क्या-क्या कारण हैं? उनका निराकरण किस प्रकार किया जा सकता है?

उत्तर- भारतीय संस्कृति में संबंधों की पवित्रता अनादिकाल से रही है, जिसमें पति-पत्नी, भाई-बहन, सास-बहू आदि के सम्बन्ध अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इन संबंधों की पवित्रता एक-दूसरे के प्रति परस्पर प्रेम, स्नेह एवं आत्मीयता के आधार पर टिकी है। उन्हीं संबंधों में एक संबंध पति एवं पत्नी का रहा है। जीवन रथ के दो पहियों के समान यह सम्बन्ध एक दूसरे को निभते-निभाते हुए आगे बढ़ता है। यह संबंध इतना घनिष्ठ होता है कि संस्कृत में दोनों के लिए एक ही शब्द 'दम्पती' का प्रयोग किया गया है। जिस नारी का पति सुखदायी नहीं होता, उसका जीवन भारभूत हो जाता है। भोजन, वस्त्र, आमोद-प्रमोद के समस्त साधन विद्यमान होने पर भी पति के सकारात्मक रुख के अभाव में सभी साधन दुःख रूप बन जाते हैं। इसी तरह पति का सुख पत्नी पर निर्भर है। पति कितना भी सम्पन्न एवं प्रभावशाली क्यों न हो, परन्तु घर में नारी कलह पैदा करने वाली, रात-दिन नई-नई परेशानियाँ खड़ी करने वाली हो, तो दोनों में मनमुटाव उत्पन्न हो जाता है। इसके विपरीत बड़ी से बड़ी समस्या या कोई प्रतिकूल परिस्थिति पैदा होने पर पत्नी पति को सांत्वना देती है, धैर्य बंधाती है, सम्बल देती है, स्नेहपूर्ण विश्वास पैदा करती है तो पति के लिए घोर से घोर विपत्ति या बड़ा से बड़ा संकट भी तुच्छ प्रतीत होने लगता है।

पति पत्नी का प्राण है तो पत्नी पति की शक्ति है। पति-पत्नी का सहज कर्त्तव्य हो जाता है कि वे एक-दूसरे के साथ सहयोग करें, एक-दूसरे के प्रति प्रामाणिक होकर रहें, एक-दूसरे पर खूब आत्मीयता हो। पति का कर्तव्य है कि वह पत्नी को धर्म की ओर आगे बढ़ावे, पत्नी का दायित्व है कि वह अपने पति को धर्म की ओर प्रेरित करे। पति-पत्नी अपने जीवन में धर्म को धारण कर लें तो काफी समस्याओं का सहज ही समाधान हो जाता है। पत्नी चाहे तो घर को स्वर्ग बना सकती है और वह चाहे तो घर को नरक के समान भी बना सकती है। हमारे ऋषि-मुनियों ने परिवार को स्वर्गीय सुख प्रदान करने के कुछ ऐसे उपाय बताएँ हैं, जिन्हें अपने जीवन में अपनाने की आवश्यकता है। पति के सामने जब कोई विकट समस्या आ जाए तो उस समय पत्नी का कर्तव्य है कि वह बहुत अच्छे ढंग से सच्चे और अच्छे मित्र की तरह परामर्श दे, उचित सलाह देकर समस्या का समाधान करने में मंत्री का काम करे। पति-सेवा का कार्य होने पर समर्पण का परिचय दे। सेवा के प्रसंग कर करोड़पति बाप की लड़की होने का

गर्व नहीं करे। इसी तरह पति के भोजन के समय माता की तरह अत्यन्त वात्सल्यभाव पूर्वक भोजन करावे। भोजन के साथ घर का कलह नहीं परोसे, उस समय तो हृदय की सद्भावना का अमृत घोल कर स्नेहपूर्वक भोजन करावे। आदर्श नारी अपने पति को भोजन स्वयं परोसे एवं उनकी प्रकृति एवं स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखते हुए भोजन की विधि सम्पन्न करावे।

आदर्श नारी का एक मौलिक गुण है- क्षमाशीलता या सहिष्णुता।परिवार में सभी सदस्य भिन्न-भिन्न प्रकृति के होते हैं। उन सभी में क्षमा के इस मौलिक गुण से परिवार में शान्ति का संचार करके माहौल को वह आनन्द से सराबोर कर सकती है। पति का भी कर्तव्य होता है कि जिस पिता ने अपने कलेजे के टुकड़े को सारी जिंदगी के लिए समर्पित किया है उसको हर तरह से सुख प्रदान करे। उसके सुख-दुःख का सहभागी बनना, उसकी भावना एवं कामनाओं का खयाल रखना आवश्यक है ताकि पत्नी को अपने माता एवं पिता का अभाव महसूस न हो। हर पति की ऐसी शुभ सोच होनी चाहिए कि वह कंकु एवं कन्या से संतुष्टि का अनुभव करे। पत्नी पर कभी व्यंग्य नहीं करे कि 'तुम्हारे बाप ने मुझे क्या दिया?' इस प्रकार की अभिव्यक्ति करने वाला सच्चा पति नहीं कहा जा सकता है। परिवार की शान्ति के लिए आदर्श पति-पत्नी का कर्तव्य पालन करने वाला यत्र-तत्र-सर्वत्र सुखानुभूति करता है। डॉ. जेम्स कहते हैं-

"पति-पत्नी का संबंध स्नेह, समर्पण व त्याग का सम्बन्ध है। प्रेम और विश्वास की नींव पर टिका यह सम्बन्ध समर्पण और सहयोग से आजीवन दृढ़ रहता है। कभी प्यार की सरस फुहारें पड़ती है तो कभी धूल भरी आंधियाँ चलती हैं, कभी शीतल पवन बहती है तो कभी राह कंटीली झाड़ियों से अवरुद्ध हो जाती है, किन्तु बुरे वक्त को सहन कर हर हाल में मुस्करा कर जीना ही जीवन है। वास्तव में शादी के बाद का पहला साल गीले सीमेंट से बने फर्श की तरह होता है। जिस पर पड़े निशान इतने गहरे होते हैं कि मुश्किल से मिट पाते हैं।"

हम कई मामलों में देखते, सुनते व पढ़ते हैं कि थोड़ी-सी गलती एवं अहं की वजह से जल्दबाजी में कई परिवार टूटे हैं। उनको बाद में पश्चात्ताप के अलावा कुछ भी नहीं मिला है। अतः प्रत्येक दंपती को बहुत ही सूझबूझ से अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह करना चाहिए। कहीं भी कुछ टूटने की आंशका आने लगे तो वह अपने को संभाले व सुखद भविष्य के लिए कुछ त्यागने को तत्पर रहे। त्याग की भावना ही सफल दाम्पत्य जीवन की महती आवश्यकता है। घर एक मंदिर है, मंदिर की विशेषता होती है कि वहाँ शान्ति व प्रेम का वातावरण होता है।

सुखी दाम्पत्य जीवन हेतु ध्यान रखने योग्य बातें-

1. अपनी बात मनवाने के लिए किसी बात को प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाएँ। जीवन में समझौतावादी नजरिया रखें। एक-दूसरे के प्रति समर्पण की भावना रखें।

2. घरेलू कार्य के लिए केवल महिलाएँ ही जिम्मेदार नहीं हैं। नवजात शिशु है, तो महिला के कार्य में पुरुष भी सहयोग करें। यहाँ सहयोग का तात्पर्य यह नहीं कि आप घरेलू कार्य करें वरन् अपना काम स्वयं करें। हर कार्य के लिए पत्नी पर निर्भर नहीं रहें। एक-दूसरे की चिंता करें।
3. पति-पत्नी अपने विवाह पूर्व के संबंधों की जानकारी एक-दूसरे को न दें।
4. पत्नी अपने पति के परिवारजनों से बहुत ही विनम्रता व आदरपूर्वक रहे। घर के सभी सदस्यों के साथ समान व्यवहार करे। ऐसा न हो कि सिर्फ पति व बच्चों के प्रति ही पूर्ण समर्पित रहे।
5. आधुनिक समय में आधुनिकता के नाम पर सामूहिक पार्टियाँ आयोजित की जाती हैं। इस दौरान भी कई बार परिचय मित्रता में व मित्रता दूसरे संबंधों में बदल जाती है। इस प्रकार की पार्टियों व आयोजनों से परे रहना चाहिए।
6. पति-पत्नी दोनों अपने कार्यालयों में महिला व पुरुष सहकर्मी से मर्यादित तथा संयमित भाषा में ही बातचीत करें। ज्यादा हँसी-मजाक संदेह को जन्म देते हैं।
7. अपने जीवनसाथी की आलोचना किसी अन्य व्यक्ति से नहीं करनी चाहिए अन्यथा दूसरे व्यक्ति उसका अनुचित लाभ उठा सकते हैं। जो भी बात हो उसका निराकरण परस्पर विचार-विमर्श से ही करें।
8. आधुनिक औद्योगिक जीवन की भागदौड़ में आज व्यक्ति के पास समय नहीं है। पति-पत्नी समय निकालकर बातचीत करें। सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए अंग्रेजी के अक्षर 'टी' से शुरू होने वाले शब्द सुखी दाम्पत्य-जीवन के आधार स्तम्भ हो सकते है-

   Trust - विश्वास Time - समय Talk - बातचीत

इन पहियों पर अपने जीवन की गाड़ी को चलाइए। बिना किसी गतिरोध व दुर्घटना की आशंका के साथ आपकी गाड़ी अविराम गतिशील रहेगी।

दाम्पत्य जीवन को सुन्दर बनाने के कुछ टिप्स-

1. कुछ-कुछ रचनात्मक कार्य करते रहें।
2. हमेशा सकारात्मक सोचें।
3. एक दूसरे को प्रोत्साहित करते रहें।
4. एक दूसरे की बात पर ध्यान दें।
5. बिना शर्त की माफी व स्नेह दें।
6. हमेशा प्रसन्नचित्त रहें।
7. किसी अन्य के सामने एक दूसरे को नीचा नहीं दिखाएँ, न ही आलोचना करें।

-आभा जैन, 44, बन्दा मार्ग, भवानीमण्डी (राज.) (प्राप्त लेख के आधार पर)

दीक्षा अर्द्धशती वर्ष

मान गुरु महान्

श्री जवाहरलाल कर्णावट

(तर्जः- भक्तों के भगवान आपकी जय-जय हो.....।)

मान गुरु महान्, आपकी जय-जय हो,
जिनशासन की शान, आपकी जय-जय हो,
रत्नसंघ की आन, आपकी जय-जय हो,
भक्तों के भगवान आपकी जय-जय हो।। टेर।।

माँ छोटा बाई के राज दुलारे।
पिता अचलचंदजी के नन्दन प्यारे।
सेठिया कुल के भान, आपकी जय-जय हो,
मान गुरु.....।।1।।

गुरु हस्ती से संयम धारा,
जीवन अपना सुन्दर संवारा,
साधक प्रज्ञावान, आपकी जय-जय हो।
मान गुरु.....।।2।।

चौथे आरे के बानगी आप हो,
अन्तर बाहर एक रूप हो,
नहीं तनिक अभिमान, आपकी जय-जय हो।
मान गुरु.....।।3।।

सेवा, साधना, सरलता की मूर्ति,
चहुँ दिशा में है आपकी कीर्ति,
'जवाहर' करता गुणगान, आपकी जय जय हो।
मान गुरु.....।।4।।

-1, Murugappan street, Sowcarpet, Chennai-600079 (Tam.)

बाल-स्तम्भ

श्रमण महावीर की समता

श्री शंकरलाल चण्डालिया

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के व्यक्ति 15 जून 2013 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुमार छात्रावास के सामने, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

राजकुमार वर्धमान अभी-अभी श्रमण वर्धमान बने थे। ऐश्वर्य की पुष्प-शय्या पर से साधना के अति कठोर कंटकित पथ पर श्रमण महावीर के कदम बढ़ आये थे। प्रव्रजित होते ही कर्मार ग्राम की ओर चल दिये। संध्या हो चली थी। परन्तु अपने भीतर आध्यात्मिक जागरण का स्वर्णिम-सुप्रभात लिए भगवान महावीर गाँव के बाहर ही एक निर्जन वन-प्रदेश में ध्यान-मुद्रा लगाकर खड़े हो गए।

एक ग्वाला अपने बैलों को लिए इधर आया। गो-दोहन का समय हो रहा था। ग्वाले को गाँव में जाना था, पर बैलों को किसे संभलाए? इधर-उधर देखा, एक भिक्षु ध्यान में स्थिर खड़े हैं। ग्वाला श्रमण के निकट आया-''बाबा! देखना जरा बैलों को, मैं थोड़ी देर में गायें दुहकर आ रहा हूँ।'' यह कहकर ग्वाला चला गया। महाश्रमण अपने ध्यान में निमग्न थे। समाधि में स्थिर थे। वे भला किसके बैलों को सम्भालते, रखवाली करते।

बैल दिनभर खेत में काम करके आये थे। भूखे-प्यासे चरते-चरते कहीं दूर निकल गये। ग्वाला लौटकर आया, तो देखा कि वहाँ बैल नहीं हैं। महाश्रमण से पूछा-''भिक्षु! बताओ मेरे बैल कहाँ गये? मैं तुम्हें सौंपकर गया और तुम इतना भी खयाल नहीं रख सके।'' महाश्रमण मौन थे। ग्वाला बैलों को खोजने निकला, तो बहुत दूर तक निकल गया। नदी के किनारे-किनारे ऊँचे टीले, गहरे नाले, घनी झाड़ियाँ, जंगल का कोना-कोना छान डाला। रातभर भटकता रहा, इधर-उधर ठोकरें खाता रहा, पर बैल नहीं मिले। सुप्रभात की स्वर्णिम आभा फूट पड़ी। परन्तु ग्वाले के मन में अभी मध्य रात्रि का सा

अंधकार छाया हुआ था। सारी रात की निष्फल भटकन से थका हारा खिन्न चित्त मुँह लटकाये लौट रहा था कि भगवान के पास से गुज़रा। आश्चर्य..... यह क्या? बैल वहीं बैठे जुगाली कर रहे हैं। अब तो ग्वाले का क्रोध भड़क उठा, आँखे तमतमा गई- "दुष्ट! भिक्षु के वेश में चोर। मेरे बैलों को छुपाकर रात भर कहीं एकान्त में रख लिया और अभी लेकर कहीं चंपत होना चाहता था। मैं सारी रात भटकता-भटकता हैरान हो गया, कहीं बैल मिले नहीं। मिलते भी कैसे? यह तो तेरी ही साज़िश थी। ठहर, तुझे अभी इसका दण्ड देता हूँ।" क्रोधाभिभूत ग्वाला बैलों को बांधने की रस्सी से पीटने के लिए आगे बढ़ा।

तभी आकाश से एक दिव्य पुञ्ज सीधा महाश्रमण के समक्ष आकर ग्वाले को ललकार उठा-"सावधान! मूर्ख गोप! क्या कर रहा है?" देवराज इन्द्र की कड़कती हुई वाणी से भयभीत हुआ अज्ञान गोप सकपकार एक ओर ठिठक गया। "मूर्ख! तू जिसे चोर समझ रहा है। वे राजा सिद्धार्थ के वर्चस्वी राजकुमार वर्धमान हैं। ये तेरे बैलों की क्या चोरी करेंगे। जो आत्मसाधना के लिए विशाल राज-वैभव को लात मारकर निकल गये। अज्ञान के कारण प्रभु पर प्रहार कर रहा है।"

ग्वाले के हाथ-पाँव कांप उठे। उसने गिड़-गिड़ाकर प्रभु के चरण पकड़ लिए। श्रमण महावीर की स्नेह-सिक्त दृष्टि में असीम करुणा छलक उठी। वे अभय मुद्रा में बोले- "भद्र! यह दोष तुम्हारा नहीं, अज्ञान का है, ज्ञान की आराधना करो, वही तुम्हें अभय बनाएगा।"

देवराज ने महाश्रमण से प्रार्थना की-"भन्ते! आपका सुदीर्घ साधना काल विविध संकटों से भरा हुआ है। अनेक हृदय द्रावक उपद्रव, उपसर्ग और परीषह आने वाले हैं। आज का मानव अज्ञान एवं वहम का शिकार है। धर्म के नाम पर चल रहे दंभ ने सच्चे धर्म और सच्चे संतों के प्रति भी उसकी निष्ठा को क्षीण कर दिया है। प्रभो! वह आपकी निर्मल, उज्ज्वल साधुता को कैसे परख सकता है। अतः आज्ञा दीजिये मैं पारिपार्श्विक बनकर आपकी सेवा में सदा प्रस्तुत रहूँ।"

महाश्रमण ने देवराज की भक्ति-पूर्ण मुखमुद्रा पर गम्भीर दृष्टि डालकर कहा- "देवराज! आत्म-साधक के जीवन में आज तक यह कभी नहीं हुआ, और न कभी होगा और न अब ही यह हो सकता है कि आत्म-सिद्धि या मुक्ति किसी दूसरे के बल पर, किसी दूसरे की सहायता पर प्राप्त की जा सके।" आत्मसाधक का आदर्श है-"**एगो चरे खग्गविसाण कप्पे**" अकेला और अकेला अपने ही पुरुषार्थ पर चलता रहे।

महाश्रमण की तेजोदीप्त वाणी के समक्ष देवराज विनत हो गए। सच है- आत्म साधक संकटों से घिरने पर भी दूसरों के सहाय की कभी अपेक्षा नहीं करते, क्या भीमकाय हाथियों

से घिर जाने पर भी सिंह कभी दूसरों के सहयोग की ओर मुँह ताकता है?

देवराज ने श्रद्धाभिभूत होकर महाश्रमण को नमस्कार किया।

(प्रभु महावीर का पहला उपसर्ग भी ग्वाले का था और अंतिम उपसर्ग भी ग्वाले का था। प्रस्तुत घटना प्रथम उपसर्ग के समय की है।)

प्रश्नः-

1. राजकुमार वर्धमान और श्रमण वर्धमान में क्या अन्तर है?
2. भगवान महावीर ध्यान क्यों करते थे?
3. अर्थ बताइये- स्वर्णिम, सुप्रभात, ग्वाला, चम्पत, प्रव्रजित, उपद्रव।
4. इस कथा के अन्य शीर्षक बताइये। (कोई दो)
5. ग्वाले ने महाश्रमण को चोर क्यों समझा?
6. विलोम शब्द लिखिए- निर्भीक, विशाल, निर्मल, असीम, एकान्त।

-अध्यक्ष, श्री महावीर स्वा. केन्द्र, कुंवारिया (राज.)

बाल-स्तम्भ [मार्च-2013] का परिणाम

जिनवाणी के मार्च-2013 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'आतंकवाद खतम करना है' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 31 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 25 हैं। परिणाम में लक्की ड्रा का उपयोग किया गया है।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	श्रेयांस जैन (जारोली)-सेंती-चित्तौडगढ़ (राज.)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अदिति बांठिया-छावनी-नागपुर (महा.)	24
तृतीय पुरस्कार- 200/-	भावेश बोहरा-जोधपुर(राज.)	23.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	सौरभ भण्डारी-पीपाड़शहर, जोधपुर (राज.)	21.5
	प्रीतेश जैन-रामपुरा, कोटा (राज.)	20.5
	अस्मिता जैन-जयपुर (राज.)	20.5
	आयुषी-जयपुर (राज.)	20
	लक्की कांकरिया-दौड्डबालापुर (कर्नाटक)	20

सुविचार

कर्मसिद्धान्त के अनुसार कषायोत्पत्ति की स्थिति में समता भाव बनाये रखने में जीव स्वतन्त्र है। अतः कहा जा सकता है कि जीव भूतकाल की अपेक्षा परतन्त्र है तथा वर्तमान की अपेक्षा स्वतन्त्र है।

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (32)

प्रस्तुत त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा "फरवरी-मार्च-अप्रेल-2013" के अंकों पर आधारित है। इसमें कुल 50 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर नमन मेहता सुपुत्र श्री सुमतिचन्द मेहता, निदेशक-अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्, गजराज नेमीचंद जैन किराणा मर्चेण्ट, सदर बाजार, पीपाड़ शहर-342601(राज.) के पते पर 15 जून 2013 तक मिल जाने चाहिए। सम्पर्क फोन:- 94141-16766

(अ) प्रश्नों के उत्तर अंकों में ही दीजिए-

1. मांसाहार का ग्लोबल वार्मिंग में कितना प्रतिशत है?
2. आवश्यकमलयगिरी वृत्ति में कितने आवश्यकों का विवेचन है?
3. प्राणी में कितने प्रकार की भावनाएँ प्रबल होती हैं?
4. स्वप्निका के चौदह नियमों में से एक दिन में कितने किये जा सकते हैं?
5. कितनी चीजें जाने के पश्चात् लौटती नहीं?
6. हमारे पौराणिक ग्रंथों में शरीर में कितनी नाड़ियाँ बताई हैं?
7. "ॐकार- एक अनुचिन्तन" में कुल कितने पृष्ठ हैं?
8. सात नारकी के जीवों के कितने घर हैं?
9. 15 मई को रत्नसंघ में कितनी दीक्षाएँ होने वाली है?
10. उपासकदशांग सूत्र में कितने श्रावकों का वर्णन है?
11. पर्याप्तियाँ कार्य के अनुसार कितने भागों में विभक्त होती हैं?
12. स्वप्निका खुली किताब प्रतियोगिता का तृतीय पुरस्कार कितना है?
13. कितने पाप के सेवन से जीवन बिगड़ता है?
14. भारतीय चिन्तन में समाज आधारित पुरुषार्थ कितने बताए गए हैं?
15. ठाणांग सूत्र में कितने प्रकार के रोग बताये हैं?

(ब) मुझे पहिचानो-

16. जीव एकाग्रभाव हो सर्वप्रथम मुझे पाता है।

17. मैं शत्रु साधना का, प्रदूषण जीवन का।
18. मैं प्रियकारी या हितकारी हूँ तो अहिंसात्मक होती हूँ।
19. मैं आठ कर्मों को दूर करता हूँ।
20. मैं जैन जीवन पद्धति की विशेषता रूप हूँ।
21. मेरे दान से आत्मरस का पान सहज होता है।
22. मैं प्रकाशवान, प्राणवान ऊर्जा की उद्‌गम पुस्तिका हूँ।
23. मैं सबसे मधुर व्यवहार करने का संदेश देती हूँ।
24. मुझ मुनि का वर्णन उत्तराध्ययन सूत्र-20 वें अध्ययन में मिलता है।
25. छोड़ो टी.वी., अखबार, करो मेरा प्रचार।
26. मेरा गुण धवलता का है।
27. मेरे स ही मुक्ति पथ का गमन है।
28. मुझे भगवान महावीर ने 18 हजार उपमाओं से उपमित किया।
29. मेरा मुख्य कार्य तो सम्यक् सामाजिक जीवन शैली का विकास करना है।
30. मैंने नारी-वियोग सहा।

(स) निम्न पंक्तियाँ किस ग्रंथ से उद्‌धृत हैं?

31. विणयो वि तवो, तवो वि धम्मो।
32. जो रात्रि व्यतीत हो गई, वे वापस नहीं आयेंगी।
33. आसाढपुण्णिमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ।
34. रात्रि में हृदय कमल संकुचित हो जाता है।
35. न माता, भ्राता और पिता, उस क्षण में होते हैं साथी।
36. आत्मा की तृष्णा लालसा बड़ी दुष्पूर हैं।
37. तिण्णि गुणव्वयाइं तं जहा- अणत्थदंडवेरमणं, दिसिव्वयं, उवभोगपरिभोग-परिमाणं।
38. कृपा करके यशः शरीर को बचा लें।
39. बाह्य और आभ्यन्तर ग्रन्थ सब, तजे तथाविध कलहों को।
40. अनुकूलता में प्रफुल्लित न होना, प्रतिकूलता में विचलित न होना समता है।
41. धीर पुरुष प्रमाद नहीं करते, क्योंकि यौवन और उम्र बीतते जाते हैं।
42. वचनमात्र के बल से ही, आश्वस्त स्वयं को करें नहीं।

43. भविष्य में क्या होगा इसकी व्यर्थ चिन्ता भी नहीं करनी चाहिए।
44. किसी जीव की हिंसा नहीं करना।
45. जिन प्राणियों को तू पीड़ित करना चाहता है वह तू ही है, अन्य नहीं।

(द) नीचे कुछ अक्षर बिखरे हुए हैं, उन्हें जोड़ते हुए जिनवाणी में ''आगम-वाणी'' शीर्षक के अन्तर्गत आई आगम पंक्तियाँ लिखिए-

जैसेः- ए या र ण ह मा व य स न्ते णं भ!

उत्तरः- वयसमाहरणयाए णं भन्ते!

46. ई स द से हि तु ग तं गं इ व गे
र गं उ चि च्छ री य क्क पा यं णं।।
47. का ई इ व्वे स पा प्प मा लि
सु ए सु ता म णी जा न स।।
48. जो ति त त अ ति णि रं सं हू
व या ह व रं सु सा या व्व अ।।
49. वे ह इ वि सो सो प अ त्तं च च
वि हे त्ता ज्ज क्खा रि य हे रि त्त।।
50. ति त्त क्खं त वि व ना स्स वा सु न बं
ओ ग्गा भ इ मि न यं दु या न ध न।।

जिनवाणी के पाठकों से विनम्र अनुरोध

जिनवाणी हिन्दी मासिक के पाठकों से अनुरोध है कि यदि आपके यहाँ एक ही पते पर एक से अधिक जिनवाणी पत्रिका आ रही है और उनका वहाँ उपयोग/स्वाध्याय नहीं हो रहा हो तो आप इससे जिनवाणी कार्यालय को अवगत करावें, जिससे आपके यहाँ अनुपयोगी पत्रिका किसी अन्य पाठक के लिए उपलब्ध हो सके।

अनुरोधकर्ता

कैलाशमल दुगड — अध्यक्ष

विनयचन्द डागा — मंत्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर (राज.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (37)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग तीन-सामान्य श्रुतधर खण्ड-प्रथम)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह दसवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 जून 2013 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *पूर्णिमा लोढ़ा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-3)

(पृष्ठ सं.561 से 620 तक से प्रश्न)

'अ' अक्षर से उत्तर की पूर्ति करें:-

1. यशोवर्मा महान् प्रतापी राजा था, वह साक्षात् हरि का.....था।
2. जैन धर्म धर्म के रूप में.........को बनाये रखा।
3. ....एक उपाय खोज निकाला।
4. मेरी आयु के कतिपय दिनों को.........बिता देना ही श्रेयस्कर होगा।
5. भुजाओं के बल से......सम्पदा को ही अपनी सम्पदा समझना चाहिए।
6. आचार्य देव! आपकी वाणी में.....शक्ति है।
7. ....पर्यन्त उपलब्ध सामग्री में सर्वाधिक प्राचीन है।
8. राजा समुद्रसेन गुप्तद्वार से निकलकर ....स्थान पर चला गया।
9. हाथ का निशान दही के भाण्ड में......दिखाई दिया था।
10. ....शाश्वत सुख प्रदान कराने वाला मोक्षमार्ग है।
11. अपने.......की सिद्धि से आचार्य सिद्धसेन को अपार हर्ष हुआ।

12. नारी अपने नर की.......होती है।
13. वाक्पतिराज द्वारा की गई प्रार्थना को........स्वीकार कर लिया।
14. वनराज बड़े ही निपुण और.....सूझ-बूझ के धनी थे।
15. कलाओं एवं विद्याओं का लगनपूर्वक........करो।
16. बालक के मुख, भाल और ....के लक्षणों को देखा।
17. ....को एक अच्छा सा ग्राम दान में दिया जाय।
18. ....नगर की नींव का शिलान्यास किया।
19. क्षत्रियकुमार ....को पढ़ना प्रारम्भ किया।
20. ....भावपूर्ण भाषा में प्रार्थना की गई थी।
21. वनराज क्षात्र-तेज के साथ-साथ उत्तरोत्तर.......होने लगा।
22. राज्य में प्रवेश निषेध के राजाज्ञा........रूप में मिलता है।
23. तरुणावस्था और राजा द्वारा पूजित होना महान्........होती है।
24. उच्च आदर्शों पर.........रूप में स्थिर रहने की प्रेरणाप्रद शिक्षा दी।
25. ज्यों-ज्यों प्रभावित होते गये, त्यों-त्यों उनकी.....भी बढ़ती गई।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (35) का परिणाम

जिनवाणी मार्च, 2013 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 221 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- प्रेमलता सांड- पाली-मारवाड़ (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- चन्द्रलता मेहता-दूदू, जयपुर (राज.)

तृतीय पुरस्कार- विभा जैन-रामपुरा बाजार, कोटा (राज.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. एन. महावीरचन्द तातेड़-चेन्नई (तमि.)
2. भारती एस. मंडलेचा-पुणे (महा.)
3. उषा बरड़िया-धुलिया (महा.)
4. ताराचन्द आनन्द जी बडेरा-अंबोजोगई (महा.)
5. भाविका एम. शाह-बेलगाँव (कर्नाटक)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता- Pushpa Devi Bardia-Jaipur, Gnan Chand Kothari-Ajmer, Rajkumar Banthiya-Pali, Smt.Usha Mehta-Jaipur, Mrs.R.R.Kothari-Dhulia, Namrata Priteshji-Dhule, Smt.Vidhya Singhvi-Badnawar, Tara Kumari Runiwal-

Jaipur, Sony Kothari-Jaipur, Sugan Chand Chajjed-Jodhpur, Ratan Chand Mehta-Jodhpur, Hemlata Daga-Jaipur, Suman Chajjed-Jaipur, Madhu Dosi-Beawar, Smt.Sunita Navlakha-Kota, Mrs.Sarala Rameshji Chhajed-Jalgoan, P.Urmila Chordia (Jain)-Surat, Nirmal Sancheti-Jaipur, Mrs.Tanuja Prashant Kothari-Dulia, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Manila Parakh-Jaipur, Smt.Usha Ji Mehta-Jaipur, Smt.Pramila Mehta-Jaipur, Mrs.Pramila.B.Pokhrana-Dhule, Uma Agarawal-Jaipur, Smt.Pista Gulecha-Jaipur, Sangeetaji Alijad-Jalgoan, Manju Kothari-Jaipur, Ajam Bardia-Udaipur, Mrs.Jyoti Jain-Mumbai, Monika Jain-Indore, Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Dilkhushraj Jain-Baroda, Bhopal Chand Sethia-Jodhpur, Suresh Chand Jain-Kherli, Sudha Daga-Bikaner, Pramila Vinod Kumar Bohra-Jaitaran, Pushpa Hastimal Golecha-Beawar, Sunanda Subhash Chand Lodha-Dhulia, Smt.Vimla Bhansali-Surat, Hem Raj Surana-Jaipur, Jaya Bhandari-Beawar, Pushpa Jain-Jaipur, Kavita Jain-Mumbai, Mridula Kumbhat-Jodhpur, Lalita Ajit Bafna-Nagpur, Sou.Nirmala Vijayji Gundecha-Ichalkaranji, Sou.Nutan Ajitji Bhandari-Ichalkaranji, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Sou.Suverna Nitin Bora-Ichalkaranji, Heera Rameshji Karnawat-Ahmed Nagar, Abhilasha Hirawat-Mumbai, Manju Dilip Jain-Mumbai, Seema jain-Bharatpur, Kanhaiya Lal Jain-Bhilwara, Leena Mahendra Jain-Chiplun, Suneeta Jain-Chittorgarh, Neelam Mehta-Indore, Sou.Leela Bai Prakash Chandji Munot-Ichalkaranji, Bhagwan Raj Singhvi-Pali, Dr.Padam Chand Munot-Jaipur, Anu Jain-Hoshiarpur, Prabha Gulecha-Bangalore, Kamla Modi-Jodhpur, Devendra Nath Modi-Jodhpur, Rohit Oswal-Jaipur, Dal Chand Jain-Jaipur, Paras Mal Daulat Rajji Baghmar-Barmer, Hema Kishor Baghmar-Secunderabad, Sou.Madhu Bala Pramod Kumarji Bora-Ichalkaranji, Smita Nilesh Muthiyan-Ichalkaranji, Smt.Sapna Hinger-Mysore, Subhash Mohan Lal Dhadiwal-Thane, Sou.Kusum Pareshji Ponmia-Ichalkaranji, Smt.Kalpana Dhakad-Gurgoan, Indu Kamleshji Jain-Mumbai, Smt.kanak Radher-Delhi.

25 से कम अंक प्राप्तकर्ताओं की सूची नहीं दी जा रही है।

जिनवाणी पर अभिमत

जैन साध्वी डॉ. मधुबाला

10 मार्च, 2013 का जिनवाणी अंक पढ़ा। वैसे तो पूरी जिनवाणी रोचक और पढ़ने लायक सामग्री से भरी रहती है, परन्तु ''वर्तमान है वरदान'' लेख समसामायिक लगा क्योंकि भूतकाल का रोना रोने से फायदा नहीं, भविष्य दूर की बात है, वर्तमान हाथ में है, इसको सुधार लिया तो जीवन सुन्दर बन जाता है। ''आदित्य संवत्सर के अनुसार काल गणना: एक विमर्श'' गवेषक तत्त्व चिंतक श्री प्रमोदमुनि जी का लेख भी अच्छा लगा। यह लेख संवत्सरी एक होने के प्रयास में एक महत्त्वपूर्ण चिंतन है। जानकारी के लिए प्रयास उत्तम है।

19 मार्च, 2013 *-नई आबादी, मन्दसौर (मध्यप्रदेश)*

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

दया की देवी- राजेन्द्र रत्नेश, ***प्रकाशक***- (1) प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, गुरुनानक पथ, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017, (2) राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 ***पृष्ठ***- 136, ***मूल्य***-200 रुपये, सन् 2013

प्रवर्तिनी महासती श्री यशकुंवर जी महाराज द्वारा कतिपय दशकों पूर्व जोगणिया माता में हो रही पशुबलि को बन्द करवाने हेतु एक अहिंसक आन्दोलन चलाया गया तथा जन-जन में अहिंसा का सूत्र-"माँ जणै कि हणै" (माँ जन्म देती है या मारती है?) शब्दों के रूप में फैलाया गया। लोगों के दिल हिल गए एवं प्रवर्तिनी यशकुंवर के साहस, आत्म-विश्वास, धैर्य एवं अहिंसा के प्रति दृढ़ समर्पण के समक्ष देवी में अंधी आस्था रखकर पशुबलि को उत्सव मानने वाले लोगों के सिर शर्म से झुक गए। महासती यशकुंवर जी ने मनौती के अंधविश्वास को तोड़ा। आप मेवाड़सिंहिनी की उपाधि से सुशोभित हुईं। उनके जीवन में साध्वाचार है तो भावना में आध्यात्मिकता एवं प्राणिमात्र के प्रति दया के भाव। साध्वी यशकुंवरजी के अहिंसक आन्दोलन का जीवन्त रूप प्रस्तुत करती है पुस्तक 'दया की देवी'। डॉ राजेन्द्र रत्नेश ने शब्दों में साध्वीवर्या के अहिंसक आन्दोलन की गाथा को मन भावन रीति से उकेरा है। पुस्तक में साध्वीवर्या का कथन है- "देवताओं के नाम पर तो पशुबलि बंद करने के कानून आ गए, पर हम स्वाद और स्वास्थ्य के नाम पर अरबों पशुओं की आज भी बलि ले रहे हैं। मांसाहार को कभी नैतिक नहीं कहा जा सकता।" श्री डी.आर. मेहता की भावना से यह पुस्तक साकार रूप ग्रहण कर सकी। महासती जी के समक्ष जब प्रस्ताव रखा तो उन्होंने कहा- "मेरा जीवन एक साधारण छद्मस्थ साध्वी का जीवन है। जो छलावे में है वह छद्मस्थ है। हम सब संसारी जीव, पदार्थ के छलावे में जी रहे हैं। इसलिए छद्मस्थ का जीवन अनुकरणीय एवं आदरणीय नहीं है। जो संसार से उपरत होकर अर्हत् और सिद्ध हो गए, उनका जीवन ही श्लाघनीय और महिमामंडनीय है।" डी.आर.मेहता ने भरोसा दिलाया कि पुस्तक आपकी महिमा का नहीं, 'अमारी' का जो काम हुआ है, उसका महिमामंडन करेगी।"

पुस्तक भाव, भाषा एवं शैली की दृष्टि से सौष्ठवयुक्त है तथा अन्त में साध्वी जी के साथ हुए साक्षात्कार में विविध शंकाओं का समुचित समाधान भी दिया गया है।

आओ लोक की सैर करें- साध्वी श्री साधनाश्रीजी, ***प्रकाशक***- श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी शान्त क्रान्ति जैन श्रावक संघ, 279 एच, नवकार भवन, हिरणमगरी, सेक्टर 3,

उदयपुर-313002 (राज.) Email-shramansanskriti@rediffmail.com ***पृष्ठ***-144 (बड़ी साइज, आर्ट पेपर), ***मूल्य***-400 रुपये , सन् 2012

आचार्य श्री विजयराजजी महाराज की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी साधनाश्री जी द्वारा लोक के सम्बन्ध में बड़े रोचक ढंग से चित्रों, मानचित्रों के साथ आवश्यक जानकारी उपलब्ध करायी गई है। आम जिज्ञासु पाठक इस पुस्तक के माध्यम से अधोलोक, मध्यलोक एवं ऊर्ध्वलोक के विषय में संक्षेप में प्रामाणिक जानकारी प्राप्त कर सकता है। इसमें नरक, देव, द्वीप, मनुष्यादि के सम्बन्ध में ज्ञान कराया गया है तथा परिशिष्ट के अन्तर्गत चक्रवर्ती, परमाधामी देव, षष्ठ आरक आदि के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर हैं। अन्तिम खण्ड में विज्ञान एवं आगम के आधार पर लोक विषयक तुलना की गई है। रंगीन चित्रों एवं प्रश्नोत्तरों के रूप में हुई प्रस्तुति से पुस्तक पाठक का मन हर लेती है।

जैनदर्शन और कबीर : एक तुलनात्मक अध्ययन (प्रथम एवं द्वितीय अध्याय)- साध्वी डॉ. मंजुश्री, ***प्रकाशक***- सूर्यज्ञान प्रकाशक ट्रस्ट, पुणे, ***पृष्ठ***-12+206 (बड़ी साइज), ***मूल्य***-100 रुपये।

जैन दर्शन एवं कबीर पर तुलनात्मक अध्ययन विषय पर पी-एच्.डी उपाधि प्राप्तकर्त्री साध्वी वर्या ने अपना शोधग्रन्थ छह अध्यायों में प्रस्तुत किया है, जिसके प्रथम दो अध्याय इस पुस्तक में समाविष्ट हैं। प्रथम अध्याय में जैन परम्परा के विकास की संक्षिप्त रूपरेखा तथा कबीर कालीन परिस्थितियों का विवरण है। द्वितीय अध्याय जैनदर्शन की तात्त्विक मीमांसा एवं कबीर की तत्त्वमीमांसीय मान्यताओं से सम्बद्ध है।

आनन्द गणेश की प्रतिभा (प्रश्नोत्तरी-प्रथम भाग)- सौ. प्रतिभा प्रदीप जी गाँधी, ***प्राप्ति स्थान***- (1) 622, रास्ता पेठ, प्रशांत हाइट्स, पुणे-11 (महाराष्ट्र) मोबाइल-09890420303, (2) श्री प्रमोद चन्द्रकान्त जी शिंगी, मु.पो. देवलाली प्रवरा, ता. राहुरी, जिला-अहमदनगर-413716 (महा.), मो.-09850209994, ***मूल्य***- 100

आजकल धार्मिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएँ आयोजित होती रहती हैं। इस दृष्टि से प्रस्तुत पुस्तक उपयोगी है। संकलयित्री प्रतिभा जी ने इसमें कतिपय सामान्य प्रश्नोत्तरों के पश्चात् अकारादि क्रम से आने वाले उत्तर एवं उनके प्रश्न दिए हैं। पुस्तक में लगभग 1500 प्रश्नोत्तर हैं।

दशवैकालिक सूत्र : स्वाध्याय और सर्जना- साध्वी डॉ. स्नेहप्रभा, ***प्रकाशक***- एस.एस. जैन सभा, एफ ब्लॉक, फेस-1, अशोक विहार, दिल्ली, ***मूल्य***- स्वाध्याय/ग्यारह सामायिक

साध्वाचार की दृष्टि से दशवैकालिक सूत्र की महत्ता सर्वविदित है। प्रस्तुत पुस्तक में दशवैकालिक सूत्र के प्रत्येक अध्ययन का सार देने के पश्चात् आगम के आधार पर हिन्दी में सूक्तियाँ दी गई हैं। लगभग 200 पारिभाषिक शब्दों का उपयोगी विवेचन किया गया है। पुस्तक में तुलनात्मक दृष्टि भी दिखाई देती है।

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(01 मई, 2013)

- जिनशासन-गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 7 अलीगढ़-रामपुरा से विहार कर चौरू, पचाला, कुश्तला होते हुए बजरिया-सवाईमाधोपुर पधारे हैं।
- परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पंडितरत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5 जोधपुर के उपनगरों को पावन कर रहे हैं।
- तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 का कोटा से बूंदी की ओर विहार चल रहा है।
- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.,तत्त्व चिन्तिका श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 11 पावटा जोधपुर विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 10 कोटा से डबलाना पधारे हैं तथा देई की ओर विहार संभावित है।
- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 महावीर नगर, जयपुर में विराज रहे हैं।
- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 सवाईमाधोपुर से गंगापुर सिटी पधार गये हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3 जयनगर पधारे हैं तथा आसीन्द की ओर विहार चल रहा है।
- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 10 बजरिया-सवाईमाधोपुर विराज रहे हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 महावीर नगर, जयपुर में विराजमान हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 9 बीकानेर से जोधपुर पधार गये हैं।
- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7 अयनावरम विराज रहे हैं। चेन्नई के उपनगरों को फरसने की संभावना है।
- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 4 स्वाध्याय भवन,

साहुकारपेट, चेन्नई पधार गये हैं।

- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 कोपर गांव पधारे हैं, जलगांव की ओर विहार चल रहा है।
- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 अलवर विराज रहे हैं।
- सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5 का देई की ओर विहार चल रहा है।

आचार्यप्रवर के पदार्पण से पोरवाल क्षेत्र में भक्ति का उल्लास एवं धर्म-साधना में अमित उत्साह

अलीगढ़ नगरी बनी आध्यात्मिक नगरी : साधना-सप्ताह की साधना हुई तगड़ी कुशतला में महावीर जयन्ती एवं बजरिया में प्रवेश

आगममर्मज्ञ, जिनशासन गौरव, जन-जन की आस्था के केन्द्र परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में अलीगढ़-रामपुरा में आचार्यप्रवर के 75 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 28 मार्च से 03 अप्रेल तक साधना-सप्ताह मनाया गया। (विस्तृत विवरण आगे दिया गया है) आचार्यप्रवर का यहाँ पर शुभागमन 21 मार्च को हुआ था। आप यहाँ के भक्ति-भाव, संघ-उत्साह, धर्माराधन, श्रावक-श्राविका संख्या, बालकों हेतु धार्मिक पाठशाला के नियमित संचालन आदि को दृष्टि में रखकर 16 दिन विराजे। 31 मार्च से 02 अप्रेल तक स्वाध्यायी महत्ता शिविर आयोजित हुआ, जिसमें स्वाध्यायियों ने उत्साह से भाग लिया। 03 अप्रेल को अलीगढ़ ग्राम में अहिंसक अगता रखा गया। प्रतिदिन एकाशन, सामायिक, आयंबिल, दया, उपवास आदि साधनाएँ हुईं। 01 से 03 अप्रेल तक उपवास एवं एकाशन के 75 तेले हुए। पूज्य प्रवर यहाँ 04 अप्रेल तक विराजे।

5 अप्रेल, 2013 की सायं अलीगढ़ से विहार कर पूज्य श्री उखलाना पधारे। उखलाना एक ऐसा गाँव है जहाँ परम्परा, भक्ति और कर्म से जैनधर्म को अंगीकार कर जैन जीवन जीने वाले अनेक मीणा परिवार हैं। यहाँ आचार्य भगवन्त का दो दिन विराजना हुआ। 2 दिन के प्रवास के दौरान अपने जीवनोत्थान हेतु अनेक जनों ने व्रत-नियम अंगीकार किये। श्री निवास मीणा ने आजीवन शीलव्रत धारण किया। यहाँ पर बैंगलोर से श्री लक्ष्मीचन्द जी मेहता का परिवार दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। उखलाना से विहार कर समीपस्थ ग्राम अलीनगर उर्फ जैनपुरी पधारना हुआ। इस ग्राम में भी मीणा समाज का बाहुल्य है। किन्तु गुरु-भक्ति देखते ही मुख से बरबस स्वर प्रस्फुटित होते हैं-''भगवान महावीर ने

चौथे आरे की अंतिम वागरणा में जैसा फरमाया- ''कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ। वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा।।'' वैसा ही देखने को मिल रहा है।

इस ग्राम में शासनसेवी आर.सी. बाफना, उनके अनुज श्री कस्तूरचंद जी बाफना आदि का गुरु दर्शनार्थ पधारना हुआ। बाफना साहब ने ग्राम-वासियों की भक्ति-भावना को दृष्टिगत रखते हुए 'स्वाध्याय-भवन' हेतु 2.5 लाख रुपये की राशि दान देने की सहर्ष घोषणा की।

वहाँ से 9 अप्रेल को चोरू में पदार्पण हुआ। यहाँ आचार्य भगवन्त का 6 दिन प्रवास रहा। वीर पिता श्री शांतिलाल जी जैन के सद्प्रयास से 6 शीलव्रती बने। यहाँ वैल्लूर संघ से श्री महावीर जी कटारिया एवं संघ महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा पधारे एवं बीकानेर चातुर्मास की विनति प्रस्तुत की।

15 अप्रेल, 2013 को आचार्य भगवंत का पचाला पधारना हुआ। पचाला ग्राम में कुछ संत-सतियों के चातुर्मासों की घोषणा हुई एवं 2 आजीवन शीलव्रती बने।

23 अप्रेल को महावीर जयंती के मंगल प्रसंग पर कुश्तला संघ को गुरु हीरा का सान्निध्य प्राप्त हुआ। कुश्तला एक छोटा कस्बा होते हुए भी धर्माराधना में अग्रणी है। यहाँ के निवासियों के अंतर्मन में धर्म गुरुओं के प्रति श्रद्धाभक्ति का अच्छा रुझान देखने को मिलता है। यहाँ आचार्य भगवन्त का 7 दिन विराजना हुआ। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी भगवान महावीर जन्म-कल्याणक पर 'सामूहिक सामायिक' का आयोजन रखा गया, जिसमें 60 ग्रामों के 1200 लोगों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

यहाँ से 26 अप्रेल की प्रातःकालीन वेला में आपश्री का कुश्तला से गंभीरा पधारना हुआ। गंभीरा क्षेत्रवासियों को आचार्य श्री की पावन प्रेरणा मिली, फलस्वरूप व्यसनी जन आजीवन व्यसन त्याग हेतु संकल्प-बद्ध हुए। यहाँ के मूल निवासी श्री बाबूलाल जी उज्ज्वल एवं श्री चिरंजीलाल जी मीणा की सेवाएँ अनूठी रहीं।

गंभीरा से विहार कर 27 अप्रेल को आप श्री खेरदा पधारे। खेरदा स्वर्गीय महासती श्री समता जी म.सा. का सांसारिक गाँव है। यहाँ आचार्य भगवंत के दर्शनार्थ राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना एवं अतिरिक्त महामंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल का पधारना हुआ।

खेरदा क्षेत्र से विहार कर 28 अप्रेल को प्रातः बजरिया (सवाईमाधोपुर) पदार्पण हुआ। खेरदा से बजरिया सन्निकट होने के कारण गुरु-भक्त प्रातः सूर्योदय के मंगल प्रभात में गुरु चरणों में पहुँचने लगे, और जैसे ही गुरु भगवंतों के कदम बजरिया की आरे बढ़े,

उनके हर्ष का पारावार न रहा, और देखते ही देखते जन-समूह ने विशाल रूप ले लिया। सवाईमाधोपुर की धरा पर प्रवेश का यह अवसर सबके मनों को उल्लसित कर रहा था। श्रावक-श्राविका आचार्यप्रवर एवं संतों के पीछे जय-जयकार करते हुए चल रहे थे।

बजरिया में मंगल-प्रवेश के पश्चात् प्रातः 8.45 से श्राविका-मण्डल की ओर से स्वागत-अभिनन्दन गान की प्रस्तुति की गई। विरक्ता मुमुक्षु बहिन सुश्री शीतल जी आँचलिया ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कृतज्ञता के भाव प्रकट किये। पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने प्रभावी उद्बोधन में श्रोताओं, श्रावकों और युवाओं को संबोधित करते हुए सिंह गर्जना के साथ झकझोरते हुए सामायिक-प्रतिक्रमण सीखने की पहल करने हेतु प्रभावी प्रेरणा की, जिससे प्रेरित हो कई बंधुओं ने इस ओर गति करने का निश्चय किया। अभी दीक्षा के प्रसंग तक पूज्य आचार्य भगवंत बजरिया विराजें, ऐसी संभावना है।

उपाध्यायप्रवर का जोधपुर के उपनगरों में विचरण

शान्तदान्त गंभीर पं. रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 के पदार्पण से जोधपुर के उपनगर लाभान्वित हो रहे हैं। श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा. के ऑपरेशन के पश्चात् संत-मंडल का पाललिंक रोड़ से चौपासनी हाउसिंग बोर्ड पदार्पण हुआ। यहाँ पर चैत्र कृष्णा अष्टमी के दिन तीर्थंकर आदिनाथ एवं आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा के 75 वें जन्म-दिवस पर गुणानुवाद किया गया। उपाध्यायप्रवर, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी सहित संत-सतियों ने तीर्थंकर ऋषभदेव एवं पूज्य आचार्यप्रवर के जीवन की विशेषताओं को अपने प्रवचनों में रेखांकित किया। यहाँ तप-त्याग का भी सुन्दर रूप दिखाई दिया। (विवरण अलग से दिया गया है।) यहाँ से आप गुलाबनगर, शास्त्रीनगर होते हुए नेहरू पार्क के सामायिक-स्वाध्याय भवन पधारे। आप श्री के सान्निध्य में 23 अप्रेल 2013 को महावीर जन्म कल्याणक दिवस के शुभ अवसर पर महावीर कॉम्पलेक्स में सकल जैन समाज का सामूहिक सामायिक कार्यक्रम सुबह 7 से 8 बजे सम्पन्न हुआ। 'वर्तमान में महावीर की प्रासंगिकता' विषय पर मधुर व्याख्यानी श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने मार्मिक उद्बोधन दिया। कार्यक्रम में सहस्राधिक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। यहाँ पर उल्लेखनीय धर्माराधना हुई। यहाँ से प्रतापनगर, समता भवन अरिहंत नगर होते हुए आप घोड़ों का चौक स्थानक पधारे हैं। भक्त श्रावक-श्राविकाओं का आवागमन निरन्तर बना हुआ है।

आचार्यप्रवर द्वारा अब तक घोषित चातुर्मास

आगममर्मज्ञ जिनशासन गौरव, परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने

फाल्गुनी पूर्णिमा के दिन 27 मार्च, 2013 को कतिपय चातुर्मासों की घोषणा की थी। उसी क्रम में 17 अप्रेल, 2013 को पचाला ग्राम में कुछ और चातुमासों की साधु मर्यादा में रखने के योग्य आगारों के साथ घोषणा की है। अब तक घोषित चातुर्मास इस प्रकार हैं-

1. **सवाईमाधोपुर शहर**– परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा
2. **मदनगंज-किशनगढ़**– तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा
3. **सवाईमाधोपुर शहर**– व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
4. **खेरली**– विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
5. **भरतपुर**– विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा
6. **जामोला (अजमेर)**– व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा.आदि ठाणा
7. **गुलाबपुरा (भीलवाड़ा)**– व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा। सेवाभावी महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 3 द्वारा पर्युषण पर्यन्त ग्राम **हुरड़ा** में धर्माराधन।
8. **मानसरोवर (जयपुर)**– व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा
9. **निफाड़ (नासिक)**– व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा
10. **नदबई (भरतपुर)**– व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा
11. **मण्डावर (दौसा)**– व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा
12. **प्रतापनगर (जयपुर)**– व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा

पूज्य आचार्यप्रवर के 75 वें जन्मदिवस पर देशभर में गुणगान एवं धर्माराधना

परमपूज्य आचार्यप्रवर के सान्निध्य में अलीगढ़-रामपुरा ग्राम में, उपाध्यायप्रवर एवं साध्वीप्रमुखा के सान्निध्य में जोधपुर में तथा देश भर के विभिन्न ग्राम-नगरों में परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 75 वां जन्मदिन अमृत-महोत्सव के रूप में चैत्र कृष्णा अष्टमी, 3 अप्रेल, 2013 को धर्माराधना के साथ मनाया गया। पूज्य आचार्यप्रवर के साधक-जीवन, आत्मबल, आस्थाबल, दृढ़संकल्प शक्ति, आचारनिष्ठा, गुरुभक्ति, समाज-परिष्कार आदि विविध वैशिष्ट्य पर संत मण्डल, महासती मण्डल एवं श्रावक-श्राविकाओं ने प्रकाश डाला। आपकी चारित्रिक तेजस्विता एवं लोकोपकारिता के समक्ष भक्त श्रावक नतमस्तक हैं। आपका प्रभाव जहाँ भी पधारते हैं वहाँ दृष्टिगोचर होता रहता है। पूज्य आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर का दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष भी गतिमान है। इस वर्ष स्वप्निका पुस्तिका के माध्यम से देश भर में तप-त्याग का वातावरण बना हुआ है एवं

विभिन्न प्रकार के नियम ग्रहण किए जा रहे हैं। आचार्यप्रवर के 75 वें जन्मदिवस को साधना-सप्ताह के रूप में सम्पूर्ण देश में तप-त्यागपूर्वक मनाया गया है। देश के कतिपय स्थानों से प्राप्त विवरण संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत है-

अलीगढ़-रामपुरा में साधना-सप्ताह का आयोजन-अलीगढ़-रामपुरा क्षेत्र में साधना-सप्ताह पूर्ण उत्साह एवं लगन के साथ मनाया गया। यह ऐसा क्षेत्र है जहाँ नित्य निरन्तर आबालवृद्ध सभी के अंतस् में भक्ति उमड़ती रहती है। भक्ति से शक्ति प्राप्त होती है और शक्ति को साधना में लगा देना शक्ति का वर्धापन करना है। ऐसी ही शक्ति के वर्धापन का सुन्दर अवसर अलीगढ़ वासियों को साधना-सप्ताह के रूप में प्राप्त हुआ। इस अवसर पर आचार्य भगवन्त, संत-मुनिराजों, व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि महासती मण्डल का सान्निध्य प्राप्त था। 28 मार्च से प्रारम्भ साधना-सप्ताह 03 अप्रेल तक गतिशील रहा। इसमें क्रमशः एकाशन, सामायिक, आयंबिल, दया, बियासन, उपवास आदि की साधना की गई। प्रत्येक दिन लगभग 150 से 175 की संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने इन दिवसों में साधना कर धर्मभावना का परिचय दिया तथा अपने को भाग्यशाली बनाया।

चैत्रकृष्णा अष्टमी 3 अप्रेल, 2013 के दिन **श्रद्धेय श्री आशीष मुनि जी म.सा.** ने "आचार्यप्रवर हीराचन्द्र ये महान् हैं" शब्दों में काव्यांजलि प्रस्तुत की। **श्रद्धेय श्री मनीष मुनि जी म.सा.** ने फरमाया कि आज भगवान ऋषभदेव का जन्म कल्याणक है तो आचार्य भगवन्त का 75 वां जन्मदिवस। भगवान ऋषभदेव ने जीवन-निर्माण की शिक्षा दी, जिसे अपनाकर सह-अस्तित्व भावना से जीवन जीया जा सकता है। पूज्य आचार्यप्रवर स्वयं के प्रति भी सजग हैं तो समाज के प्रति भी। आपश्री स्वयं को सम्हाल रहे हैं तो संघ को भी। सौहार्द, सहयोग, सहिष्णुता की भावना को बलवती बनाने की आपश्री महती प्रेरणा कर रहे हैं। यदि गुरु भाइयों में संगठन होगा तो गुरु प्रसन्न होंगे। **महासती श्री सिद्धि प्रभा जी** ने फरमाया कि पीपाड़ धरा ने दो-दो डायमंड दिए हैं। एक डायमंड यहाँ साक्षात् विराज रहे हैं तथा शासन को दिपा रहे हैं। **महासती श्री वृद्धिप्रभा जी** ने अपने भावाभिव्यक्ति में कहा कि हीरे तो कई हैं पर यह कोहिनूर हीरा है। सन्त-जीवन की सरलता, सजगता तथा आचार्य की गरिमामय छवि से आप दीप्तिमान हैं। **महासती श्री विमलावती जी म.सा.** ने फरमाया कि मुझे गुरु हीरा क्या मिल गया, भगवान मिल गया। अमर जीवन रहे आपका यही हमारी कामना। आप सद्गुणों के सर्जक हो, पापियों के तारक हो तथा भव रोग मिटाने वाले डॉक्टर हो। **श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.** ने अपने भाव व्यक्त करते हुए फरमाया कि हमारा सौभाग्य है कि जिन नहीं, पर जिन सरीखे गुरु मिले। **महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि**

जी म.सा. ने पूज्य प्रवर एवं आदिनाथ तीर्थंकर के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने फरमाया कि शिष्य का प्रथम कर्त्तव्य है कि वह आचार्य के यथार्थ गुणों का गुणगान करे। हमारे आचार्य देव में आठों सम्पदाएँ झलक रही हैं। आप जन-जन के वन्दनीय हैं। समता का गुण रोम-रोम में समाया हुआ है।

पूज्य आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर भगवान ऋषभदेव पर अपने विचार व्यक्त किए। आपने फरमाया कि तीर्थंकर का जन्मकल्याणक क्लेशनाशक होता है। जीवन बनाने एवं संवारने की कला उनसे सीखने को मिलती है। भगवान ऋषभदेव ने असि-मसी एवं कृषि के द्वारा जीवन चलाने की कला सिखाई, तो साथ ही निर्लिप्तता का संदेश दिया। जो कुछ मिला है, वह स्थायी नहीं है, अतः आसक्त होने की भूल न करें। मुझे जो कुछ मिला है उसमें ऋषियों का ऋणी हूँ। शरीर-सम्पदा में माँ का उपकार है, सिखाने में पिता, आगे बढ़ाने में बहिन का प्रसंग है, आचार्य भगवन्त के उपकार से संयम मार्ग पर चलना संभव हुआ है। यह उपकार तभी चुकाया जा सकता है जब अधिक से अधिक लोगों को धर्म-मार्ग पर लगाया जाय। **मेरी भावना है कि संघ के हर व्यक्ति में श्रद्धा एवं त्याग की भावना प्रशस्त करूँ। वय-सम्पन्न भाई ब्रह्मचारी बनें। युवा सामायिक-प्रतिक्रमण सीख कर ज्ञान एवं आचार पक्ष को मजबूत करें तथा जीवन को ऊर्जावान बनाने के लिए ज्ञान-क्रिया सम्पन्न बनकर संघ की दीप्ति बढ़ाएँ।** यहाँ 19 आजीवन शीलव्रती बने तथा लगभग 1200 उपवास, 101 एकाशन, 75 तेला आदि की तपस्या हुई।

जोधपुर- शान्त-दान्त गम्भीर उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में 3 अप्रेल 2013 को भगवान् आदिनाथ के जन्म कल्याणक दिवस के साथ ही जिनशासन गौरव आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का अमृत-महोत्सव तप-त्याग व व्रत-आराधन पूर्वक मनाया गया। अमृत महोत्सव के अवसर पर साधना-सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसमें एकासन, सामायिक, दया, बियासन, उपवास-पौषध आदि की साधना की गई। संत-सती वृन्द ने भगवान् आदिनाथ के जीवन प्रसंगों को उद्धृत कर सारगर्भित विचार रखे तथा पूज्य आचार्य भगवन्त का गुण-कीर्तन किया। संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने भी अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त किये।

बैंगलोर (कनार्टक)- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बैंगलोर (कनार्टक) के तत्त्वावधान में श्री पन्नालाल चोरड़िया जैन भवन में आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी विदुषी महासती श्री चन्द्रप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 6 के पावन सान्निध्य में पूज्य आचार्य भगवंत श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 75 वाँ (अमृत-महोत्सव) जन्म-दिवस अपूर्व श्रद्धा

भक्ति पूर्वक सामूहिक एकाशन व तीन-तीन सामायिक की साधना के साथ तप त्यागपूर्वक मनाया गया। पत्रकार श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल सहित विभिन्न वक्ताओं ने आचार्य श्री हीरा के गुणानुवाद में विचाराभिव्यक्ति की। *-निर्मल बम्ब, मंत्री*

बीकानेर- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में 'सुराणा स्वाध्याय भवन' में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 75 वां जन्मदिवस त्रि-दिवसीय धर्म साधना के रूप में मनाया गया। 01 अप्रेल को एकाशन दिवस, 02 अप्रेल को दया दिवस तथा 03 अप्रेल को उपवास दिवस की साधना की गई। तीनों दिन नवकार मंत्र का जाप हुआ। कर्म क्षय हेतु गुणियों के भजन, सामायिक, प्रतिक्रमण एवं आचार्य हीरा के देदीप्यमान शासन पर प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुईं। तीनों दिन प्रवचनोपरान्त सामूहिक रूप से 17 श्रावक-श्राविकाओं ने अपने आराध्य को 36-36 बार भक्तिपूर्वक वंदन किया। उपवास के बेले, तेले, चौले एवं एकाशन के तेले की भी साधना सम्पन्न हुई। आचार्यप्रवर के 75 वें जन्मदिवस पर 75 दिन/वर्ष पर्यन्त/आजीवन 75 नियमों का यथाशक्ति पालन करने का संकल्प लिया गया। महासती जी की प्रेरणा से 30 व्यक्तियों ने 12 व्रत पालन का संकल्प लिया। प्रत्येक रविवार को सामूहिक साधना हेतु भी संकल्प ग्रहण किए गए। श्री राजेन्द्र जी सोनी और श्री प्रकाश जी सिपाणी ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत स्वीकार किया।

चेतपेट- मधुर व्याख्यात्री **महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.** आदि ठाणा 7 के सान्निध्य में पूज्य आचार्यप्रवर के 75 वें जन्मदिवस पर 75 एकाशन एवं तीन सामायिक के साथ निकटवर्ती लगभग 20 ग्राम-नगरों के 300 भाई-बहिनों ने लाभ लिया। 8 जैन घरों का छोटा सा गाँव चेतपेट (तिरुनामलै) निहाल हो गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री कैलाशमल दुगड़ जी चेतपेट पधारे। श्री सुराणा साहब ने आचार्यप्रवर के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पूज्य आचार्यप्रवर का कोई भी प्रवचन अपने गुरुदेव का स्मरण-उच्चारण के बिना पूर्ण नहीं होता है। श्री उगमचन्द जी कांकरिया ने आचार्यप्रवर को धर्मगुरु, धर्माचार्य एवं धर्मोपदेशक इन तीनों विशेषणों का संगम बताया। महासती मण्डल में प्रायः सभी सतियों ने अपने अन्तर की श्रद्धा भावना को गद्य एवं पद्य में अभिव्यक्त किया। महासती श्री भाग्यप्रभा जी ने आचार्यप्रवर को परम्परा के संरक्षण में अहम् भूमिका निभाने वाला बताया। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. ने आदिनाथ भगवान की स्तुति करते हुए रत्नसंघ के आदि पुरुष एवं वर्तमान संघनायक के सद्गुणों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ,

जोधपुर के निदेशक श्री राजेन्द्रकुमार जी लूंकड़ (ईरोड़) ने अपनी ओजस्वी शैली में किया। श्री सूरजमल जी भण्डारी की गुरु-भक्ति सराहनीय रही।

मदनगंज- यहाँ पर आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 75 वें जन्म-दिवस पर गुणाराधन एवं जाप आदि का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें 140-150 के लगभग भाई-बहनों ने भाग लिया।

जलगांव- रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 75 वां जन्मदिवस (अमृत-महोत्सव) एवं आदिनाथ तीर्थंकर का जन्मकल्याणक महोत्सव उत्साहपूर्वक तप-त्याग के साथ मनाया गया। 20 अप्रेल को नवजीवन मंगल कार्यालय में भक्ति संध्या का आयोजन हुआ, जिसमें 30-35 ग्रुपों के माध्यम से गुरु गुणानुवाद भजन-स्तवन संवाद के रूप में प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम में लगभग 400 युवक-युवतियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। सौ. सुशीला समदड़िया एवं उनके सहयोगियों ने रत्न संघ के आचार्यों पर संवाद के माध्यम से सारगर्भित जानकारी प्रस्तुत की। कु. प्रेरणा मनोज संचेती (8 वर्ष) ने मधुर कंठ से भजन प्रस्तुत कर सबको भाव-विभोर कर दिया। सभी ग्रुपों ने प्रभावशाली नाटिका, कव्वाली, संवाद, भजन प्रस्तुत करके वातावरण को हस्ती हीरामय बना दिया।

03 अप्रेल 2013 को आर.सी.बाफना जैन स्वाध्याय भवन में समर्थ गच्छ की महासती पूज्या चंचला जी म.सा. आदि ठाणा 8 के सान्निध्य में प्रमुख व्यक्ताओं द्वारा पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के जीवन एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया। पूज्य महासती जी के द्वारा भी आचार्य श्री के गुणगान किये गये। रत्नसंघ संरक्षक श्री रतनलाल जी बाफना, पण्डित श्री प्रकाशचन्द जी जैन, प्राचार्य ने आचार्य श्री की विशेषताओं एवं गुणों का निरूपण किया। लगभग 250 से 300 लोगों की उपस्थिति रही, जिसमें 3 से 5 सामायिक, दया, एकाशन, उपवास, संवर-पौषध आदि की आराधना की गई। युवक परिषद् के सभी कार्यकर्ताओं ने उपर्युक्त दोनों कार्यक्रमों में अपनी उल्लेखनीय सहभागिता दर्ज की।

द्विदिवसीय स्वाध्यायी शिविर एवं शिक्षक संगोष्ठियाँ

चौरू (टोंक)- परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 एवं विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में 22-23 फरवरी, 2013 को पोरवाल क्षेत्र के स्वाध्यायियों एवं शिक्षकों की गुणवता में अभिवर्द्धन हेतु संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह आयोजन श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ-शाखा

सवाईमाधोपुर एवं श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-चौरू के सान्निध्य में किया गया।

चौथ का बरवाड़ा- आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में स्वाध्यायियों एवं शिक्षकों की गुणवता में अभिवृद्धि हेतु 9-10 मार्च, 2013 को स्थानीय संघ एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, शाखा सवाईमाधोपुर के तत्त्वावधान में आयोजित किया गया। पूज्य आचार्यप्रवर ने स्वाध्यियायों को आत्मबोध प्रधान करते हुए फरमाया कि स्थानांग सूत्र में श्रुत धर्म और चारित्र धर्म की चर्चा है। श्रुत धर्म स्वाध्याय है। वीतराग वाणी का संक्षिप्त सार यही है कि आश्रव बंधन का कारण है एवं संवर मोक्ष का हेतु है। 'स्वाध्याय' शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए आपने फरमाया कि अपना अध्ययन, अपने द्वारा अध्ययन तथा अपने में अध्ययन स्वाध्याय है। शिविर में महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., श्री योगेशमुनि जी म.सा., श्री मनीषमुनि जी म.सा., महासती श्री पदमप्रभा जी म.सा. आदि के उद्‌बोधनों का भी लाभ प्राप्त हुआ। गुरुभक्त श्री हस्तीमल जी गोलेछा, ब्यावर ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. में धर्माचार्य, धर्मगुरु एवं धर्मोपदेशक इन तीनों की विशेषताएँ प्राप्त है, जो प्रायः दुर्लभ होती हैं।

13 मई को अक्षयतृतीया सवाईमाधोपुर में

13 मई, 2013 को अक्षय तृतीया पर बजरिया-सवाईमाधोपुर में आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीवृन्द के सान्निध्य में तप और दान का माहात्म्य श्रवणकर व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करने वाले श्रावक-श्राविका तथा एकान्तर तप साधक निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें- 1. श्री राधेश्याम जी जैन गोटावाले-94618-63233, 2. श्री गणपतराज जी जैन-94603-17013, 3. श्री पारसचन्द जी जैन-94130-23430, 4. श्री कुशलचन्द जी गोटावाले, आर.पी. ज्वैलर्स, टोंक रोड़, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राज.) फोनः-94604-41570, 5. श्री रामदयाल उम्मेदचन्द जैन सर्राफ, लड्डा पेट्रोल पम्प के सामने, बजरिया, सवाईमाधोपुर-322001,मो.-9414404042, 9414030572

सवाईमाधोपुर एवं चेन्नई में 15 मई को तीन दीक्षाएँ

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से 15 मई को मुमुक्षु प्रभा एवं मुमुक्षु अन्तिमा जैन की जैन भागवती दीक्षा सवाईमाधोपुर में तथा इसी दिन मुमुक्षु शीतल आंचलिया की जैन भागवती दीक्षा चेन्नई में व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के मुखारविन्द से सम्पन्न होना सुनिश्चित हुआ है। सवाईमाधोपुर में दीक्षा-दिवस पर अगता घोषित किया गया है। **दीक्षा-स्थल**-सार्वजनिक उद्यान, बाल मन्दिर कॉलोनी,

पानी की टंकी के पास, बजरिया, सवाईमाधोपुर-322001 (राज.) **सवाईमाधोपुर सम्पर्क सूत्रः-** अक्षय तृतीया के समाचार में ऊपर दिए गए हैं। **आवास-व्यवस्था प्रभारीः-** श्री मुकेश जी जैन-पान वाले-9414204721, श्री मोहन जी सर्राफ-9414404042, श्री मनोज जी जैन-9414030583

चेन्नई के सम्पर्क सूत्रः- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 24-25 बेसिन वाटर वर्क्स स्ट्रीट, साहुकार पेट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडू), 1. श्री गौतमराज जी सुराणा-संयोजक, दीक्षा आयोजन समिति-9940558888, 2. श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल-सहसंयोजक, दीक्षा आयोजन समिति-09444388565, 3. श्री महेन्द्रकुमार जी कांकरिया, अध्यक्ष, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई-9444051313, 4. श्री सुधीर कुमार सुराणा, मंत्री- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई-9150640000, 5. श्री गौतमचंद जी बाघमार, क्षेत्रीय प्रधान, तमिलनाडू सम्भाग-9940083434

सम्पूर्ण भारत से प्रवेशार्थ आवेदन-पत्र आमन्त्रित

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान में अध्ययन की उत्कृष्ट सुविधा

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. की प्रबल प्रेरणा से सन् 1973 में संस्थापित एवं गजेन्द्र चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर में आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा के साथ विद्यालय, महाविद्यालय, प्रोफेशनल एवं प्रशासनिक स्तर का उच्च शिक्षण प्राप्त करने की सुविधा है। सुविधा सम्पन्न इस संस्थान में सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैन विद्यार्थियों से वर्ष 2013 में प्रवेश हेतु आवेदन आमंत्रित हैं। विगत 38 वर्षों में यहाँ से अध्ययन कर लगभग 110 विद्यार्थी वर्तमान में प्रशासनिक, राजकीय एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं।

संस्थान में प्रवेश हेतु प्रक्रिया-

1. विद्यालय अथवा महाविद्यालय के सभी संकाय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रवेश दिये जायेंगे। न्यूनतम दसवीं कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है।
2. संस्थान में प्रवेश हेतु विद्यार्थी का शैक्षणिक स्तर पर 70 प्रतिशत या उससे अधिक अंक होना प्राथमिकता में रहेगा।
3. बालकों में नैतिक आचरण स्वच्छ पाये जाने पर ही उन्हें प्रवेश दिया जाना संभव है।
4. प्राप्त आवेदनों में से शैक्षणिक व आध्यात्मिक योग्यतानुसार छात्रों का चयन किया जाएगा।
5. संस्थान में चयन के लिए शिविर आयोजित किया जायेगा, जिसकी सूचना दूरभाष के माध्यम से दी जायेगी।

नियम एवं सुविधाएँ-

1. संस्थान में अध्ययनानुकूल उचित आवास एवं भोजन की व्यवस्था।
2. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अँग्रेजी एवं विविध विषयों पर विशेष आमंत्रित महानुभावों द्वारा अभिप्रेरणा एवं कार्यशाला का आयोजन।
3. सुसज्जित पुस्तकालय एवं कम्प्यूटर शिक्षण की उत्तम व्यवस्था।
4. विद्यार्थियों को स्कूल एवं महाविद्यालय के अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम का अध्ययन अनिवार्य है।
5. संस्थान द्वारा निर्धारित अन्य नियमों एवं उपनियमों का पालन अनिवार्य।

प्रवेश आवेदन हेतु सम्पर्क सूत्रः- दिलीप जैन, अधिष्ठाता, *आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.), दूरभाषः- 0141-2710946, 094614-56489, ईमेलः-* ahassansthan@gmail.com

जयपुर में ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिविर 12 मई से 9 जून तक

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में गत 21 वर्षों से बालक-बालिकाओं के धार्मिक शिविर लगाये जा रहे हैं। इस वर्ष भी बच्चों को नैतिक शिक्षा देने हेतु और आज के भौतिक वातावरण में बच्चों के संस्कार सुदृढ़ करने के लिये इन शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। जयपुर के दस केन्द्रों पर यह शिविर संचालित होगा। वे स्थल एवं सम्पर्क सूत्र निम्न हैं-

1. सांगानेरी गेट, सुबोध स्कूल, सुभाष चोरड़िया- 9829854854
2. मालवीय नगर (जैन स्थानक, हरिमार्ग), अनुरूप लोढ़ा- 9462066666
3. महावीर नगर (सामायिक स्वाध्याय भवन), विवेक लोढ़ा-9610111555
4. जवाहर नगर (महावीर साधना केन्द्र), राजेश मूसल-9166633999
5. झोटवाड़ा (ज्योति पुंज स्कूल), रोहित ओसवाल-9414052308
6. श्याम नगर (आराधना भवन), शैलेन्द्र कोठारी-9251706057
7. नित्यानन्द नगर, श्री जैन रत्न स्वाध्याय भवन, गिरीश जैन-9351311856
8. प्रतापनगर, सांगानेर, श्री श्वे. जैन रत्न स्वाध्याय भवन, सुशील जैन-9413023374
9. लालकोठी (वर्धमान भवन कृष्णा नगर प्रथम), विनोद बागरेचा-9829145002
10. मानसरोवर (महावीर भवन), कमलेश जैन-9414718271

निवेदक- ***मनीष मुणोत (शाखा सचिव)-9829113939, आकाश लोढ़ा (संयोजक)-9829216085***

उपाध्यायप्रवर की दीक्षा अर्द्धशती दिवस पर तप-त्याग का अनुरोध

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशताब्दी वैशाख शुक्ला त्रयोदशी, दिनांक 23 मई, 2013 को उपस्थित हो रही है। इस पावन प्रसंग को पूरे भारतवर्ष में त्याग-तप की आराधना के साथ मनाने का निश्चय किया गया है। पूज्य उपाध्यायश्री की दीक्षा अर्द्धशती के दिवस पर निम्न त्याग-प्रत्याख्यान अवश्य ग्रहण करावें-

1. व्रत, एकासन, नीवी, आयंबिल, उपवास, दया-संवर
2. पांच सामायिक
3. व्रत के तेले (एकासन, नीवीं, आयंबिल, उपवास, दया-संवर या मिश्रित)
4. बारह व्रत
5. सामूहिक रात्रि-भोजन में भाग लेने का त्याग
6. एक वर्ष तक रात्रि भोजन त्याग
7. एक वर्ष तक जमीकन्द का त्याग

आप अपने यहाँ स्थानीय संघ, युवक परिषद् एवं श्राविका मण्डल के सभी सदस्यों को कार्यक्रम की सूचना देने के साथ ही परम श्रद्धेय उपाध्यायश्री की दीक्षा अर्द्धशती त्याग-तप आराधना के साथ मनाते हुए गुरुदेव के प्रति सच्ची श्रद्धाभिव्यक्ति करें, ऐसा विनम्र निवेदन है। संघ-सदस्यों द्वारा लिए गए संकल्पों की सूचाना एवं आयोजित कार्यक्रम की रिपोर्ट संघ के प्रधान कार्यालय की अवश्य प्रेषित करावें। *-ज्ञानेन्द्र बाफना, गुरुचरणरजकृपाकांक्षी,*

अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 30 जून 2013 को होगी

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 30 जून 2013, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी।

सभी महानुभावों से निवेदन है कि क्रमिक वृद्धि एवं संस्कार-शुद्धि के इस आध्यात्मिक परीक्षा कार्य में अधिकाधिक भाई-बहिनों को जोड़ने का प्रयास करावें। अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें- सुरेश बी.चोरडिया, संयोजक-094440-28841, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-093515-89694, कार्यालय (फोन)-0291-2630490, www.jainratnaboard.com., E-mail: info@jainratnaboard.com

23 मई, 2013 को होने वाली स्वप्निका की ओपन बुक परीक्षा के निर्धारित परीक्षा केन्द्र

जोधपुर– पावटा, शक्तिनगर, नेहरूपार्क, हा. बोर्ड, **जयपुर**– बारह गणगौर, महावीर नगर, महारानी फार्म-मानसरोवर, बजाज नगर, जवाहर नगर, चाकसू, **सवाईमाधोपुर**– सवाई माधोपुर शहर, आलनपुर व महावीर नगर, आवासन मण्डल, बजरिया व आदर्शनगर, **हैदराबाद**– काचीगुड़ा जैन स्थानक, श्री आनन्द जैन भवन कोराछावनी एवं विभिन्न क्षेत्र और भी हैं। स्वतंत्र क्षेत्र– भोपालगढ़, पीपाड़, गोटन, मेड़तासिटी, मदनगंज, किशनगढ़, दूदू, चौथ का बरवाड़ा, अलीगढ़-रामपुरा, ब्यावर, देई, कुश्तला, गंगापुरसिटी, खेरली, कंवलियास, इन्दौर, बालोतरा, पाली, सूरत-संग्रामपुरा, भरतपुर, फागणा (धूलिया), गुलाबपुरा, विजयनगर, भीलवाड़ा, नवसारी, उमरगांव, नई मुम्बई, मैसूर, नागौर, इन्द्रगढ़, बागलकोट, अजमेर, रामपुरा-कोटा, हिण्डौन, सुमेरगंज मण्डी, जलगांव, बुलढ़ाणा (महा.), धुलिया, धनारीकलां, भोपाल, नासिक, चौरू, उज्जैन, बम्बई, दिल्ली, उदयपुर, हुबली, रायखेड़ा, घोटी (महा.), अहमदाबाद, अलवर, बैंगलोर, चेन्नई (तमिलनाडू क्षेत्र), करही (खरगोन-मध्यप्रदेश), इच्छापुर, जबलपुर, श्योपुर, बीकानेर, चित्तौड़गढ़ आदि।

नोटः– परीक्षार्थी निर्धारित परीक्षा सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी हेतु परीक्षा प्रायोजक श्री तरूण जैन (9166190574, 9251718573) से एवं तमिलनाडु क्षेत्र के अन्य परीक्षा केन्द्रों हेतु मनोज जी सेठिया (09841052205) से सम्पर्क कर सकते हैं।

महाराष्ट्र क्षेत्र में प्रचार-यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव द्वारा आध्यात्मिक प्रचार कार्यक्रम दो दलों में 16 से 20 अप्रेल 2013 तक महाराष्ट्र क्षेत्र में आयोजित किया गया। उक्त प्रचार कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के मंत्री श्री सुभाष जी हुण्डीवाल-जोधपुर, वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं प्रचार-प्रसार राष्ट्रीय संयोजक श्री लल्लुलाल जी जैन-सवाईमाधोपुर, स्वाध्याय संघ के कार्यालय प्रभारी श्री कमलेश जी मेहता-जोधपुर, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के प्रचारक श्री मनोज जी संचेती-जलगांव, पाठशाला प्रचारक श्री हीरालाल जी मण्डलेचा एवं स्वाध्याय संघ के प्रचारक श्री पारस जी बांठिया-घोड़नदी की महनीय सेवाएं प्राप्त हुईं। प्रचार कार्यक्रम दो दलों में महाराष्ट्र क्षेत्र के धरणगांव, मांडल, अमलनेर, पारोला, मुकटी, फागणा, नरडाणा,

पिंपलनेर, ताहराबाद, जायखेड़ा, सटाणा, सौंदाणा, चांदवड़, विंचूर, निफाड़, लासुर स्टेशन, वैजापुर, नांदगांव, नागद, कजगांव, पाचोरा, भड़गांव, वरखेड़ी, शेन्दुर्णी, पहूर, वाकोद, भराड़ी, सिल्लोड़, बुलढाणा, खामगांव, नांदुरा, मलकापुर, इच्छापुर, मुक्ताईनगर, बोदवड़, फत्तेपुर, वरणगांव, भुसावल, नसीराबाद तथा तोण्डापुर में आयोजित हुआ। प्रचार कार्यक्रम में पर्युषण पर्वाराधना हेतु 15 मांगे प्राप्त हुईं। नये स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा से 22 महानुभावों ने स्वाध्यायी सदस्यता ग्रहण की। सभी स्थानों पर बालक-बालिकाओं हेतु रविवारीय संस्कार शिविरों की प्रेरणा की गई तथा चल रहे शिविरों की समीक्षा की गई। शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा की जानकारी देते हुए नये केन्द्र प्रारम्भ किए गए तथा लगभग 230 फार्म भरवाए गए। प्रचार के दौरान वैजापुर के पास में व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन का लाभ भी प्राप्त हुआ तथा अन्य कई स्थानों पर भी विभिन्न सम्प्रदायों के संत-सती वर्ग के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। *-कुशलचन्द जैन गोटेवाला, संयोजक*

राष्ट्रीय निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

गुरुद्वय आचार्य श्री हीराचन्द्र जी एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष तथा आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के 103वें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा **''स्वाध्याय एवं स्वाध्यायी की महत्ता''** विषय पर राष्ट्रीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस प्रतियोगिता में 70 निबन्ध प्राप्त हुए। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार है- **प्रथम स्थान-** श्री पारसमल जी चण्डालिया-ब्यावर, **द्वितीय स्थान-** रेखा जसवन्तराज जी नंगावत-मैसूर, **तृतीय स्थान-** लीला जी सालेचा-जलगांव, **सान्त्वना पुरस्कार-** 1. पवन कुमार जी जैन-जोधपुर, 2. प्रीति जी मेहता-मन्दसौर, 3. सूरज जी बोहरा-जोधपुर, 4. श्वेता जी सुराणा-चित्तौड़, 5. चित्रा जी जैन-आलनपुर, 6. रितु जी जैन-जोधपुर, 7. अरिहन्त जी चौपड़ा-पाली, 8. राखी जी सुराणा-सैंधवा, 9. अंकित जी माण्डोत-उदयपुर तथा 10. जितेन्द्र जी जैन-गंगापुर सिटी।

जलगाँव में 8 जून से वीतराग ध्यान शिविर

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज सा. एवं उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी महाराज सा. के 50 वें दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के अन्तर्गत द्वितीय वीतराग ध्यान साधना शिविर का 8 से 19 जून, 2013 तक आयोजन किया जा रहा है। साधना में प्रवीण ध्यान साधकों द्वारा साधना करवायी जाएगी। शिविर में भाग लेने के इच्छुक साधक अपनी सूचना पूर्व में प्रेषित करें तथा शिविर की नियमावली एवं फार्म भरने हेतु सम्पर्क करें। पूर्व अनुमति के बिना शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। **सम्पर्क**

सूत्र- श्रीमती मंगला जी चोरड़िया-09422775692

आत्म जागृति प्रतियोगिता का परीक्षा परिणाम

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर की ओर से आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के 50 वें दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में आत्म-जागृति प्रश्नावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसमें देशभर के परीक्षार्थियों ने भाग लिया। आत्म-जागृति का परीक्षा परिणाम इस प्रकार रहाः- **प्रथम पुरस्कार (7000/-रुपये)**- शीलू हीरावत-जयपुर (299), **द्वितीय पुरस्कार (5000/- रुपये)**- पंकज कुमार मूथा-पाली (298), साक्षी जैन-जयपुर (298), **तृतीय पुरस्कार (3000/- रुपये)**- शशिकला गांधी-जोधपुर (297), कमला जैन-जयपुर (297), **प्रोत्साहन पुरस्कार (100/- रुपये प्रत्येक)**- शिल्पा गांधी-जोधपुर (297), सुनील हीरावत-जयपुर (297), पूर्णिमा गाँधी-जोधपुर (297), योगेश गांधी-जोधपुर (297), प्रियंका गांधी-जोधपुर (296), विद्या संघवी-बदनावर (293), पूजा गुलेच्छा-जोधपुर (292), मंजु भण्डारी-अहमदाबाद (291), रत्नेश जैन-गंगापुर सिटी (291), प्रवीण टाटिया-जोधपुर (289), कुसुम फोफलिया-जयपुर (288), प्रतिमा गांधी-पुणे (285), कंचन फोफलिया-जोधपुर (285), चंचल कोठारी-पुणे (284), मैनाबाई खिवसरा-जोधपुर (284), कमला कंवर-जोधपुर (284), शांतिदेवी बांठिया-जोधपुर (282), प्रमिला जैन-इंदौर (281), सरस्वती जीरावला-जोधपुर (281), अनीता मेहता-ब्यावर (280), सज्जनकंवर मेहता-जोधपुर (280), राजकुंवर चौधरी-जोधपुर (279), रूचि भण्डारी-जोधपुर (279), युगल चोरडिया-जोधपुर (279), रेखा लोढ़ा-जोधपुर (279), पुष्पा गाँधी-जोधपुर (278), कुसुम सिंघवी-(278), सुनीता हीरावत-जयपुर (278), संतोष लुंकड़-जोधपुर (277), आशा जैन-जोधपुर (276), कमला देवी पींचा-(276), प्रतिभा जैन-धार (276), निर्मला मेहता-जोधपुर (276), मीनाक्षी पींचा-जोधपुर (275), अनुज जैन-दसाई (274), साक्षी लोढ़ा-जोधपुर (274), कृष्णा भण्डारी-जोधपुर (272), हेमलता सिंगी-देवलाली प्रवरा (271), रवि जैन-जोधपुर (270), इंदु लूणीया-बदनावर (269), तरूण भाई खाटडीया-पूना (269), प्रमिला पोखरणा-धुलिया (269), संतोष आंचलिया-धुलिया (269), मुन्नालाल भण्डारी-जोधपुर (268), उर्मिला कांकरिया- (268), रश्मि झांबड़-औरंगाबाद (266), कैलाशचन्द जैन-उज्जैन (265), खुशबू लोढ़ा-जोधपुर (265), अमिता जैन-इंदौर (264), उर्मिला चोरडिया-(264), मनीला पारख-जयपुर (264), लीला अबानी-जोधपुर (263), कमला सुराणा-जोधपुर (263), सरला कांकरिया-जलगांव (261), शशिकला लुणावत-नासिक (260), अनिल शाह-उज्जैन (260), राजुल कोठारी-धुलिया (260), सुशीला बैगाणी-बीकानेर (259), पूर्णिमा जैन-जयपुर (259), सुशीला रांका-जलगांव (259), सुनीता दुसाज-जयपुर (259), रीमा सुजन्ती-

जयपुर (258), निकिता बागरेचा-धार (258), रोहिता जैन-उज्जैन (258), शिल्पा सुराणा-जलगांव (258), विजया मल्लारा-जलगांव (258), शोभा कोठारी-(257), सपना धोका-सिड़को (256), लता जैन-बोदवड़ (256), काजल जैन-जोधपुर (256), रीतू बैंगाणी-जोधपुर (256), विमला भंसाली-सूरत (256), मंजु भण्डारी-ब्यावर (254), सरोज रुणवाल-धुलीया (254), ललिता लोढ़ा-नासिक (253), कंचन लोढ़ा-नासिक (253), वंदना खींचा-सूरत (253), रजनी जैन-जयपुर (252), कोमल जैन-(252), नैणचन्द बाफना-जोधपुर (251), सूर्यकान्ता कोठारी-अहमदनगर (251), लवीना चौपड़ा-जोधपुर (250), मधुबाला ओस्तवाल-नासिक (250), विमला बरडिया-बोदवड़ (250), सुशीला संचेती-भीलवाड़ा (250), दीपांजली संकलेचा-जयपुर (250), तारा रुणवाल-नासिक (249), शांता बाफना-नासिक (248), विमला मेहता-जोधपुर (247), महेन्द्र बाफना-नासिक (247), दमयन्ती बोहरा-मुम्बई (247), सुनीता मरलेचा-अमरावती (246), दर्शना जैन-बोदवड़ (246), कमला सेठिया-मसुदा (246), नीरा भण्डारी-ब्यावर (245), सुशीला गुगलिया-भीलवाड़ा (245), सुनीता बोहरा-नासिक (245), मंजु जैन-जयपुर (245), पिस्ता गोलेछा-जयपुर (244), प्रीती काठेड़-नीमच (244).

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर- साध्वी प्रमुखा, शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. एवं तत्वचिन्तिका श्री रतनकंवर जी म.सा. के सान्निध्य में पावटा क्षेत्र में नवपद ओली के प्रसंग से लगभग 200 आयंबिल एवं नीवी तप हुए। 10 ओलियां हुईं, दो बार नमस्कार मंत्र के जाप हुए। नौ दिन श्रीपाल चौपाई का वाचन हुआ, चैत्र पूर्णिमा को सामायिक की 25 अठाई हुई, तीन तेले हुए तथा श्री प्रकाशचन्द जी कर्णावट की धर्मपत्नी श्रीमती कमलाबाई ने अखण्ड नौ उपवास किए।

बीकानेर- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 नोखा, देशनोक होते हुए 2 मार्च, 2013 को बीकानेर पधारे, जहाँ उनका मंगल प्रवेश 'सुराणा स्वाध्याय भवन' में हुआ। पूरे प्रवास के दौरान अद्भुत धर्ममय वातावरण बना रहा। जैनों ने ही नहीं अजैनों ने भी प्रवचनों की अमृत धारा का लाभ लिया। दोपहर में धर्मचर्चा भी होती रही। महासती श्री मुदित प्रभा जी म.सा. ने 25 बोल एवं कर्मग्रन्थ का अध्ययन करवाया। प्रवास के दौरान उपवास की लड़ी निरन्तर चलती रही। फाल्गुनी पूर्णिमा के अवसर पर उपवास, एकाशन, बेला आदि तप सम्पन्न हुए। 1 से 3 अप्रेल तक पूज्य आचार्यप्रवर का 75 वां जन्मदिवस त्रिदिवसीय साधना के रूप में मनाया गया, जिसका विवरण इसी जिनवाणी में

अन्यत्र दिया गया है।

गजेन्द्रगढ़- चेन्नई में 15 मई को प्रव्रज्या अंगीकार करने वाली मुमुक्षु शीतल जी आंचलिया तथा उसी दिन सवाईमाधोपुर में दीक्षा ग्रहण करने वाली मुमुक्षु प्रभा जी एवं अन्तिमा जी का अभिनन्दन देश के विभिन्न ग्राम-नगरों में हो रहा है। उसी शृंखला में गजेन्द्रगढ़ में मुमुक्षु शीतल जी आंचलिया का भाव भीना अभिनन्दन 9 अप्रेल को सम्पन्न हुआ, जिसमें बागलकोट, दलकल, हुबली, गदग, मुंडरगी, शोरापुर, कोप्पल, बीजापुर, लिंगसगूर, पूना, तिरुचि, चेन्नई, गुलेदगुड्ड, कूकनूर, लावरगेरी, रायचूर, माधवनगर के लोग भी बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए। युवावस्था में मायाजाल से मुक्त होकर संन्यासी जीवन अपनाने वाली मुमुक्षु शीतल आंचलिया को देखकर शहरवासी अभिभूत हो गए।

मुमुक्षु शीतल आंचलिया ने कहा कि श्रमण की यात्रा भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर तथा पर से स्व की ओर जाने की है। प्रायः हमारा जीवन जीविकोपार्जन व भौतिक साधनों की प्राप्ति में बीत जाता है, स्व को जानने का अवसर नहीं मिलता। श्रमण-जीवन अध्यात्म में लीन हो जीवन-मुक्त होने का साधन है। इस अवसर पर अनेक ग्रामों से समागत वर्षीतप करने वाले 75 तपस्वियों का शाल, माल्यार्पण एवं धार्मिक साहित्य प्रदान कर सम्मान किया गया।

जोधपुर- परम श्रद्धेय आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के पावन प्रसंग पर श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी द्वारा 20 जून, 2013 को वर्द्धमान अस्पताल, घोड़ों के चौक में प्रातः 10 बजे से निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जायेगा। शिविर में ख्याति प्राप्त सर्जन डॉ. राम गोयल (एम.एस.), सर्जन डॉ. गोपालचन्द गाँधी (एम.एस.) द्वारा हर्निया, हाइड्रोसिल, एपेन्डिक्स, मस्सा, भगन्दर आदि के ऑपरेशन किये जायेंगे। 19 जून, 2013 को प्रातः8.30 से 12.30 बजे मरीजों की जांच की जायेगी तथा ऑपरेशन किए गये मरीजों को निःशुल्क दवाइयाँ भी उपलब्ध कराई जायेंगी। यह शिविर श्री मोहनलाल जी जीरावला के सौजन्य से लगाया जाएगा।

वर्द्धमान अस्पताल में सभी सन्त-सतियों की देखभाल व रोग-निदान की विशेष व्यवस्था है तथा दवाइयाँ भी उपलब्ध कराई जाती हैं। पूर्व में 5 अप्रेल, 2013 को श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी, जोधपुर द्वारा निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर आयोजित हुआ। डॉ. राम गोयल (एम.एस.) तथा डॉ. गोपालचन्द गाँधी (एम.एस.) द्वारा हर्निया के 12, अपेन्डिक्स 1, हाईड्रोसिल 1, फिस्टूला 1, पाईल्स 2 तथा फिशर 1, कुल 18 ऑपरेशन किये गये तथा निःशुल्क दवाइयाँ उपलब्ध कराई गईं। *-पूरणराज अबानी, अध्यक्ष*

मदनगंज-किशनगढ़- श्री आल इंडिया, श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेस युवा

शाखा, किशनगढ़ द्वारा श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज की दीक्षा व प्रथम युवाचार्य श्री मिश्रीमल जी महाराज 'मधुकर' की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में 31 मार्च, 2013 को रक्तदान शिविर का आयोजन यज्ञनारायण चिकित्सालय में किया गया, जिसमें 71 यूनिट रक्तदान किया गया। - *निर्मल बरडिया, अध्यक्ष*

नई दिल्ली- ऋषभदेव जयंती महोत्सव के अवसर पर 5 अप्रेल, 2013 को श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली के जैन दर्शन विभाग द्वारा वाचस्पति सभागार में आयोजित कार्यक्रम में प्राच्यविद्याविद् एवं इंदिरा गाँधी कला केन्द्र के पूर्व निदेशक प्रो. गयाचरण जी त्रिपाठी ने 'तीर्थंकर ऋषभदेव का भारतीय संस्कृति को योगदान' विषय पर अपना मुख्य व्याख्यान दिया। मुख्य अतिथि बी.एल.इंस्टिट्यूट, दिल्ली के निदेशक प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी' थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता दर्शन संकाय के पूर्व प्रमुख प्रो. शुद्धानंद जी पाठक ने की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनेकान्त कुमार जैन ने किया।

पाली- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री रत्न युवक परिषद्, पाली के संयुक्त तत्त्वावधान में अहमदाबाद के सिम्स अस्पताल के सहयोग से निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं चिकित्सा परामर्श शिविर रविवार 24 मार्च, 2013 को आयोजित किया गया, जिसमें 678 रोगी लाभान्वित हुए। अहमदाबाद के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. सत्य गुप्ता एवं डॉ. विनीत सांखला के नेतृत्व में 14 विशेषज्ञ चिकित्सकों ने सेवाएँ दीं। संघ के अध्यक्ष रूप कुमार जी चौपड़ा एवं युवक परिषद् के अध्यक्ष विपिन जी बरलोटा के नेतृत्व में समाज के अनेक श्रावकों एवं युवकों ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। -*रूपकुमार चौपड़ा, अध्यक्ष*

लासलगाँव- श्री महावीर जैन विद्यालय में 15 जून, 2013 से कक्षा 5वीं से 10 वीं तथा कक्षा 11 वीं से 12 वीं साइन्स के छात्रों को और आई.टी.आई के लिए छात्रों को प्रवेश देना प्रारम्भ किया जाएगा। सम्पर्क सूत्रः-02550-2663581

मुजफ्फरपुर- प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली में 26 फरवरी, 2013 को आचार्य कुन्दकुन्द व्याख्यानमाला सम्पन्न हुई। सभा की अध्यक्षता बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के दर्शन विभाग के आचार्य (डॉ.) हरिनारायण पाण्डेय ने की। कार्यक्रम के वक्ता थे- (1) आचार्य (डॉ.) विजय कुमार जैन, अध्यक्ष-बौद्धदर्शन विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लखनऊ (2) डॉ. अशोक कुमार जैन, रीडर एवं अध्यक्ष-जैन-बौद्ध दर्शन विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

डॉ. विजयकुमार जैन ने "आचार्य कुन्दकुन्द और दो सत्यों की अवधारणा" विषय पर तथा डॉ. अशोक कुमार जैन ने "आचार्य कुन्दकुन्द का अनेकान्त" विषय पर वक्तव्य दिया। -*ऋषभचन्द जैन, निदेशक*

बधाई

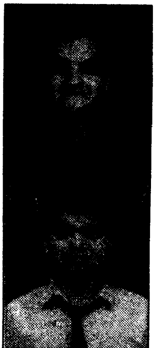

जयपुर- चि. अंकित सुपुत्र श्री अशोक जी एवं सुपौत्र श्री अमरसिंह जी बापना ने VIT VELLORE से B.TEC (ECE) सिल्वर मेडल से उत्तीर्ण कर संकल्प सेमी कन्डक्टर हुबली (कर्नाटक) में DESIGN ENGINEER के पद पर ज्वाइन किया है।

सवाईमाधोपुर- श्री गौरव जैन सुपुत्र श्री पारसचन्द जी बोहरा, मंत्री-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सवाईमाधोपुर ने सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है।

गंगापुरसिटी (सवाईमाधोपुर)- श्री आशीष जैन सुपुत्र श्री अशोक कुमार जी एवं श्रीमती मंजूलता जी जैन का राजस्थान लोक सेवा आयोग के माध्यम से सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग में सहायक सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी पद पर चयन हुआ है। वर्तमान में आप दैनिक राजस्थान पत्रिका में उपसंपादक एवं 'मी.नेक्स्ट परिशिष्ट' के प्रभारी हैं।

दिल्ली- श्री दिव्यांश जैन सुपुत्र श्री कमलनयन जी जैन, कोलकाता ने आई.आई.एम, बैंगलोर द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में श्री राम कॉलेज ऑफ कामर्स, नई दिल्ली का प्रतिनिधित्व करते हुए सम्पूर्ण भारत में तीसरा स्थान प्राप्त किया है।

श्रद्धाञ्जलि

दिल्ली- त्रिलोकतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री विद्या भूषण सन्मतिसागर जी महाराज का 14 मार्च, 2013 को समाधिपूर्वक देवलोकगमन हो गया।

जोधपुर- तपाराधिका सुश्राविका श्रीमती धनकंवर जी धर्मपत्नी स्व. वैद्यश्री विजयमल जी बुबकिया का 23 अप्रेल 2013 को देवलोकगमन हो गया। आप सन्त-सतियों की सेवा में रत रहती थीं। आपने अपने जीवन में कई तपस्याएँ कीं। 2 मासक्षपण, 8 अट्ठाई, 1 दस, 1 पन्द्रह, 1 नौ, 1 सात और तेले तो कई बार किये। इनके अतिरिक्त 2 वर्षीतप, ग्यारह बार ओली तप तथा नींवी, एकाशन आदि तप तो चलते ही रहते थे। आपका जीवन परिवार और समाज के लिए आदर्श था।

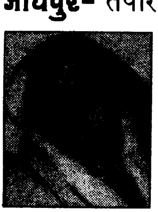

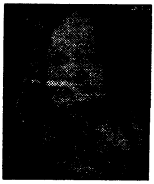

जोधपुर- धर्मसाधिका सरल हृदया श्राविकारत्न श्रीमती रानी देवी जी डागा धर्मसहायिका स्व. श्री वल्लभचन्द जी डागा का 77 वर्ष की वय में 10

मार्च, 2013 को समाधिमरण हो गया। आप नियमित सामायिक करती थी एवं व्याख्यान-श्रवण करती थीं। पर्वतिथियों पर दया, पौषध, संवर आदि के द्वारा अपने जीवन को संयमित रखती थीं। वे वात्सल्य की प्रतिमूर्ति थीं।

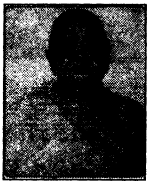

जोधपुर- संत-सेवी सुश्राविका श्रीमती विजया जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री श्रीचन्द जी मेहता का 23 अप्रेल, 2013 को स्वर्गगमन हो गया। आप सदैव संत-सतियों की सेवा में तत्पर रहती थीं। आपके भवन में कई संत-सतियों के विराजने पर खूब सेवा-शुश्रूषा की। आपका जीवन सरलता, मृदुता, कर्मठता आदि गुणों से युक्त था।

बालोतरा- धर्मरुचिशीला सुश्राविका श्रीमती (डॉ.) स्नेहलता जी जैन धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र जी जैन (नेत्र-रोग विशेषज्ञ) का 17 अप्रेल, 2013 को 51 वर्ष की आयु में परलोक गमन हो गया। आचार्यप्रवर आदि संत-सती के बालोतरा विराजने पर आपने सेवा का अपूर्व लाभ लिया। आप धार्मिक कार्यों में अग्रणी रहती थीं।

अजमेर- सुश्रावक श्री रूपचन्द जी रांका का 30 मार्च, 2013 को स्वर्गवास हो गया। आप हँसमुख, धर्म में अनुरक्त एवं साधु-साध्वी की सेवा में अग्रणी रहते थे।

जयपुर- संघ-समर्पित सुश्रावक श्री पारसमल जी कुचेरिया का 26 मार्च, 2013 को देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, तप-त्याग, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील स्वाध्यायी थे। आपने वर्षों तक पशुक्रूरता समिति के माध्यम से प्राणियों की रक्षा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आप संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी सदैव तत्पर रहते थे। कुचेरिया परिवार संघ-सेवा , समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में सम्पूर्ण कुचेरिया परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है।

बालोतरा- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पिंकी जी बैदमुथा का 17 मार्च, 2013 को देहावसान हो गया। संत-मुनिराजों के बालोतरा पधारने पर आपने एवं आपके परिवार वालों ने धर्म-ध्यान का लाभ लिया। आपका जीवन धार्मिक संस्कारों की सुगन्ध से सुवासित था।

बालोतरा- सुश्राविका श्रीमती कमला जी धर्मपत्नी सुश्रावक श्री मीठालाल जी छाजेड़

'मधुर' का 21 अप्रेल, 2013 को देवलोकगमन हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। सामाजिक एवं धार्मिक सेवा हेतु सदैव तत्पर रहती थीं। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना करती थीं। रत्नसंघ के प्रति आपकी एवं

छाजेड़ परिवार की समर्पित सेवाएं रहीं है। स्वधर्मि-वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी छाजेड़ परिवार सदैव अग्रणी रहा है।

जोधपुर- धर्म के प्रति निष्ठावान् सुश्रावक श्री संजय जी भण्डारी का 29 मार्च, 2013 को चिरवियोग हो गया। सरलता, सादगी, सेवाभावी, उदारता जैसे विशिष्ट गुणों के कारण उनका घर-परिवार में ही नहीं, संघ-समाज में वर्चस्व भी था। व्यापार-व्यवसाय में प्रामाणिकता के कारण उनकी गणना शीर्ष उद्योगपतियों में की जाती थी। सेवा-धर्म के कार्यों में वे सदा अग्रणी रहते थे। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में आपका एवं भण्डारी परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है।

दिल्ली- श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ तीर्थ हरिद्वार की परिकल्पना को मूर्तरूप देने वाले

नामधन्य विद्वत् जगत् में प्रसिद्ध सुश्रावक श्री नरेन्द्र प्रकाश जी जैन का 5 मार्च, 2013 को देवलोकगमन हो गया। आप मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन संस्था के मुखिया थे और जैन साहित्य के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार में उनकी महती भूमिका थी। जैन समाज के दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी, तेरापंथी सभी संप्रदायों के अग्रगण्य आचार्यों, संतों, मुनियों, साधु-साध्वियों का आशीर्वाद आपको प्राप्त था तथा आप उनके साहित्यों का प्रकाशन भी करते थे।

जलगाँव- वरिष्ठ सुश्रावक, दृढ़धर्मी श्री माणकचन्द जी समदडिया ने शतायु होने पर 7 मार्च, 2013 को महासती जी विमलयशाजी म.सा. के मुखारविन्द से संलेखना-संथारा व्रत ग्रहण किया। उनके द्वारा गृहीत संथारा धर्म-आराधना के साथ 55 घंटे तक चला।

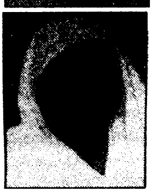

घोटी- श्रीमती दगुबाई जोगीलाल जी पींचा का 87 वर्ष की वय में 1 मार्च, 2013 को सागारी संथारे के साथ परलोकगमन हो गया। सुश्राविका की इच्छा के अनुरूप शोक नहीं रखा गया और उनकी आँखें दान कर दी गईं। सेवा, दान, साधर्मि-भक्ति, संघ-सेवा और सामाजिक कार्यों में सुश्राविका सदैव अग्रसर रहती थीं।

अयनावरम् (चेन्नई)- सुश्राविका श्रीमती रतनकंवर बाफणा धर्मपत्नी श्री बस्तीमल जी बाफणा (किशनगढ़ वाले) का स्वर्गवास 15 मार्च, 2013 को हो गया। आपके मरणोपरान्त नेत्र दान किए गए।

भवानीमण्डी- प्रसन्नवदन सुश्रावक श्री देवेन्द्रकुमार जी जैन का 60 वर्ष की वय में 22 मार्च, 2013 को स्वर्गवास हो गया। आपकी इच्छानुसार मरणोपरान्त नेत्र दान किए गए। वे स्थानीय अन्न क्षेत्र में नियमित सेवा प्रदान करते थे।

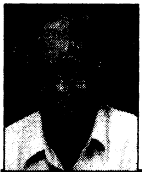

रामपुरा (मध्यप्रदेश)- साहित्यप्रेमी सुश्रावक श्री समरथमल जी डागरिया का 80 वर्ष की उम्र में 2 नवम्बर, 2012 को देहावसान हो गया। आप अ.भा. जैन श्रमण संघ के कार्यकारिणी सदस्य थे।

चेन्नई- गुरुभक्त सुश्रावक श्री बादलचन्द जी सिंघवी (कुचेरा निवासी) का 74 वर्ष की वय में 18 मार्च, 2013 को स्वर्गवास हो गया। आप सन्त-सती सेवा, जन-सेवा, संघ-समाज के प्रति समर्पित निष्ठावान श्रावकरत्न थे। आप परिवार, संघ एवं समाज में प्रतिष्ठित श्रावक थे।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती विजयलक्ष्मी जी चौरड़िया धर्मपत्नी सुश्रावक श्री पारसमल जी चौरड़िया (मूल निवासी किशनगढ़-अजमेर) का 18 अप्रेल, 2013 को स्वर्गवास हो गया। आपने जयपुर में एस.एस. जैन सुबोध बालिका विद्यालय में प्रधानाचार्य एवं सुबोध महिला महाविद्यालय में निदेशक के पद को सुशोभित किया। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। आप धर्मनिष्ठा के साथ बहुमुखी प्रतिभा की धनी थीं। आपके पुत्र डॉ. अशोकवर्द्धन जी एवं सुपुत्री डॉ. (श्रीमती) अंजलि जी कटारिया भी पूर्णरूपेण समाज सेवा में संलग्न हैं।

बैंगलोर- सरलहृदया, सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती सरोज जी चोरड़िया का 01 मई,

2013 को देहावसान हो गया। आप सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं में सदैव तत्पर रहती थीं। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना करती थीं। त्याग-तप से आपका जीवन शोभायमान था। रत्नसंघ के प्रति उनकी एवं चोरड़िया परिवार सदैव अग्रणी रहा है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व संरक्षक श्री कनकमल जी चोरड़िया की आप पुत्रवधू थीं एवं कर्नाटक संभाग की क्षेत्रीय प्रधान श्री राजेन्द्र जी चोरड़िया की आप मातुश्री थीं।

जयपुर- स्नेहमयी, सेवामूर्ति, परोपकारी सुश्राविका श्रीमती पुष्पा कोचर मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री विजयमल जी का 11 फरवरी, 2013 को देहावसान हो गया। आपका अधिकांश समय सामायिक आराधना में व्यतीत होता था।

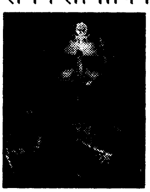

जोधपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सोहन मेहता धर्मपत्नी श्री गौतम जी मेहता का 67 वर्ष की आयु में 23 अप्रेल, 2013 को स्वर्गगमन हो गया। आप सरल स्वभावी, मधुरभाषी, मिलनसार, सेवाभावी, उदारहृदया थीं। आप अपने पीछे संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

अध्यात्म

अमनस्क गुरु

श्री सोहनलाल सिसोदिया

अवलम्बन बिना अमनस्क दशा को साधे।
जो अक्रिय हो निज आत्मरूप आराधे।
मैं उसी गुरु का अभिलाषी अन्तर से।
पर पता नहीं कब कृपा दृष्टि वह बरसे।।1।।
यों बाल्यकाल में तीर्थों की रज छानी।
पुरुषार्थ परक ही को मिलते गुरु ज्ञानी।।
कैसे पाऊँ गुरु 'सप्त समुद्र-विहारी'।
सम्भव है वह हो 'सुप्त-समुद्र-विहारी।।2।।
संयोग मिले यदि अकस्मात् दर्शन का।
भव-रोग कटे, मिट जाय शल्य सब मन का।।
वैभाविक घनघोर निशा ढल जाए।
औ चिदाकाश में अरुण उषा खिल जाए।।3।।
खिल जाय कमल दल, मन का मानस महके।
द्विज हंसोपम हो प्राण गगन में चहके।।
यदि इसी भाँति गुरु कृपा सहज ही प्रकटे।
'अमनस्क' कूर्मवत् योगी निज में सिमटे।।4।।

-बैंगलोर

सामायिक

सामायिक अर्थात् समभावों की साधना। जीवन में हर परिस्थिति का सामना समभावों से करना- यही सामायिक का उद्देश्य है। सामायिक का साधक समता के सागर में इतना गहरा उतर जाता है कि विषमता की संभावना ही समाप्त हो जाती है। जो साधक इतनी गहराई से सामायिक की साधना करता है वह दो घड़ी के लिए अपने जीवन की सभी समस्याओं से अलग हो जाता है और वही सामायिक का सच्चा उपासक होता है, उसी की आत्मा विशुद्धता की आरे अग्रसर होती है।

- श्रीमती प्रीति बाफना, कोंडीतोप (चेन्नई)

'बनें आगम अध्येता' प्रतियोगिता का प्रारम्भ

श्रावक-श्राविकाओं को आगम में भगवान ने अनेक विशेषणों से सम्बोधित किया है। जहाँ श्रावक को 'कोविद श्रावक' के रूप में कहा, वहीं श्राविकाओं को 'बहुश्रुता', 'शीलवंता' आदि उत्कृष्ट संबोधन दिये। उपासकदशांग सूत्र में श्राविका को धर्म की सहयोगी, धर्म में अनुरक्ता, सुख-दुःख में सहयोगी कहा गया है तो श्रावक को भी साधुओं का हित चाहने वाला, सुख चाहने वाला कहा है। आगमों में वर्णित श्रावक-श्राविकाओं की झलक वर्तमान में परिलक्षित हो, इस हेतु अत्यन्त आवश्यक है- आगम का स्वाध्याय। श्रावक-श्राविकाएँ सुज्ञ और तत्त्वज्ञ बनें, इस हेतु **आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. एवं सन्त-सती मण्डल** का उपदेशों के माध्यम से पुरजोर प्रयास रहता है। गुरुद्वय के दीक्षा अर्द्धशताब्दी वर्ष के शुभ प्रसंग पर भविष्य में आगम अध्येता श्रावक-श्राविकाएँ तैयार करने हेतु **अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल** द्वारा **''बनें आगम अध्येता''** अनुष्ठान प्रारम्भ किया जा रहा है, जिसमें श्रावक-श्राविका वर्ग भाग ले सकता है। स्वाध्याय हेतु साधु-साध्वी भी भाग ले सकते हैं। सर्वप्रथम आचार प्रधान आगम 'दशवैकालिक सूत्र' के स्वाध्याय को लिया गया है। इसके लिए निम्नानुसार विधि अपनाएँ-

1. सर्वप्रथम 'बनें आगम अध्येता' प्रतियोगिता का फार्म मंगवाकर 15 जुलाई 2013 तक भरकर भिजवावें। इस अंक में प्रकाशित फार्म का उपयोग भी कर सकते हैं।
2. सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित दशवैकालिक सूत्र को मंगवाकर उसका स्वाध्याय प्रारम्भ करें।
3. फार्म प्राप्त होने पर आपके पोस्टल पते या मेल पते पर 100-100 अंक के दो मूल्यांकन प्रश्नपत्र 25 जुलाई 2013 तक पहुंच जायेंगे, जिनमें प्रथम मूल्यांकन 'प्रश्नपत्र' अध्ययन 1 से 5 तथा द्वितीय मूल्यांकन 'प्रश्नपत्र' अध्ययन 6 से 10 पर आधारित होगा। आपको प्रथम मूल्यांकन 'प्रश्नपत्र' के प्रश्नों के उत्तर 31 अगस्त 2013 तक तथा द्वितीय मूल्यांकन प्रश्नपत्र के प्रश्नों के उत्तर 30 सितम्बर 2013 तक घर से ही लिखकर हमको प्रेषित करने हैं।
4. दशवैकालिक सूत्र के सम्पूर्ण 1 से 10 अध्ययनों की समापक परीक्षा 10 नवम्बर 2013 को आपके स्थानीय स्थानकों में परीक्षकों की उपस्थिति में होगी, जो कि 80 अंकों की होगी व इस परीक्षा में आप दशवैकालिक सूत्र की पुस्तक भी साथ रख सकते हैं।
5. मूल्यांकन प्रश्नपत्रों के उत्तर फुल स्केप साइज कागजों पर नीले रंग की स्याही के बालपेन से लिखकर भेजने हैं।
6. मूल्यांकन उत्तर पुस्तिकाओं को जांचकर, उनमें प्राप्त अंकों को 10% करके उन अंकों को समापक परीक्षा में प्राप्त अंकों में जोड़कर परीक्षार्थी के कुल प्राप्तांक होंगे और कुल प्राप्तांक अंकों के आधार पर प्रथम तीन श्रावक-श्राविकाओं को दशवैकालिक आगम अध्येता की उपाधि से अलंकृत करने के साथ ही पुरस्कृत भी किया जाएगा। परीक्षा में 70 या अधिक अंक

प्राप्त करने वाले सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जायेगा।

7. इस 'बनें आगम अध्येता' प्रतियोगिता से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जानकारी अपेक्षित हो तो आप सुज्ञ श्राविका डॉ. मंजुला बम्ब-09314292229, श्रीमती बीना मेहता, महासचिव-09772793625, श्रीमती तृप्ति सिंघवी-09828341834, श्रीमती चन्द्रा हीरावत-09610357011, सौ. संगीता बोहरा, चैन्नई-09444322714, सौ. विजया मल्हारा, जलगाँव-09404055505 से सम्पर्क कर सकते हैं।

आप सभी श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन है कि आगम ज्ञान अभिवर्धन के इस कार्यक्रम में फार्म भरकर अपनी स्वीकृति प्रदान करावें, स्वीकृति प्राप्त करने वाले श्रावक-श्राविकाएँ ही परीक्षा देने के अधिकारी रहेंगे।

पत्राचार का पता: श्रीमती पूर्णिमा लोढा, अध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, ए-7, महावीर नगर, जयपुर(राजस्थान) फोन नं. 9829019396

जय गुरु हस्ती **श्री महावीराय नमः** **जय गुरु हीरा मान**

'बनें आगम अध्येता' परीक्षा स्वीकृति-पत्र

1. **परीक्षार्थी का नामः** ....
2. **पिता /पति का नामः** ....
3. **घर का पताः** ....
....
....
4. **फोन नं. व मोबाइल नं.:** ....
5. **ई-मेल पताः** ....
6. **क्या आपके पास सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित दशवैकालिक सूत्र है-**
....
7. **आपके पास कौन-कौन से आगम हैं नाम लिखकर भेजें-**
....
....
8. **क्या आपकी थोकडे में रुचि है, यदि है तो आप कौन-कौन से थोकड़े जानते हैं, नाम लिखिए-** ....
....
9. **अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के विकास हेतु यदि कोई सुझाव हो तो लिखिए-** ....
....

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर मय दिनांक

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मंडल के सत्साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

756 सुश्री रिंकी जी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, टोंक (राजस्थान)

1000/- की सदस्यता शुल्क द्वारा गत माह जिनवाणी पत्रिका के 7 आजीवन सदस्य(20 वर्ष के लिए) बने।

500/- की सदस्यता शुल्क द्वारा 31 मार्च तक जिनवाणी पत्रिका के 69 आजीवन सदस्य बने।

250/- की अर्द्धमूल्य योजना के अन्तर्गत श्री प्रसन्नचन्दजी, पुनवानचन्दजी, ओस्तवाल परिवार (भोपालगढ़-जोधपुर-मुम्बई-चेन्नई) के सौजन्य से 31 मार्च तक 5 आजीवन सदस्य बने।

जिनवाणी हेतु साभार प्राप्त

2100/- श्री पारसमलजी चोरडिया, जयपुर, श्रीमती विजयलक्ष्मीजी धर्मपत्नी श्री पारसमलजी चोरड़िया का दिनांक 18 अप्रेल, 2013 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1111/- श्री राजनजी जैन, जयपुर, पूज्य श्री श्रीपालजी एवं श्रीमती सुलक्षणाजी जैन का आकस्मिक स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री महेन्द्रजी, प्यारेलालजी मुणोत, नागपुर, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की दीक्षा अर्द्ध शताब्दी के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री शान्तिलालजी, मेघराजजी जैन, चौरू-टोंक, पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-7 के चौरू धरा पर विराजकर पावन करने एवं पूर्व में तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. एवं श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के विराजने की खुशी में।

1100/- श्री गौतमजी, डॉ. सुनील जी मेहता, जोधपुर, श्रीमती सोहनजी मेहता धर्मपत्नी श्री गौतम जी मेहता का 23 अप्रेल,2013 (महावीर जयन्ती) को स्वर्गगमन हो जाने पर स्मृतिस्वरूप भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

2100/- श्री गजराज जी, जितेन्द्र जी चौधरी, पीपाड़ शहर, हॉल मुम्बई, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री लालचंद जी चौधरी एवं माताजी स्व. श्रीमती कमलादेवी जी चौधरी की पावन स्मृति में।

1100/- श्री खेमराज जी, पारसमल जी, लालचन्द जी भंवरलाल जी गोगड़, आगोलाई वाले, श्री मोतीलाल जी गोगड़ की 28 अप्रेल, 2013 को प्रथम पुण्यतिथि पर उनकी पावन स्मृति में।

मंडल के सत्साहित्य प्रकाशन हेतु साभार प्राप्त

50000/- श्री शोभागसिंहजी जैन (चौधरी), तिलकनगर-जयपुर, मण्डल से प्रकाशित पुस्तक आध्यात्मिक आलोक के पुनः मुद्रण हेतु सप्रेम अर्थसहयोग।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

(पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में)

50000/- श्री लाभचन्द जी, राजकुमार जी गोलेछा, पाली।
48000/- श्री चंचलचन्द जी खिंवसरा, जयपुर।
12000/- श्रीमती प्रमिला अजीत जी चोरडिया, अहमदाबाद।
12000/- श्री मिलापचन्द जी इन्द्रा जी मेहता, जोधपुर।
12000/- श्री रविकुमार जी मृदुला जी मेहता, जोधपुर।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़,* 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

वैशाख शुक्ला 3 सोमवार	**13.05.2013**	**अक्षय तृतीया (वर्षीतप पारणा) एवं आचार्य पूज्य श्री कजोड़ीमल जी म.सा. की134 वीं पुण्य तिथि, आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का 84 वां आचार्यपद दिवस**
वैशाख शुक्ला 8 शनिवार	**18.05.2013**	**आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की 22 वीं पुण्यतिथि**
वैशाख शुक्ला 9 रविवार	**19.05.2013**	**उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 23 वां उपाध्याय पद दिवस**
वैशाख शुक्ला 10 सोमवार	**20.05.2013**	**भगवान महावीर केवल कल्याणक एवं संघ स्थापना दिवस (चतुर्विध संघ)**
वैशाख शुक्ला 13 गुरुवार	**23.05.2013**	**उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 51वाँ दीक्षा-दिवस**
वैशाख शुक्ला 14 शुक्रवार	**24.05.2013**	**चतुर्दशी, पक्खी**
ज्येष्ठ कृष्णा 5 बुधवार	**29.05.2013**	**आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 23 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस**
ज्येष्ठ कृष्णा 6 गुरुवार	**30.05.2013**	**परम्परा के मूलपुरुष पूज्य श्री कुशलचन्द जी म.सा. की 230 वीं पुण्य तिथि**
ज्येष्ठ कृष्णा 8 शनिवार	**01.06.2013**	**अष्टमी**
ज्येष्ठ कृष्णा 14 शुक्रवार	**07.06.2013**	**चतुर्दशी**
ज्येष्ठ कृष्णा 30 शनिवार	**08.06.2013**	**पक्खी**
ज्येष्ठ शुक्ला 8 सोमवार	**17.06.2013**	**अष्टमी**

अभिमत

'स्वप्निका' श्रद्धा-अभिव्यक्ति का सरल एवं अभिनव प्रयोग

हमारा सौभाग्य है कि आगमज्ञ परम पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडित रत्न पूज्य उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के संयम साधना को 50 वर्ष हमारे जीवन काल में पूर्ण हो रहे हैं। ऐसे सुनहरे अवसर पर हर कोई चाहता है कि इन गुरु भगवंतों को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करें और सही रूप से हमारी भावनाएँ तप और त्याग के माध्यम से ही समर्पित की जा सकती है। 'स्वप्निका' संयम-साधना द्वारा श्रद्धा अभिव्यक्ति का सरल एवं अभिनव प्रयोग है। गुरुदेवों के संयम साधना के 50 वर्ष सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में 14 स्वप्नों के माध्यम से सरल एवं दूरगामी परिणामों वाले नियमों को कम से कम 51 दिनों तक पालन करने की अपेक्षा की गई है। यह नियम हमारे विभिन्न गुणों के विकास के सोपान हैं। वंदना से विनय, आयरियाणं उवज्झायाणं की माला से गुरुभक्ति और साधना, धोवन पानी पीने एवं जमींकद के त्याग से जीवदया, सामूहिक प्रार्थना से पारस्परिक सौहार्द एवं संगठन को बल, सामायिक से समत्व व प्रतिक्रमण से पापों की आलोचना, संत-सतियों के सान्निध्य से संस्कारों का बीजारोपण, शास्त्रों व धार्मिक गाथाओं को कंठस्थ करने से ज्ञान की अभिवृद्धि, चौविहार व विभिन्न तपों द्वारा चरित्र बल बढ़ाना, व्यसनों पर अंकुश और बच्चों को संस्कारों द्वारा धर्म की धरोहर को अक्षुण्ण बनाना, टी.वी. न देखकर स्वयं को देखना, इस अभियान के बहुआयामी अंग हैं। इन महापुरुषों के संयम के 51 वें वर्ष में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में मेरे श्रद्धा सुमन तो हैं ही, पर इन नियमों के 51 दिन तक पालन से सहज में ही ये नियम हमारे जीवन के अभिन्न अंग बन जायेंगे। ज्ञान दर्शन और चारित्र की आराधना में सहज ही सम्बल मिलेगा। धर्म से, तप से, साधना से, ज्ञान से, विवेक से, समर्पण से, जीवन जीने की कला की सरल कुंजी है- 'स्वप्निका'। गुणाभिनन्दन के साथ-साथ इन महान् आत्माओं के पद चिह्नों पर चलना स्वप्नों के साकार होने का आधार है। 'स्वप्निका' घर-घर पहुँचे, बच्चों से लेकर हर वयस्क के लिए दिग्दर्शक बने और हमारे जीवन की ज्ञान, दर्शन और चारित्र की मात्रा में उत्तरोत्तर प्रगति में सहायक बने, ऐसी मंगल मनीषा है। सम्यग् ज्ञान प्रचारक मण्डल इस अभिनव अभियान में सहयोगी बन पाया, यह हमारा परम सौभाग्य है।

-कैलाशमल दुगड़, अध्यक्ष, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर, चेन्नई निवासी

स्वप्निका : एक अनमोल खजाना

मैंने 'स्वप्निका' की आराधना करने का अल्प पराक्रम प्रारम्भ किया। एक माह के

उपक्रम से अनेक अनुभूतियाँ होने लगीं। **गज**, **वृषभ** और **सिंह** कहने लगे- अपने आप में मस्त रहो, प्रमाद छोड़ो, निर्भय बन जाओ। **लक्ष्मी, सूर्य, चन्द्र** कहने लगे- ज्ञान लक्ष्मी से प्रकाश होगा, तेज बढ़ेगा, मगर चित्त शांति एवं शीतलता प्राप्त करेगा। ऐसा साधक अध्यात्म जगत् में **झंड़े** गाड़ देगा। हर कोई उसे **माला** पहनायेगा और वह साधक अमृत **कलश** को प्राप्त करेगा। जिसका उसे साक्षात्कार हो गया वे ही अमृतत्व के प्रतीक हैं। **पद्म सरोवर** क्षीर समुद्र हैं। **निर्धूम अग्नि** साधक की तपस्या की द्योतक है। जो **दिव्य रत्नों** से जड़ित **विमान**, माने जो वीतराग दशा को प्राप्त होने तथा श्रेष्ठतम गति को प्राप्त करने वाले साधक आत्माओं के अतिशय का द्योतक है। इस पुस्तक की साधना और आराधना से ''आहार और अभ्यास'' की पूर्ण रूपेण शुद्धता प्राप्त होती जायेगी। माला से अध्यात्म जागृति, वंदना से शारीरिक श्रम, धोवन पानी सेवन से वाणी शुद्धि, जूठन नहीं छोड़ने से अन्न को मान-सम्मान, झूठ नहीं बोलने से वचन सिद्धि की साधना, थोकड़े संग्रह करना ज्ञान साधना, सामूहिक प्रार्थना- प्रभु कृपा प्राप्ति तथा आपसी प्रेम, सौहार्द बढ़ाना तप साधना, आहार शुद्धि, संत-समागम दायित्व एवं उत्तरदायित्व की पूर्ति, ज्ञान भंडार की सेवा इन सबमें लीन तल्लीन होने के पश्चात् टी.वी. देखने का मन ही नहीं होगा। यह पुस्तक अपने आप में एक अनमोल खजाना है। गुरुदेव की दीक्षा अर्द्धशताब्दी पर उनका दिव्याशीष है। जिसने पाया और गुरु प्रसाद को जिसने शिरोधार्य किया वह अपने आपमें परम सौभाग्यशाली बन जायेगा।

-चेतनप्रकाश डुँगरवाल, (पूर्व अध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल), बैंगलोर

पच्चक्खाण की प्रेरक 'स्वप्निका' पुस्तक

प्रभु महावीर की आदेय अनुपम वाणी उत्तराध्ययन सूत्र (29 वाँ अध्ययन) में भगवन्त ने फरमाया है कि- 'पच्चक्खाणेणं आववदाराइं निरुम्भइ' प्रत्याख्यान से कर्मबन्ध हेतु हिंसादि द्वारों का निरोध होता है। आस्रव द्वारों के निरोध हेतु अनुपम निमित्त है 'स्वप्निका पुस्तिका।' इस पुस्तिका के उद्गारों से सहज ही इसकी पृष्ठ भूमि में रही भक्ति, अनुपम श्रद्धा, भाषा-विवेक, अन्तरंग को हरने वाली, प्रेरित करने वाली मंगल मनीषा दृष्टिगत होती है।

गुरुद्वय हीराचन्द्र-मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी पर जनमानस में पच्चक्खाण की ओर प्रेरणा देने वाला माहौल सृजन करने में इस पुस्तिका का अद्भुत योगदान है। अस्तु कृति के कर्त्ता के शुभ भावों अध्यवसायों का पुनश्च अनुमोदन।

-जितेन्द्र डागा, अध्यक्ष-अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

गजेन्द्र निधि की इकाई

(तत्त्वावधान-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

प्रधान कार्यालय : घोड़ों का चौक, जोधपुर-342 001 (राज.)

फोन- 0291-2630490, फैक्स- 0291-2636763, Website : jainratnaboard.com, emil : info@jainratnaboard.com

आगामी परीक्षा
(Examination Date)
30-06-2013

आवेदन-पत्र
(Application Form)

आवेदन की अन्तिम दिनांक
(Last Date of Application)
31-05-2013

1. नाम श्री/श्रीमती/सुश्री (Name Shri/Smt./Miss) ....

2. पिता/पति का नाम (Name of Father/Husband) ....

3. आयु (Age) .... 4. शिक्षा (Education)..

5. पूरा पता (Postal Address)..

....

   जिला (Dist.)...........................राज्य (State).............................पिन कोड (Pin Code) ☐☐☐☐☐☐

6. फोन नं. (Phone No.) STD Code...........................(R.)............................(O.)...............................

   अनिवार्य रूप से भरें- (M.)................................. email address: ....

7. **पुरस्कार प्राप्ति हेतु बैंक खाता विवरण (Bank A/c Details For Receiving Prize)**

   A/c No. ....Name of A/c..

   Bank Name.......................... Branch....................................... IFSC Code ....

8. पूर्व परीक्षार्थी के लिए (For Old Student)

   गत परीक्षा की दिनांक........../........./......... रोल नम्बर.............................कक्षा......................प्राप्तांक......................

   (Date of Last Exam.) (Roll No.) (Class) (Marks Obtained)

9. कक्षा (जिसमें परीक्षार्थी प्रवेश चाहता है) (Class to appear)..

10. परीक्षा केन्द्र (Examination Centre)... केन्द्र कोड (Centre Code) ☐

11. परीक्षा का माध्यम - (Medium) हिन्दी (Hindi) ☐ अंग्रेजी (English) ☐ गुजराती (Gujrati) ☐

दिनांक (Date) ....../ ...../ 2013

आवेदक के हस्ताक्षर
(Signature of Applicant)

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 67 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 02 से 09 सितम्बर 2013** तक रहेंगे। अत: देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **30 जुलाई 2012** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम......................जिला.............प्रान्त...............
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता...
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं...
   ....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं..
   ....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.......................................
   ....
6. समस्त जैन घरों की संख्या..
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?...................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?......................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स- 2636763, मो.-94604-41570 (संयोजक), 94610-13878 (सचिव), 9460081112 (का. प्रभारी) ,ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail.com**

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।
– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस
खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती
डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments from :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

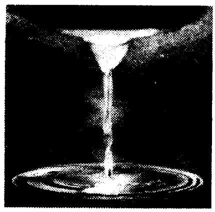
Electric Arc Furnace

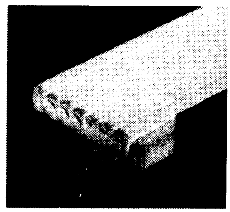
Billets

Rolling Mill

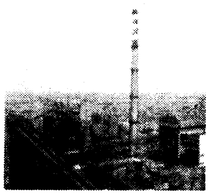
Captive Power Plant

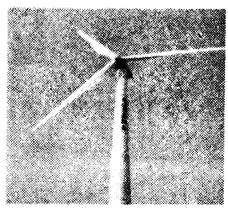
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिश: वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(संरक्षक - अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

आदरणीय रत्नबंधुवर,

रत्न संघ के अष्टम् पट्टधर परम पूज्य आचार्य भगवंत 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ, गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से गत सात वर्षों से युवारत्न छात्र-छात्राओं के शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्धि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना निरन्तर रूप से चल रही हैं। संघ द्वारा योजना का आगे विस्तार कर दिया गया है।

निवेदन है कि अपने परिवार में होने वाले खुशियों के दिवस विशेषों को मूर्त रूप देने के लिए छात्रवृत्ति येजना में रुपये 3000/-, 6000/- व 9000/- का अर्थ सहयोग करके दिवस विशेषों को चिरस्थायी बनायें एवं पुण्य कमायें।

आचार्य प्रवरपूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के शुभ अवसर पर छात्रवृत्ति योजना में 50,000/- रुपये या एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का अतिशीघ्र अर्थ सहयोग करावें।

ज्ञान का एक दीया जलाइये, सहयोग के लिए आगे आइए
दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में लाभ उठाकर आनन्द पाईये

अनन्य गुरुभक्त, जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते हैं, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है-

A/c Name - Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. - 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN)
IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. AAATG1995J
Note : Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

अधिक जानकारी एवं सहयोग करने के लिए सम्पर्क करें-

Name	Place	Contact No.	Name	Place	Contact No.
Ashok Kavad	Chennai	9381041097	Sumatichand Mehta	Pipar	9414462729
Budhmal Bohra	Chennai	9444235065	Manoj Kankaria	Jodhpur	9414563597
Praveen Karnavat	Mumbai	9821055932	Kushalchand Jain	S. Madhopur	9460441570
Mahendra Bafna	Jalgaon	9422773411	Rajkumar Golecha	Pali	9829020742
Ravindra Jain	S.Madhopur	9413401835	Harish Kavad	Chennai	9500114455
Suresh Chordia	Chennai	9444028841	Jitendra Daga	Jaipur	9829011589
Vikram Bagmar	Chennai	9841090292	Sheryanch Mehta	Jodhpur	9799506999

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा

जय गुरु मान

अगर व्यक्ति प्रभु के मार्ग पर चले तो कहीं भी अशान्ति नहीं हो सकती।

- आचार्य श्री हीरा

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं।
ये जीव साधक भी हो सकते है और श्रावक भी ।
- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

With best compliments from:

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 मई, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 05 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 मई, 2013 ★ वैशाख, 2070

।।जय गुरु हीरा।। ।।जय गुरु मान।।

परीक्षा दिनांक 23.05.2013

स्वप्निका

खुली किताब परीक्षा
OPEN BOOK EXAM.

परीक्षा समय दोपहर 12.00 से 12.45 तक

:: शुभकामना ::

स्वप्निका खुली किताब प्रतियोगिता का आध्यात्मिक आयोजन दिनांक **23.05.2013** गुरुवार को दोपहर **12.00** बजे से **12.45** तक रखा गया है। सभी प्रतिभागियों के आत्म-बल संवर्धन हेतु प्रत्येक प्रतिभागी को प्रतियोगिता समिति **शुभकामना** प्रेषित करती है।

:: शुभभावना ::

गुरु द्वय हीराचन्द्र मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित **स्वप्निका** ग्रहण कर अपने जीवन को धन्य बनावें।

:: शुभसूचना ::

1. इस परीक्षा में **50** प्रश्न होगें और प्रत्येक प्रश्न का **एक-एक** अंक होगा।
2. **23 मई, 2013** को आयोजित होने वाली **स्वप्निका** Open Book Exam का **मॉडल पेपर** जिनवाणी अंक **फरवरी-2013** पृष्ठ **120** पर अंकित है। उसी के आधार पर प्रश्न पत्र पाँच भागों में विभक्त किया गया है।
   1. सही उत्तर कोष्ठक में भरिये [10x1=10]
   2. हाँ अथवा नहीं में जवाब दीजिये [10x1=10]
   3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये [10x1=10]
   4. एक शब्द में उत्तर दीजिये [10x1=10]
   5. अंकों में उत्तर लिखिये [10x1=10]

:: शुभ संदेश ::

1. परीक्षा में भाग लेने वाले प्रत्येक प्रतिभागी को पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।
2. प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले को **₹ 11,000**, द्वितीय स्थान प्राप्तकर्ता को **₹ 9,000** एवं तृतीय स्थान प्राप्तकर्ता को **₹ 5,000** की सम्मान राशि प्रदान की जायेगी।

:: सम्पर्क सूत्र ::

परीक्षा सम्बन्धी विशेष जानकारी हेतु प्रतियोगिता समिति के सदस्यों से सम्पर्क करें।

I. नमन मेहता - 09414116766
II. तरूण जैन - 09166190574
III. डॉ. मंजुला बम्ब - 09314292229
IV. उर्मिला बोथरा - 09314501856
V. मीना गोलेछा - 09314466039

विज्ञापन सौजन्य : कल्पतरू ग्रुप

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर - 302003 से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. धर्मचन्द जैन